हुआ, पौत्र पोता से) पु० पोते का बेटा, परपोता ।

सं० प्रफुल्ल } प्रफुल्लित } (प्र=बहुत, फुल्ल्=विकसना, वा फूलना) गु० फूला हुआ, खिलाहुआ, विकसा हुआ, २ प्रसन्न, आनंदित, हर्षित, ३ चमकता हुआ, दीप्तिमान् ।

सं० प्रफुल्लवदन -(प्रफुल्ल=प्रसन्न, वदन=मुँह) गु० जिसके मुँहसे खुशी प्रकटहोती हो, जो प्रसन्न देखाजाय।

सं० प्रवञ्चक -(वञ्च्=छलना) क० पु० प्रतारक, छली, दग़ाबाज़ ।

सं० प्रवञ्चना -भा० पु० प्रतारणा, छलना ।

सं० प्रबन्ध -(प्र=बहुत, अथवा चारों ओरसे, बन्ध=बांधना) भा० पु० बन्दोबस्त, २ काव्य की रचना, जमक, उपाय, इन्तिज़ाम, क़ायदा ।

सं० प्रबन्धक -क० पु० प्रबन्धकर्ता, मुन्तज़िम ।

सं० प्रबल -(प्र=बहुत, बल=ज़ोर) गु० बलवान्, ज़ोर वर, सामर्थी, बली, धृष्ट, तीव्र, साहसी ।

सं० प्रवाल -(प्र=बहुत, वल=कांपना) पु० नवीन पल्लव, नयापत्ता, २ मूंगा, रक्तवर्ण, वीणादण्ड ।

सं० प्रबुद्ध -(प्र=बहुत, बुध्=जानना) गु० जागता हुआ, सुचेत ।

सं० प्रबोध -(प्र=बहुत, बुध्=जानना) पु० ज्ञान, उपदेश, समझ, चेतना, २ सावधानी, नींद से अथवा अज्ञानता से जागना वा चैतन्य होना ।

सं० प्रबोधन (प्र=बहुत, बुध्=जानना) भा० पु० जगाना, चिताना, सावधान करना, सिखाना, जतलाना, बताना ।

सं० प्रभञ्जन -(प्र=बहुत, भञ्ज=तोड़ना) भा० पु० हवा पवन, वायु, विदारण, तोड़ना, टूटना, गु० विदारक, तोड़नेवाला ।

सं० प्रा० प्रभञ्जनजाया -(सं० प्रभञ्जन=पवन, प्रा० जाया=पैदाहुआ) पु० हनुमान् । [पु० हनुमान् ।

सं० प्रभञ्जनसुत -(प्रभञ्जन+सुत)

सं० प्रभव -(प्रभू=पैदाहोना, जिससे) पु० उत्पत्ति, जन्मकारण, जिससे पैदा होते हैं, जैसे माबाप, उत्पत्ति स्थान, २ ज़ोर, पराक्रम, ३ जन्म ।

सं० प्रभा -(प्र=बहुत, भा=चमकना) स्त्री० चमक, झलक, ज्योति, जोत, प्रकाश, दीप्ति ।

सं० प्रभाकर -(प्रभा=प्रकाश, कर =करनेवाला, कृ=करना) क० पु० सूर्य, २ चांद, ३ आग ।

सं० प्रभात -(प्र=बहुत, भा० चमकना) पु० भोर, बिहान, प्रातः-

काल, फजर, सुबह ।

सं० प्रभाव-(प्र=बहुत, भू=होना) पु० तेज, प्रताप, बल, शक्ति ।

सं० प्रभास-(प्र=बहुत, भास्=चमकना) पु० एकतीर्थ की जगह ।

सं० प्रभु-(प्र=पहले वा बहुत, भू=होना) पु० नाथ, स्वामी, धनी, मालिक, पति, पालक, ईश्वर, २ विष्णु, गु० बड़ा, समर्थ, बलवान् ।

सं० प्रभुत्व भा० पु० } (प्रभु)
प्रभुता भा० स्त्री० } बड़प्पन ईश्वरता, स्वामीपन, बड़ाई, महत्त्व, महिमा, ऐश्वर्य, हकूमत ।

सं० प्रभृति-(प्र=बहुत, भृ=भरना) स्त्री० प्रकार, भांति, २ आदि, इत्यादि, और सब ।

सं० प्रमथ-(प्र=बहुत, मथ्=मथना) पु० महादेव के एक गण का नाम, २ घोड़ा ।

सं० प्रमथाधिप-(प्रमथ+अधिप) पु० शिव, महादेव ।

सं० प्रमदा-(प्र=बहुत, मद्=प्रसन्न होना, जिसको देख कर) स्त्री० स्त्री, नारी, सुलक्षण स्त्री, रूपवती नारी, सुन्दर स्त्री, उत्तम स्त्री ।

सं० प्रमा (प्र=बहुत, मा=नापना) स्त्री० यथार्थज्ञान, सच्चाज्ञान, ऐसा ज्ञान जिसमें किसी तरह का भ्रम न हो प्रमाण, उपमा ।

सं० प्रमाण-(प्र=बहुत, मा=नापना) पु० नाप, माप, तौल, अन्दाज़ा, परिमाण, २ साख, साक्षी, गवाही, सिद्धांत, सबूत, निश्चय, सच्चा, ठहराना निर्णय, निष्पत्ति, ३ कारण, ४ हद, सीमा, ५ उदाहरण, दृष्टान्त, ६ ऐसा शास्त्र जिसका पवित्र प्रमाण मिले, गु० सच्चा, सही, ठीक ठीक, यथार्थ, मानने योग्य ।

प्रा० प्रमाणिक-(सं० प्रमाणिक) गु० भरोसावाला, विश्वासपात्र, योग्य, प्रतिष्ठित, पु० सभापति ।

सं० प्रमातामह-(प्र=उत्पन्न हुआ है, मातामह=नाना जिससे) पु० परनाना ।

सं० प्रमाथ (मन्थ्=मथना) पु० नाश, मरण, विलोडन, मथना, विघ्न हानि ।

सं० प्रमाद-(प्र=बहुत, मद्=मस्त होना) पु० नशा, २ मतवालापन-मस्ती, उन्मत्तता, पागलपन, ३ असावधानी, भूल, चूक असावधानता ।

सं० प्रमादी-(प्रमाद) क० पु० उन्मत्त, बावला, बौड़हा, २ नशे में मस्त, ३ असावधान, अचेत, बेहोश, हठी, ज़िद्दी ।

सं० प्रमित-(प्र, मा=नापना) कर्म०

पु० नापा हुआ, मापाहुआ, जांचा हुआ, २ जाना हुआ । [समझ ।

सं० प्रमिति—स्त्री०यथार्थज्ञान, ठीक

सं० प्रमीला-(प्र,मील्=नेत्रमीचना) भा० स्त्री० तन्द्रा, उनींदा, उत्साह शून्य, काहिल ।

सं० प्रमुख—गु० मान्य, प्रधान, मुख्य, श्रेष्ठ, मुखिया, सन्मुख, पु० मुनि, आरम्भ ।

सं० प्रमुदित—(प्र=बहुत,मुद्=प्रसन्न होना) क० पु० प्रसन्न, हर्षित, आनन्दित, प्रफुल्ल, खुश ।

सं० प्रमेह—(प्र, मिह्=सींचना) पु० धात बिगाड़ रोग, वीर्य में का रोग यह रोग इक्कीस प्रकार का है जिरियान ।

सं० प्रमोद—(प्र=बहुत, मुद्=प्रसन्न होना) पु० हर्ष, आनन्द, सुख, खुशी, हुलास ।

सं० प्रयत—(प्र=बहुत, यम्=शांति) गु० पवित्र, नियम युक्त आचारी, पवित्र, शुद्ध, नियत, तैयार ।

सं० प्रयत्न (प्र=बहुत, यत्=जतन करना) पु०बहुत परिश्रम, लगातार मिहनत, बहुत सावधानी ।

सं० प्रयाग—(प्र=बहुत, यज्=यज्ञ करना) पु० हिंदुओं का एक बड़ा तीर्थ जिसको इन दिनों में इलाहाबाद भी कहते हैं जहां गंगा और यमुना इन दोनों नदियों का प्रकट संगम हुआ है और कहते हैं कि तीसरी नदी सरस्वती का संगम धरती के नीचे गुप्त हुआ है उस जगह को त्रिवेणी कहते हैं और यहाँ ब्रह्मा ने शंखासुर राक्षस से वेदोंको लाकर दशअश्वमेधयज्ञ किये, २ यज्ञ ।

सं० प्रयाण—(प्र=पहले वा दूर, वा बहुत या=जाना) पु० धावा, कूच, गवन, गमन, यात्रा, जाना, प्रस्थान ।

सं० प्रयास—(प्र=बहुत, यस्=जतन करना वा परिश्रम करना) पु० परिश्रम, मेहनत, थकावट, यतन ।

सं० प्रयोग—(प्र=बहुत, युज्=मिलना) पु० अनुष्ठान, वशीकरण, वशकरना, २ दृष्टान्त, उदाहरण, ३ कारण,पयोजन, फल, ४ काम, कार्य, व्यापार, ५ नियुक्त करना नियत करना, ठहराना, लगाना, इस्तअमाल करना, निदर्शना, उदारण, सूक्ष्म थोड़ा, अमलदरामद,वर्ताव करना ।

सं० प्रयोजक—क० पु० प्रेरक, प्रेषक, नियोग करनेवाला, लगाने वाला, उपाय करनेवाला ।

सं० प्रयोजन—(प्र=बहुत, युज्=मिलना) पु० कारण, अभिप्राय, मतलब, आशय, मनोरथ ।

सं० प्ररोह—(प्र=रुह=बीजजमना, निकलना) भा० पु० ऊपरजाना, निकलना, चढ़ना, अंकुर ।

सं० प्रलम्ब–(प्र=आगे, लबि=रोकना, ठहराना वा लटकाना) गु० लम्बा, विशाल, नीचे लटकाहुआ बड़ा पु० एक राक्षस का नाम जिसको बलदेवजी ने मारा ।

सं० प्रलय–(प्र=बहुत, वा चारों ओर से ली=गलना, वा मिलना) पु० कल्प का अन्त, जब सारा संसार नष्ट होजाता है, युगान्त ।

सं० प्रलाप–(प्र=बहुत, लप्=बोलना) पु० वृथा बकवाद, निरर्थक बात, अनर्थक वाक्य ।

सं० प्रलापी–(प्रलाप) क० पु० बहुतबकनेवाला, वृथाबकनेवाला ।

सं० प्रलोभन–(प्र, बहुत, वा चारों ओर से, लुभ्=लुभाना) भा० पु० मोहन, लुभाव, लोभ, लालच, फुसलाहट, लुभाना ।

सं० प्रवण–(प्रु=चलना) पु० गमन, पशु, नीचीजगह, उदर, नम्र, आयत, गुण, क्षण, प्लुत, स्निग्ध, चिकना, आसक्त, क्षीण ।

सं० प्रवर–(प्र=बहुत, वर=अच्छा, वृ=पसंद करना) पु० सन्तान, २ गोत्र, गोत, ३ एक मुनि का नाम जिसने हर एक कुल का गोत्र ठहराया, ४ उनचास गोत्र में का एक गोत्र, गु० श्रेष्ठ, उत्तम ।

सं० प्रवर्त्तक–(प्र, वृत्=होना, पर प्र, उपसर्ग के साथ आने से इसका अर्थ, शुरूअ करना, आगे बढ़ना, लगना, इत्यादि होते हैं) क० पु० आरम्भ करनेवाला, उठानेवाला, करनेवाला, उभाड़नेवाला, प्रेरक, लगाहुआ, आदिकर्त्ता, मूलकारक ।

सं० प्रवर्त्तन–(प्र+वृत्=काम में लाना) भा० पु० प्रवृत्ति, आज्ञापन, प्रेरण प्रेषण, पठावना ।

सं० प्रवर्तित–कर्म० पु० आज्ञापित प्रेरित, प्रेषित ।

सं० प्रवर्षण–(प्र=बहुत, वृष्=बरसना) पु० एक पहाड़ का नाम जो किष्किन्धा पुरी के पास था उसपर श्रीरामचन्द्र और लक्ष्मण बरसातकी ऋतु में रहे थे ।

सं० प्रवास–(प्र=दूर, वस्=रहना) पु० विदेश, परदेश में रहना ।

सं० प्रवासन–भा० पु० प्रक्षेप मारण, देहत्याग, निकारना, भगाना परदेश भेजना ।

सं० प्रवासी–क० पु० परदेशी, विदेशी ।

सं० प्रवाह–(प्र=बहुत, वा लगातार वह्=बहना) पु० धारा, बहाव, सोता, स्रोत ।

सं० प्रवाहक–क० पु० गाड़ीवान, संग्रहणी, दस्त ।

सं० प्रविष्ट–(प्र+विश्=घुसना, जाना) क० पु० घुसनेवाला, पैठनेवाला ।

सं० प्रवीण-(प्र, वीणा, वीन, अर्थात् जो वीणा बजाके गावे, पर यह पद रूढ़है इसलिये इसका अक्षरार्थ ठीक नहीं लगता) गु० चतुर, निपुण, बुद्धिमान्, स्याना, होशियार।

सं०प्रवीणता-(प्रवीण) स्त्री० चतुराई, निपुणता, स्यानपन, लियाक़त।

सं० प्रबुद्ध-(प्र=बहुत, बुध्=ज्ञान) कृ० पु० जाग्रत, जगैया।

सं० प्रवृत्ति-(प्र, वृत्=होना) स्त्री० किसी काममें लगना, २ अभ्यास, ३ समाचार, वार्ता, खबर, ४ प्रवाह, ५ इच्छा।

सं० प्रवेश-(प्र, विश्=घुसना) पु० घुसना, पैठना, पहुंचना।

सं० प्रवेशक-कृ० पु० प्रवेशकारी, घुसनेवाला।

सं० प्रवोधन-(प्र+बुध=समझाना) भा०पु०समझाना, उपदेश करना।

सं० प्रवोधक-कृ० पु० समझाने वाला, प्रव्राजित (व्रज्=चलना) कृ० पु० भिक्षुक, फ़क़ीर। [काह।

सं० प्रव्रज्या-स्त्री० यत्याश्रम स्वान

सं० प्रशंसनीय (प्रशंसा) र्म्म० पु० प्रशंसा के योग्य, सराहने योग्य, स्तुति करने योग्य।

सं० प्रशंसा-(प्र=बहुत, शंस=सराहना) स्त्री० सराह, बड़ाई, स्तुति, तारीफ़, श्लाघा।

सं० प्रशंसित, प्रशंस्य } र्म्म० पु० स्तुत्य, तारीफ़केलायक़।

सं० प्रशमन-(प्र=बहुत, शम्=ठंढा करना) पु० ठंढा करना, शांत करना, दूर करना, २ मारना।

सं० प्रशस्त-(प्र=बहुत, शस्=सराहना) कृ० पु० सराहने योग्य, श्रेष्ठ, यथोचित, यथायोग्य, सत्य, योग्य, उत्तम, बहुतअच्छा, सुफल, अमोघ, समन्वित।

सं० प्रशस्ति-(प्र=बहुत, शंस्=सराहना) स्त्री० सराह, बड़ाई, प्रशंसा, तारीफ़, अलक़ाब।

सं० प्रश्न-(प्रच्छ्=पूंछना)पु० पूछना, सवाल, जिज्ञासा, जाननेकी इच्छा।

सं०प्रश्रय-(प्र+श्रि=सेवाकरना)पु० प्रणय, नम्रता, प्रेम, सेवा, आराधन।

सं०प्रशान्त-भा०पु०रफ़ादफ़ाहोगया।

सं० प्रश्रित-कृ० पु० विनीत आश्रित, निर्मद।

सं० प्रष्टव्य-(प्रच्छ्=पूंछना)र्म्म० पु० पूंछने योग्य। [पूछनेवाला।

सं० प्रष्टा-(कृ०पु० जिज्ञासु, प्रच्छक,

सं०प्रसङ्ग-(प्र=पहले, संज्=मिलना,) पु० प्रस्ताव, सङ्गम, मेल, चर्चा, बात, कथा, सम्बन्ध।

सं० प्रसन्न-(प्र=अच्छीतरहसे, सद् बैठना) कृ० पु० हर्षित, आनन्दित,

खुश, २ कृपालु, दयावान्, अनुकूल, ३ निर्मल ।

सं० प्रसन्नता-(प्रसन्न) भा० स्त्री० हर्ष, आनन्द, खुशी, २ कृपा, दया ।

सं० प्रसन्नमुख } प्रसन्नवदन } (प्रसन्न=हर्षित, मुख वा वदन मुंह) गु० जिसके मुंहपर खुशी बरसती हो, प्रसन्न, आनन्दित ।

सं० प्रसर-(प्र, सृ=जाना) पु० प्रभव, वेग, समूह, युद्ध, प्रेम, फैला ।

सं० प्रसव-(प्र, सू=पैदाहोना) स्त्री० पु० जन्मना, उत्पत्ति, जन्म ।

सं० प्रसाद-(प्र, सद्=जाना वा बैठना) भा० पु० देवताका भोग, देवता का चढ़ाया देवताका नैवेद्य, गुरुकी जूठन, २ कृपा, अनुग्रह, प्रसन्नता, ३ निर्मलता, सफ़ाई, फ़ैज़, बरकत तबर्रुक, तुफ़ैल ।

सं० प्रसादित-स्त्री० पु० फ़ैज़याब अनुगृहीत, मेहरबानी किया गया ।

सं० प्रसाधक-क० पु० बनानेवाला ।

सं० प्रसाधन-(प्र+साध्=सिद्ध करना) पु० बनाना, सँवारना ।

सं० प्रसाधिका स्त्री० शृङ्गारकरानेवाली, वस्त्राभूषणादि पहराने वाली, मरशाता ।

सं० प्रसारण-(प्र+सृ=जाना) प्र उपसर्ग से अर्थ बदल गया भा० पु० फैलाना, जारी करना, पसारना ।

सं० प्रसिद्ध-(प्र=पहले, वा बहुत, वा दूर, सिद्ध=जाना) गु० विख्यात, नामी, यशी, २ प्रकट, प्रकाशित, जाहिर, ३ शोभित, भूषित, सँवारा हुआ, सिंगार किया हुआ ।

सं० प्रसिद्धि-(प्र, सिध्=जाना, वा पूरा करना) स्त्री० नाम, यश, नामवरी, विख्याति, कीर्त्ति, २ पूराकरना, ३ गहना, आभूषण, ४ प्रकट होना ।

सं० प्रसू-(प्र, सू=पैदाहोना) स्त्री० मा, माता, जननी, घोड़ी, हरणी, लता ।

सं० प्रसूति-स्त्री० प्रसव, अपत्य पुत्र, उदर, माता ।

सं० प्रसूतिका-(प्र, सू=पैदाहोना) स्त्री० वहस्त्री जिसके बालक जन्मा हो ।

सं० प्रसून-(प्र=बहुत, सू=पैदाहोना) पु० फूल, पुष्प, २ फल, गु० जन्मा हुआ, पैदा हुआ ।

सं० प्रस्तर-(प्र=बहुत, स्तृ=फैलाना) पु० पत्थर, पाषाण, २ रत्न, जवाहिर ।

सं० प्रस्तार-भा० पु० फैलाव, तृणका वन, पत्तोंकीरची शय्या, छन्दोंकाग्रन्थ ।

सं० प्रस्ताव-(प्र=बहुत, स्तु=सराहना, कहना) पु० अवसर, प्रसंग, प्रकरण, बात, कथा, चर्चा ।

सं० प्रस्तावना-भा० स्त्री० भूमि

का, दीबाचा, आरम्भ, तमहीद, तजवीज़करना, स्तुति, प्रार्थना, प्रशंसा, वर्णन ।

सं० प्रस्ताविक-(प्रस्ताव) गु० समयपर, समयअनुसार ।

सं० प्रस्तावित-र्म्म० पु० प्रारंभित, विस्तारित ।

सं० प्रस्तुत-(प्र=बहुत, स्तु=सराहना) गु० सराहाहुआ, प्रशंसित, कहाहुआ, २ किया हुआ, पूरा कियाहुआ, ३ उद्यत, उतारू, तैयार, उपस्थित ।

सं० प्रस्थ-(प्र+स्था=ठहरना) पु० विस्तार, आधसेर ।

सं० प्रस्थान-(प्र=आगे, वा दूर, स्था=ठहरना) पु० गमन, गवन, यात्रा, कूच, युद्ध के लिये कूच करना ।

सं० प्रस्फुटित-(प्र+स्फुट्=फूलना) गु० खिला हुआ, फूलाहुआ ।

सं० प्रस्फुरित-गु० प्रकाशित, दीप्तिमान, चमकनेवाला ।

सं० प्रस्नवण-पु० चुआन, बहाव ।

सं० प्रस्नाव-(स्नु=बहना) पु० मूत्र ।

सं० प्रहर-(प्र=बहुत, हृ=हरण) पु० दिनका आठवां भाग, पहर ।

सं० प्रहसन्-(प्रहस=अन, हस=हसना भा० पु० हास्य, हँसी, परिहास, व्यंग बचन ।

सं० प्रहस्त-(प्र+बहुत, हस्त=हाथ) भा० रावण का बेटा, गु० बड़े अथवा, फैले हुए हाथवाला ।

सं० प्रहार-(प्र, हृ=लेना, पर प्र उपसर्ग के साथ आने से मारना अर्थ होता है) भा० पु० चोट, आघात, मार, मारना ।

सं० प्रहारी-(प्रहार) पु० मारने बाला, नाश करने वाला, घातक, २ दूर करने वाला ।

सं० प्रहृष्ट-(प्र=बहुत, हृष्=प्रसन्न होना) पु० सन्तुष्ट, तुष्ट, पुष्ट, प्रसन्न ।

सं० प्रहेलिका-(प्र=बहुत, हेड् वा हेल्=अनादर करना) स्त्री० पहेली, दृष्टकूट, गूढ़प्रश्न, श्लेष, बुझव्वल ।

सं० प्रह्लाद-(प्र=बहुत, ह्लाद=प्रसन्न होना) पु० हिरण्यकशिपुका बेटा, और परमेश्वर का भक्त, २ हर्ष, आनन्द, खुशी ।

सं० प्रह्व-(ह्वे=बुलाना) गु० श्रेष्ठ, नम्र, भक्त, विख्यात ।

अं० प्राईवेटसेक्रेटरी-स्त्री० स्वकीय लेखक, जातीमीरमुन्शी ।

सं० प्राक्-(प्र=पहले, अञ्च=जाना) क्रि० वि० पहले, पूर्व, आगे आदि ।

सं० प्राकृतन-गु० पुराना, पहला, पूर्वदिशा ।

सं० प्रकार-(प्र=चारों ओर, कृ=फैलाना) पु० घेरा, कोटकी भीत,

फसील, सफील, गढ़, पक्कामहल ।

सं० प्राकृत—(प्र=बहुत, अकृत=बुरा, पाप अथवा ईर्षा जिसके मन में हो) गु० नीच, अधम, नीचा, क्षुद्र, सामान्य, २ (प्रकृति) गु० स्वाभाविक, प्रकृतिसंबंधी, माया का विकार, ३ पु० एक प्रकारकी भाषा जो संस्कृत से बिगड़ कर बनी है और संस्कृत नाटकों में बहुत जगह लिखी जाती है ।

सं० प्राग्ज्योतिषपुर (प्राक्=पहले ज्योतिष=चमक) पु० कामरूप देश, आसाम का एक भाग, और भौमासुरकी पुरानी राजधानी ।

सं०प्राघुण—(प्र+आ,घुण=घूमना) पु० पाहुन, अभ्यागत, महमान ।

सं० प्राङ्गण—(प्र+अङ्गण) पु० आंगन, सहन, मृदंग, पखावज ।

सं०प्राची—(प्राक्) स्त्री० पूर्वदिशा ।

सं० प्राचीन—(प्राक्=पहले) गु० पुराना, अगला, पहले समय का, २ पूर्व दिशा का ।

सं० प्राचीर—(चि=चुनना) पु० चहारदीवारी, शहरपनाह, नगर का घेरा ।

सं० प्राज्ञ-(प्र=बहुत,ज्ञा=जानना) पु० पण्डित, २ (प्रज्ञा) गु० बुद्धिमान, विज्ञ, प्रवीण, चतुर ।

सं० प्राज्ञमानी } क० पु० विद्याभिमानी ।
प्राज्ञमन्य }

प्रा०प्राडविवादक—क० पु० वकील, ह्रीडर ।

सं० प्राण—(प्र=बहुत, अन्=जीना वा सांस लेना) ग० पु० सांस, श्वास, वायु २ जीव, जीवन, गु० प्यारा । प्यारी, प्रिय, प्रिया, प्राण पांचहैं (१ प्राण,२ अपान, ३व्यान, ४ समान ५ उदान)

सं०प्राणनाथ } (प्राण=जीवन,नाथ, वा पति, स्वामी)
प्राणपति }
पु० पति, प्रीतम, खाविंद, स्वामी ।

सं० प्राणान्त-(प्राण+अन्त) पु० प्राण का अन्त, मरना, मरण ।

सं० प्राणयात्रा—स्त्री० निर्वाह, जीविका, रोजी ।

सं० प्राणायाम-(प्राण=सांस,आ=चारों ओर से यम=रोकना) भा० पु० सांस का रोकना, योग की एक विधि जिस में नाक के दहिने नथने को बन्द करके बायें नथने से सांस को ऊपर खैंचते हैं उस को पूरक कहते हैं, और फिर दोनों नथनोंको बन्द करके सांस को भीतर रोकते हैं उस को कुम्भक कहते हैं, और फिर उस सांसको धीरे धीरे दाहिने नथने की राहसे निकाल देते हैं उस को रेचक कहते हैं ।

सं० प्राणी-(प्राण) पु० जीवधारी, जीव, जन्तु, गु० प्राणवाला ।

सं० प्राणीमात्र—पु० सब जीव, जीवमात्र ।

सं० प्राणेश (प्राण—जीवन, ईश= स्वामी) पु० प्राणनाथ, प्राणपति, स्वामी ।

सं० प्रातः (प्र=पहले, अत्=जाना) क्रि० वि० भोर, बिहान, तड़का, प्रभात, सबेरा ।

सं० प्रातःकाल- (प्रातर्=भोर, काल =समय) पु० भोरका समय, बिहान, प्रभात, तड़का ।

सं० प्रातराश-पु० प्रात के भोजन ।

सं० प्रादुर्भाव (प्रादुस्=प्रकट, भू=हो-ना) पु० प्रकट होना, प्रत्यक्ष, प्रकाश होना, निकलना, उगना ।

सं० प्रान्त—(प्र+अन्त) पु० अन्त, छोर, किनारा, अन्तभाग, प्रदेश, खण्ड, सूबा, चारोंतरफ़ ।

सं० प्रापक—(प्र+आप्+अक, आप् =पाना) क० पु० पैदा करना, प्राप्ति करना, हासिल करनेवाला ।

सं० प्राप्त (प्र=बहुत, आप्=पाना) गु० पाया हुआ, मिलाहुआ, लब्ध, उचित, वसूल ।

सं० प्राप्ति-(प्र=बहुत, आप्=पाना) स्त्री० पाना, लाभ, मिलना, वृद्धि, उदय ।

सं० प्राप्य-(प्र=बहुत, आप्=पाना) कर्म० पु० पानेयोग्य ।

सं० प्रामाणिक-(प्रमाण) गु० वि-श्वासवाला, २ प्रधान, ३ प्रत्यक्ष आदि प्रमाण से सिद्ध, शास्त्रसिद्ध ।

सं० प्रामाण्य-(प्रमाण) गु० पु० प्रमाण करने के योग्य, विश्वास के योग्य, प्रमाण, सिद्धान्त ।

सं० प्रायः } (प्र+अय्=जाना)
प्राय } क्रि० वि० बहुधा, क-भी कभी, लग भग, फेर फेर, बार बार, बहुत बार, पु० तप ।

सं० प्रायश्चित्त- (प्रायस्=तप, चि-त्त=निश्चय । जैसे—"प्रायोनाम तपःप्रोक्तं चित्तंनिश्चयउच्यते । तपोनिश्चयसंयुक्तं, प्रायश्चित्तमिति स्मृतम्" ॥ अथवा "प्रायःपापंवि-जानीयात्, चित्तन्तस्य विशोधनम्" अर्थात् प्रायस् पाप को कहते हैं और चित्त उस से शुद्ध करने को कहते हैं) पु० पाप को दूर करने का साधन, जैसे चान्द्रायण व्रत आदि ।

सं० प्रारब्ध } (प्र+आ, रभ्=
प्रालब्ध } शुरूअ करना) पु० स्त्री० भाग्य, पूर्वकृत कर्म, कर्म में लिखा हुआ, दैव, योग्य, संयोग गु० शुरूअ कियाहुआ ।

सं० प्रारम्भ—(प्र+आ, रभ्=शुरूअ करना) पु० आरम्भ, शुरूअ, प्रथम, उपक्रम ।

अं० प्रायमिनिष्टर—क० पु० वज़ीर-

आज़म, महामन्त्री ।

सं॰ प्रार्थक–कृ॰ पु॰ याचक, मांगने वाला, मुस्तदई ।

सं॰ प्रार्थना–(प्र=बहुत, अर्थ्=मांगना वा चाहना) स्त्री॰ बिनती, चाहना, याचना, मांगना, वाञ्छना, परमेश्वर से अपने पापों की माफ़ी चाहना ।

सं॰ प्रार्थनीय, प्रार्थित – कर्म॰ पु॰ याचित=याचनीय ।

सं॰ प्रार्थयिता–कृ॰ पु॰ चाहने वाला, आशिक़, आसक्त ।

सं॰ प्रावृट्, प्रावृष्, प्रावृषा – (प्र=बहुत, वृष्=बरसना) स्त्री॰ वर्षाकाल, वर्षाऋतु, बरसात, जैसे ।

"प्रावृट शरद पयोद घनेरे"
"लरत मनहुँ मारुत के प्रेरे"
(रामायण)

अं॰ प्राविंश–सूबा, खण्ड, प्रान्त ।

अं॰ प्राविंशनलसर्विस–सूबे की नौकरी ।

सं॰ प्रास–(प्र+अस्=फेंकना) पु॰ भाला, आयुध, फांसी, क्रोच, त्याग ।

सं॰ प्रासाद–(प्र=अच्छी तरह से सद्=बैठना) पु॰ महल, राजभवन, राजमन्दिर, २ देवताका मन्दिर ।

सं॰ प्रिय–(प्री=प्यार करना वा प्रसन्न होना) पु॰ प्रीतम, पति, स्वामी, भर्त्ता, गु॰ प्यारा, सनेही ।

सं॰ प्रियतम–(प्रिय=प्यारा, तम=बहुतही बहुत) गु॰ बहुतप्यारा, अत्यन्त प्यारा, पु॰ प्रीतम, पति ।

सं॰ प्रियभाषण–(प्रिय=प्यारा, भाषण=बोलना) पु॰ प्यार से बोलना, प्याराबोल, प्यारीबात ।

सं॰ प्रियंवद–कृ॰ पु॰ प्रियवादी, शीरींकलाम ।

सं॰ प्रियंवदक, प्रियवक्ता – (वद्=कहना) कृ॰ पु॰ प्रियवादी, शीरींकलाम ।

सं॰ प्रियवादिनी–(प्रिय=प्यारा, वद्=बोलना) गु॰ स्त्री॰ प्यारी बात बोलनेवाली, मीठी बात बोलनेवाली ।

सं॰ प्रियवादी–(प्रिय=प्यारा, वद्=बोलना) गु॰ पु॰ मीठी और प्यारीबातें बोलनेवाला, मिष्टभाषी ।

सं॰ प्रिया–(प्रिय) स्त्री॰ गु॰ प्यारी स्त्री, भार्या, जोरू ।

प्रा॰ प्रीत–(सं॰ प्रीति) स्त्री॰ प्यार, प्रेम ।

प्रा॰ प्रीतम–(सं॰ प्रियतम) गु॰ बहुतप्यारा, अत्यन्तप्यारा पु॰ पति ।

सं॰ प्रीति–(प्री=प्यार करना, वा तृप्त होना) स्त्री॰ प्यार, प्रेम, सनेह, मोह, दुलार, २ हर्ष, तृप्ति ।

सं॰ प्रुष्ट–(प्रुष्=जलाना) कर्म॰ पु॰ दग्ध, जला ।

सं॰ प्रेक्षक–(प्र+ईक्ष्+अक) कृ॰ पु॰ द्रष्टा, देखनेवाला, नाज़िर ।

सं० प्रेक्षण-(प्र+ईक्ष्=देखना) पु० देखना, दर्शन, २ आंख, दृष्टि ।

सं० प्रेक्षणीय-(प्र+ईक्ष्+अनीय) कर्म० पु० देखनेयोग्य, दृश्य ।

सं० प्रेत-(प्र=दूर, इण्=जाना) पु० भूत, पिशाच, मुर्दा, मृतक, गु० मराहूआ, मरा ।

प्रा० प्रेतनी-(प्रेत) स्त्री० भूतनी, पिशाचनी ।

सं० प्रेम-(प्री=प्यारकरना, वा प्रसन्न होना) पु० प्यार, प्रीति, सनेह, लाड़, दुलार, -प्रेमरंगराता=प्रेम में रंगाहुआ, बहुतप्यारमें डूबाहुआ ।

सं० प्रेमसागर-(प्रेम=प्यार, सागर =समुद्र) पु० प्यारका समंदर, श्रीमद्भागवत के दशमस्कन्धका हिन्दी भाषा में उल्था, श्रीलल्लूजीलाल कवि का कियाहुआ ।

सं० प्रेमसी-स्त्री० प्रिया, प्यारी ।

सं० प्रेमी-(प्रेम) गु० प्यार करने वाला, प्यारा, प्रियतम, सनेही ।

सं० प्रेरक-(प्र, ईर्=भेजना) पु० भेजनेवाला, पठवैया, २ ताकीद करनेवाला, प्रेरणाकरनेवाला ।

सं० प्रेरण-पु० } (प्र, ईर्=भेजना)
प्रेरणा-स्त्री० } भेजना, २आज्ञाकरना, ताकीदकरना, ३ उभाड़ना ।

प्रा० प्रेरना-(सं० प्रेरण) क्रि० स० भेजना, पठाना, २ उभाड़ना, जैसे "धुआंदेखिखरदूषणकेरा" "जाइसुपनखारावणप्रेरा" (रामायण)

प्रा० प्रेरित-(प्र+ईर्=भेजना) क० पु० भेजा हुआ, पठाया हुआ, प्रेरण किया हुआ, आज्ञा किया हुआ ।

सं० प्रोक्त-(प्र=पहले, उक्त=कहा हुआ) गु० कहाहुआ ।

अं० प्रेस-पु० यंत्रालय, मतबआ ।

अं० प्रेसीडयण्ट=सभापति, मीरमजलिस ।

अं० प्रोक्लेमेशन=मुनादी, ढंढोरा ।

अं० प्रोविनशलक्लब=जनपदसमूह ।

सं० प्रेषण-(प्रेष्=जाना) भा० पु० प्रेरणा करना, पठावना । [गया ।

सं० प्रेषित-कर्म० पु० प्रेरित, भेजा

सं० प्रोषित-(प्र=दूर, वस्=रहना) गु० जो विदेश में हो, विदेश गया हुआ, विदेशी ।

सं० प्रोषितपतिका } (प्रोषित+पति
प्रोषितभर्तृका } वा भर्ता) स्त्री० नायिका जिसका पति परदेशमेंहो ।

प्रा० प्रोहित-(सं० पुरोहित) पु० पुरोहित, पुरोधा, कुलगुरु, उपाध्याय ।

सं० प्रोक्षक-(प्र=बहुत, उक्ष्+अक, उक्ष्=सींचना) क० पु० सींचनेवाला,

सं० प्रोक्षण-(प्र+उक्ष+अण)
भा० पु० सींचना, वध, यज्ञार्थ पशुको वधकरना ।
सं० प्रोक्षित-क० पु० सिक्त, सींचागया ।
सं० प्रौढ़ (प्र=बहुत, वह=लेजाना) गु० बड़ा, मोटा, पूरा जवान, पूरा बढ़ा हुआ, २ साहसी, ३ निपुण ।
सं० प्रौढ़ा-(प्रौढ) स्त्री० जवान स्त्री, तीस बरस से ५५ बरस तक ऊपर की स्त्री ।
सं० प्लक्ष-(प्लक्ष=खाना) पु० पाकर वृक्ष, पीपलवृक्ष, २ भोजन, ३ दरवाजे की चौखट, बाजू, ४ सात द्वीपोंमें का एक द्वीप ।
सं० प्लव-(प्लु=कूदजाना) क० पु० डोंगा, मेंढक, बानर, श्वपच, चांडाल, बगुला, सारस ।
सं० प्लवक-(प्लु+अक) क० पु० नट, नाचनेवाला, खड्गधारी, नट ।
सं० प्लवग } प्लवङ्ग } (प्लवन्=कूदता हुआ प्लु=कूदना, और गम्=जाना)पु० बानर, बंदर, २ हरिन, मेंढक । [मेंढक, मृगा ।
सं० प्लवङ्गम-पु० मर्कट, बानर, भेक,
सं० प्लीहा (प्लिह्=जाना) स्त्री० पिलही, तापतिल्ली ।
सं० प्लुत (प्लु=कूदना अथवा ऊंचा जाना) पु० स्वरों का तीसरा भेद, जिसके बोलने में ह्रस्व से तिगुना समय लगता है गु० कूदा हुआ, उछला हुआ ।
सं० प्लुष-(प्लुष्=जलाना) पु० दाह, जलन, जलना, अग्नि, शोक, उष्ण, नाश ।
सं० प्लुष्ट-(प्लुष्+त) क० पु० दग्ध, जलाहुआ ।
सं० प्लोष-भा० पु० दाह, जलना ।
सं० प्लोषिता-(प्लुष्+तृ) क० पु० जलानेवाला ।

(फ)

सं० फ-पु० पकड़, फटकार, वृथावार्ता साधन, वायु का झकोरा ।
प्रा० फंका-पु० मुट्ठीभर चीज जो एक बार मुँह में डाली जावे ।
प्रा० फंकामारना-बोल० मुट्ठीभर चीज एक बार मुँह में लेजाना ।
प्रा० फंदाना (सं० पश्=बांधना) क्रि० अ० फँसना, उलझना, अटकना, बझना ।
प्रा० फंदा } फांदा } (सं० पाश) पु० पाश, फांसी, जाल, फँसड़ी, २ जंजाल, झंझट, कठिनाई ।
प्रा० फँसना } फसना } (सं० पश्=बांधना) क्रि० अ० उलझना, बझना, पकड़ा जाना, दूसरे के वश में आना ।
सं० फक्क-(फक्क=दुराचार) पु० असदाचार, बदचलन, मन्दगति, रिंगना ।

प्रा० फक़ड़ –गु० श्रोबाशरिन्द, बखेड़िया लड़ाका ।

सं० फक्किका–(फक्क=बुरा व्यवहार करना, या धीरे धीरे चलना) स्त्री० फांकी, तर्क, लपेटकी बात, पेंच उलझेड़ेकीबात, चाल, कपट, छल ।

प्रा० फगुआ–(फागुन) गु० होली का पर्व, अथवा त्योहार ।

सं० फट –गु० प्रफुल्लित, विकसित, खिलाहुआ, अव्य० फटकार, मंत्रास्त्र।

प्रा० फटकना–(सं० स्फोटन, स्फुट्=जुदा २ करना) क्रि० स० पछोड़ना, उसाना, जुदा करना, नाज को पछाटना, छांटना, २ झाड़ना, ३ क्रि० अ० पासजाना, जा निकलना ।

प्रा० फटकी–स्त्री० चिड़ीमार का जाल, २ बड़ापिंजरा, ३ एक रस्सी जिसकी आवाज़ से पखेरुओं को डराते हैं ।

प्रा० फटना–(सं० स्फटन, स्फट्=फटना) क्रि० अ० चिरना, तड़कना, तार तार होना ।

प्रा० फटिक–(सं० स्फटिक) पु० बिल्लौर का पत्थर, स्फटिक ।

प्रा० फड़–स्त्री० जुवां खेलने की जगह, २ वह जगह जहां बेचने के लिये माल असबाब रहता है, ३ गाड़ी का डंडा ।

प्रा० फड़कना } (सं० स्फुट्=फटना
फरकना } वा विकसना) क्रि० अ० फड़फड़ाना, धड़धड़ाना, उछलना, हिलना (जैसे आंख का पपोटा) टास मारना, तड़फना, २ बहुत खुश होना ।

प्रा० फड़फड़ाना–क्रि० अ० फड़कना, तलफना, हिलना ।

प्रा० फडिङ्गा–पु० झींगुर, एक प्रकार का पतङ्गा ।

सं० फण–(फण्=जाना) पु० सांप का फैलाया हुआ शिर, वा छुड़ी ।

सं० फणधर–(फण, धृ=रखना) पु० सांप, सर्प ।

सं० फणिक–(फण) पु० सांप, सर्प ।

सं० फणिज्झक–पु० छोटे पत्ता, तुलसीदल ।

सं० फणी–(फण) पु० सांप, सर्प ।

सं० फणीन्द्र } (फणी=सांप, इन्द्र
फणीश्वर } वा ईश्वर=राजा) पु० सर्पराज, अनन्त, २ वासुकी ।

अं० फण्ड-समूह, पुंज, पूंजी, सरमाया ।

प्रा० फनगा–(सं० पतङ्ग) पु० टिड्डा, आंखफोड़ा । [फीका ।

प्रा० फफसा–गु० फूला, पोला, २

प्रा० फफूंदी–स्त्री० गीली सड़ी हुई चीज़पर एकतरहकी सफ़ेद सी तह ।

प्रा० फफोला–(सं० स्फोट, स्फुट्=

फटना) पु० फुलका, फाला, छाला।

प्रा० फफोलेफूटने—बोल० दिल दुख पाना, मन में चिंता होना, दुख पाना।

प्रा०फफोलेदिलकेफोड़ने—बोल० मनकी चाह पूरी करना।

प्रा० फब / फबन } स्त्री० शोभा सजावट।

प्रा० फबतीकहना—बोल० चुटकुला कहना, चुहल करना, किसी के पहरावे की हँसी करना।

प्रा० फबना—क्रि० अ० सोहना, छाजना, खुलना, भला लगना, अच्छा लगना, ठीक होना।

प्रा०फरछा-गु० निर्मल, स्वच्छ, २खरा।

प्रा० फरफन्द—(सं० प्रपंच) पु० छल, कपट, धोखा, दुष्टता।

प्रा० फरसा—(सं० परशु) पु० कुल्हाड़ा, बसूला।

प्रा०फरहरा-पु० / फरहरी-स्त्री० } ध्वजा, पताका, झंडी का कपड़ा जो हवा में उड़ता है, गु० अधसूखा।

प्रा० फरी—(सं० फर, फल्=जाना वा भेदना) स्त्री० ढाल।

प्रा० फर्राना—(सं० स्फुरण) क्रि० अ० हिलना, उड़ना, फहरना (जैसे झंडा)।

सं०फल—(फल्=फलना, सिद्धहोना, वा भेदना) पु० मेवा, २ कामकी सिद्धि, लाभ, फायदा, प्रयोजन, मतलब, परिणाम, नतीजा, ३ संतान, वंश, सन्तति, औलाद, ४ प्रतिफल, बदला, प्रतिकार, पारितोषिक, ५ बाण के आगे का लोहा, फाल, ६ (गणितमें) लब्धि, ७ ढाल, फरी, ८ भाले अथवा तलवार की नोक।

प्रा० फलपाना—बोल० भले या बुरे काम का पलटा मिलना, बदला मिलना।

प्रा० फलफलारी—बोल० नाना प्रकार के फल।

प्रा० फलफूल—बोल० वनस्पति।

सं० फलक-(फल्=जाना वा भेदना) पु० ढाल, २ ललाटकी हड्डी, ३ मूठि, तह, परत, कबज़ा, तख़्त, पटेरा।

सं० फलद्—(फल, दा=देना) गु० फलदायक, फलदेनेवाला, पु० वृक्ष।

सं० फलदाता-(फल+दाता) गु० फल देनेवाला।

प्रा० फलना—(सं० फलन, फल्=फलना) क्रि० अ० फल लाना, फल देना, फल लगना (जैसे वृक्ष का) २ सफल होना, फलदायक होना, ३ भाग्यवान् होना, सुखी होना, फूलना, खुशरहना, ४ वंश बढ़ना

सं० फलप्राप्ति-(फल + प्राप्ति) स्त्री० मनोरथ सिद्धि, मतलब पूरा होना।

प्रा० फलनाफूलना-बोल० भाग्यवान् होना, सुखी होना।

प्रा० फलबुझौवल-पु० एक खेल का नाम जिसको मनकेला भी कहते हैं जैसे-मन में कोई अंक मानलो फिर उसको दूना करो और उसमें दश जोड़ दो फिर उस में से पांच निकाल लो तो बाकी कितना रहा?-इकीस तो वह अंक आठ है-इत्यादि।

सं० फलवान्-(फल, वान्=वाला) सफल, सार्थक, फलयुक्त।

सं० फलश्रेष्ठ-पु० आम्रवृक्ष।

सं० फलाध्यक्ष-(फल + अध्यक्ष) पु० ईश्वर।

प्रा० फलांग-(सं० लंघन, लघ्=लांघना, कूदना) स्त्री० कूद, उछलना, डग।

सं० फलित-(फल्=फलना) वर्ण० पु० फला हुआ, सफल।

सं० फलितज्ञ-(फलित + ज्ञ=जानना) क० पु० ज्योतिषी, नजूमी।

सं० फलितार्थ-पु० तात्पर्य्य, सिद्धि।

प्रा० फली-(सं० फल) स्त्री० छीमी (जैसे मटर आदि की)।

सं० फलेग्रहि-(फले + ग्रह=लेना) क० पु० फलका लेनेवाला।

सं० फलोत्तमा-(फल + उत्तमा) स्त्री० द्राक्षावृक्ष, मुनक्का।

सं० फलोदय-(फल + उदय) पु० लाभ, प्राप्ति, २ आनन्द, हर्ष।

सं० फल्गु-(फल्=फल देना) स्त्री० एक नदी का नाम जिसके तीर पर गया नाम शहर बसता है, २ एक प्रकार का अंजीरका पेड़ ३ गुलाल।

प्रा० फहराना } (सं० स्फुरण, स्फुर्=
फर्राना } हिलना) क्रि० अ० उड़ना, लहराना, हिलना (जैसे झण्डा)

प्रा० फांक-स्त्री० टुकड़ा, चकती, ककड़ी आदि फल का टुकड़ा।

प्रा० फांकना-क्रि० स० फंकामारना।

प्रा० फांकी (सं० फक्किका) स्त्री० लपेट की बात, छलछिद्र की बात, तर्क, फक्किका।

प्रा० फांदना-(सं० फालन, फल्=उछलना) क्रि० स० कूदना उछलना, लांघना।

प्रा० फास-स्त्री० बांस आदि का बहुतही छोटा टुकड़ा, अथवा कांटा अथवा सींक।

प्रा० फांसी-(सं० पाश) स्त्री० फंदा, फँसड़ी, एक रस्सी जो गलेमें डाल कर खींच लेतेहैं तो गरदन की रग दब कर आदमी मरजाता है।

प्रा० फांसी देना-बोल० गला दबाना, मारडालना, फांसी पर च-

डाना या लटकाना।

प्रा० फांसी पड़ना-बोल० फांसी दिया जाना, मारा जाना, लटकाया जाना।

प्रा० फांसीलगाना-बोल० गला घोंटना, गला दबाना, मारडालना।

प्रा० फाग-(सं० फल्गु) पु० होली में गुलाल आदि, २ होली के खेल।

प्रा० फागखेलना-बोल० अबीर उड़ाना, होली खेलना।

प्रा० फागुन-(सं० फाल्गुन) पु० बारहवां हिन्दी महीना।

प्रा० फाटक-पु० बड़ादरवाज़ा, द्वार, किवाड़, २ रोक, अटकाव।

प्रा० फाड़ना-(सं० स्फाटन) क्रि० स० चीरना, टुकड़े २ करना।

प्रा० फाड़खाना-बोल० भंभोड़ना, २ सताना, ३ बहुत क्रोध करना।

अं० फारेनसेक्रेटरी=विदेशीय व्यापारियों के मंत्री।

सं० फाल-(फल्=फाड़ना) पु० नोकदार लोहा जो हल में लगाया जाता है।

प्रा० फालसा-पु० एक फलका नाम।

सं० फाल्गुन-(फाल्गुनी एक नक्षत्र का नाम) पु० फागुन, इस महीने में पूनोंके दिन पूर्वाफाल्गुनी नक्षत्र होता है।

प्रा० फावड़ा-पु० धरती खोदकर मिट्टी फेंकने या उठाने का एक औज़ार।

प्रा० फाहा-रूईका पहल अथवा छोटा गाला, २ वह कपड़ा जिसपर मरहम लगाकर घावपर बांधते हैं।

प्रा० फिकारना-क्रि० स० शिर नंगा करना।

प्रा० फिट-पु० फिटकार, सराप, क्रि० वि० छीछी। [छीछी।

प्रा० फिटफिट-बोल० धिक्धिक्,

प्रा० फिटकार-स्त्री० गाली, सराप।

प्रा० फिटकारना-क्रि० स० धिक्कारना, सरापना, छीछी करना।

प्रा० फिर-समुच्च० पीछे, पुनि, इसके बाद।

प्रा० फिरकी-(फिरना) स्त्री० फिरनी, चकई, एक खिलौने का नाम।

प्रा० फिरना-(शायद सं० परिक्रम से) क्रि० अ० घूमना, चक्करखाना, पलटना, टहलना, चलना, भटकना, रमना, भ्रमण करना, बलवाकरना।

प्रा० फिरजाना-बोल० पलटना, २ बलवा करना, बाग़ी होना, ३ ऐंठना, बलखाना, ४ टेढ़ा होना।

प्रा० फिली-स्त्री० पिंडली, टंगड़ी।

प्रा० फिसलना-क्रि० अ० खिसलना, डिगना, रपटना, खिसकना, उलट जाना, लुढ़कना, गिरना, लड़खड़ाना।

प्रा० फींचना क्रि० स० धोना,

साफ करना, खंगालना ।

प्रा० फीका-गु० बेस्वाद, बेनमक, मीठा, २ पीला, बदरंग, कमरंग, ३ हलका, (जैसे रंग) ।

प्रा० फुंकार-(सं० फुत्कार, फुत्=ऐसा शब्द, कृ=करना) स्त्री० सांप के सांस लेने का शब्द, फुफकार, फुस्कार ।

प्रा० फुंहार-स्त्री० मेह की छोटी २ बूंदें, फुही, फोंहार ।

प्रा० फुंहारा-(फुंहार) पु० फव्वारा ।

प्रा० फुकना-पु० मूत्राधार, थैली ।

प्रा० फुट-(सं० स्फुट) गु० अलग २, भिन्न, विषम, अयुग्म ।

प्रा० फुटकर-(सं० स्फुट्=अलग २ होना) गु० भिन्न, फुट, अयुग्म, विषम, अलग २, एक एक ।

प्रा० फुदकना-क्रि० अ० कुदकना, उछलना, कूदना ।

प्रा० फुनगी-स्त्री० कली, कोंपल, मंजरी, अंकुर ।

प्रा० फुनसी-स्त्री० छोटा फोड़ा ।

प्रा० फुफ्फा-पु० फुफ्फी का पति ।

प्रा० फुफ्फी-स्त्री० बाप की बहिन ।

प्रा० फुफकार-स्त्री० फुन्कार, फुस्कार ।

प्रा० फुफेरा } फुफेरी } गु० फुफ्फी का जैसे फुफेरा भाई=फुफ्फी का बेटा, फुफेरी बहिन=फुफ्फी की बेटी ।

प्रा० फुर-गु० सच, सच्चा, ठीक, यथार्थ ।

प्रा० फुरफुराना-(सं० स्फुर्=हिलना) क्रि० अ० कांपना, हिलना ।

प्रा० फुर्त } फुर्ती } (सं० स्फूर्त्ति, स्फुर्=हिलना) स्त्री० जल्दी, चटपटी शीघ्रता, वेगता, चालाकी ।

प्रा० फुर्तीला-(फुर्त) गु० चालाक, चटपटिया, जल्दबाज ।

प्रा० फुलका-(सं० फुल्ल्=फूलना) गु० फूला हुआ, २ हलका, पु० फफोला, छाला, ३ पतली रोटी ।

प्रा० फुलकारी-(सं० फुल्लाकार, फुल्ल=फूल, आकार=डौल) स्त्री० एक प्रकार का कपड़ा जिस पर फूल निकले होते हैं, नैनू, नामदानी ।

प्रा० फुलझड़ी-स्त्री० एक तरह की आतिशबाजी ।

प्रा० फुलवारी } फुलवाड़ी } (सं० फुल्लवाटी, फुल्ल=फूल, वाटी=बाड़ी) स्त्री० पुष्पवाटिका, फूलों का बगीचा ।

प्रा० फुलेल-(सं० फुल्लतैल) पु० सुगंधित तेल, फूल का तेल ।

प्रा० फुलौरी-स्त्री० पकौड़ी ।

सं० फुल्ल-पु० पुष्पयुक्त वृक्ष, विकसन, खिलना, हर्ष ।

प्रा० फुल्ली-(सं० फुल्ल) स्त्री० एक आंख की बीमारी जिससे आंख में

एक सफ़ेद बुन्दा सा होजाता है।

प्रा० **फुसफुसाना**—क्रि० अ० काना-फुसी करना, कानाकानी करना।

प्रा० **फुसलाना**—क्रि० स० दिलासा देना, भुलाना, झांसा देना, धोखा देना, बहकाना, दमदेना, बहलाना।

प्रा० **फूंक**—(फूंकना) स्त्री० दम, सांस।

प्रा० **फूंकदेना**—बोल० आगलगादेना।

प्रा० **फूंकना**—(सं० फुत्कार) क्रि० स० मुँहसे हवा निकालना, २ आग लगाना, जलाना, सुलगाना, ३ बजाना, (जैसे तुरही, सींगी आदि)।

प्रा० **फूंकफूंककरपांवधरना**—बोल० बहुत सावधानी से काम करना या रहना।

प्रा० **फूंकारना**—(सं० फुत्कार) क्रि० अ० फनफनाना, फुंकार मारना, फुत्कारना (जैसे सांपका)।

प्रा० **फूंही**, **फोंहार**, **फूहार**—स्त्री० छोटी छोटी मेह की बूँदें, झीसी, मन्द मन्द वर्षा।

प्रा० **फूट**—(सं० स्फुटि, स्फुट्=फूटना या टूटना) स्त्री० एक तरह की ककड़ी, पकी हुई ककड़ी, २ (स्फुट) बिगाड़, बैर, विरोध, बखेड़ा, झगड़ा, असम्मति, अनमेल, ३ जुदा होना, अलगाव, बिलगाव, ४ खंडन, टूट, सेंध, दरार।

प्रा० **फूटपड़ना**—बोल० बखेड़ा मचना, विरोध होना, झगड़ा उठना, बीच पड़ना।

प्रा० **फूटफूटकररोना**—बोल० उमंड उमंड कर रोना, बहुत रोना।

प्रा० **फूटहोना** बोल० किसी की सम्मति नहीं मिलना, एक मता न होना।

प्रा० **फूटरहना**—बोल० अलग हो-[जाना।

प्रा० **फूटना**—(सं० स्फुटन, स्फुट्=फूटना) क्रि० अ० टूटना, २ छिन्नभिन्न होना, बिखरना, अलग होना, ३ फटना, चिरना, ४ उठना, फैलना (जैसे सुगंध), ५ कलीका खिलना, ६ भेद खुलजाना, ७ बैरी से मिलजाना।

प्रा० **फूटीसहें पर काजल न सहें**-कहावत—थोड़ी घटी नहीं सहना और सब का सब नुक़सान सहना।

प्रा० **फूफा**—पु० फूफी का पति।

प्रा० **फूफी**, **फूफू**—स्त्री० बापकी बहिन।

प्रा० **फूल**—(सं० फुल्ल, फुल्ल्=फूलना) पु० पुष्प, पुहुप, कुसुम, सुमन, २ स्त्री का रज, निहानी, ३ मुर्दे की हड्डियां जो जल जाने के पीछे चुनी जाती हैं, ४ एक प्रकारका काँसा जो बहुतसाफ़ और सफ़ेद होता है, ५ फुलाव, सूजन, गु० बहुतहलका।

प्रा० फूलजाना--बोल० सूजजाना, २ प्रसन्न होना, आनन्दित होना, ३ मोटाहोना ।

प्रा० फूलझड़ना-बोल० सुन्दरताई से बोलना, मीठा बोलना, २ दीपक से जलेहुए तेलके टपकोंका गिरना ।

प्रा० फूलपड़ना—बोल० आग लगजाना, जलजाना ।

प्रा० फूलबैठना—बोल० खुशहोना, प्रसन्न होना, हर्षित होना, बहुत प्रसन्नहोकर बैठना । [मकल्ला ।

प्रा० फूलगोभी-स्त्री० गोभी, कर-

प्रा० फूलना-(सं० फुल्लन, फुल्ल्=फूलना) क्रि० अ० खिलना, बिकसना, डहडहाना, २ प्रसन्न होना, खुशहोना, हुलसना, निरोग रहना, बढ़ना, पनपना, फलना, ३ सूजना, मोटाहोना, वायुसे भरना, वायुसे फूलना, ४ घमण्डकरना ।

प्रा० फूलताफिरना—बोल० अत्यन्त प्रसन्नहोना ।

प्रा० फूला -(सं० फुल्ल) गु० फूला हुआ, सूजा हुआ, २ खिलाहुआ, बिकसा हुआ, डहडहा हुआ ।

प्रा० फूलानसमाना-बोल० मगन होना, अत्यन्त आनन्दित होना, आनन्द से फूल जाना ।

प्रा० फूस—पु० सड़ा और सूखा घास,

प्रा० फूसमें चिनगारी डालना-बोल० बखेड़ा मचाना, झगड़ा उठाना ।

प्रा० फूहड़—गु० अनसीखी, मूर्ख, घामड़, भोंड़ी (यह शब्द स्त्री के लिये बोला जाता है) स्त्री० मैली कुचैली स्त्री ।

प्रा० फूहा—पु० रूईका फाहा जिस को दूध में भिगो कर बच्चे के मुँह में निचोड़ते हैं जब कि बच्चा अपनी मा की चूंची से दूध नहीं पीसकताहो ।

प्रा० फेंकना—(सं० क्षेपण, क्षिप्=फेंकना) क्रि० स० डालना, चीगना, दूर गिराना, अलग करना, बगभूट दौड़ाना (घोड़े को) सरपट जाना ।

प्रा० फेंकदेना—बोल० दूरगिरादेना ।

प्रा० फेंट } स्त्री० कमरबन्द, पटका,
फैंट } कटिबन्ध ।

प्रा० फेंटबांधना—बोल० किसीकाम के करने के लिये तैयार होना, ठानना ठहराना, कमर बांधना ।

प्रा० फेंटा } पु० स्त्री० कमरबन्द,
फैंटा } २ छोटी सी पगड़ी ।

सं० फेन—(स्फाय्=बढ़ना) पु० झाग, कफ, फेना, समुद्रफल ।

सं० फेनावाहिन—पु० जल, रस, दुग्ध, दूध, समुद्र ।

प्रा० फेनी–(सं० फेन) स्त्री० एक भांत की मिठाई।

सं० फेर–पु० शृगाल, गीदड़।

प्रा० फेर–(फेरना) पु० घुमाव, बांका, चक्कर, पेंच, २ तबदील, बदली, विकार, ३ बुरे दिन, बुरा भाग, अभाग्य, ४ कठिनता, ५ दूरी, क्रि० वि० दूसरी वार, पीछा, फिर, उलटा।

प्रा० फेरखाना–बोल० घूमना, चक्कर खाना, २ दुख पाना, तकलीफ उठाना।

प्रा० फेरदेना–बोल० उलटा देना, पीछा दे देना, लौटा देना।

प्रा० फेरपड़ना–बोल० फरक पड़ना, बीच रहना, २ चक्कर पड़ना, दुःख होना।

प्रा० फेरफार–बोल० छल, फरेब, धोखा, दगा, २ ओसरा, ओसरी, परस्पर, फेराफेरी।

प्रा० फेरफारकरना–बोल० अदल बदल करना, परिवर्त्तन करना, २ कपट करना, धोखा देना।

प्रा० फेराफेरी–बोल० आपस में किसी चीज को लेना और पीछे देना।

प्रा० फेरना–क्रि० स० उलटना, घुमाना, लौटाना, पीछा दे देना, हटाना, दूर करना, २ पोतना (जैसे चूना, कलई आदि)।

प्रा० सिरपरहाथफेरना–बोल० फुसलाकर ठगना।

प्रा० हाथफेरना–बोल० प्यार करना, दुलार करना, छोह करना।

फा० फेअल }
फेल } काम, क्रिया।

सं० फेलक–(फेल्+अक, फेल= जाना) क० पु० उच्छिष्ट, जूंठ।

सं० फेलन–भा० पु० फेंकना।

सं० फेलित–कर्म० पु० फेंका हुआ।

अं० फेलोज=स्वम्बर, अंग।

प्रा० फैलना–क्रि० अ० बिछना, पसरना, बिथरना, बिखरना, २ चौड़ा होना, ३ प्रसिद्ध होना।

प्रा० फैलाना–क्रि० स० बिछाना, पसारना, छितराना, २ खोल देना, ३ चौड़ा करना, ४ प्रसिद्ध करना, प्रकट करना, ५ हिसाब करना।

प्रा० फैलाव–पु० प्रचार, बिछाव, प्रसार, चौड़ाई।

प्रा० फोंफी–स्त्री० नली, छूछी, २ पोली चीज।

अं० फोटो–प्रतिबिम्ब, अक्स।

अं० फोटोग्राफर=चित्रलेखक, मुसौव्वर।

प्रा० फोड़ना–(सं० स्फोटन, स्फुट्= फटना) क्रि० स० तोड़ना, फाड़ना, चीरना, टुकड़े २ करना, २ प्रकट करना, भेद खोल देना।

प्रा० फोड़ा–(सं० स्फोटक, स्फुट्=

फूटना) पु० घाव, जख़म, फुनसी ।

प्रा० फोला -पु० फफोला, छाला ।

फ़ा० फ़ौरन् -क्रि० वि० सद्यः, तुरन्त उसीदम, तत्काल, तत्क्षण ।

अं० फ्रीटेड -स्वाधीन, परदेशीय, वाणिज्य ।

(ब)

सं० ब -पु० वरुण, २ घड़ा, ३ समुद्र ४ पानी ।

प्रा० बंकाई -(सं० वक्रता, वक्र, वकि= टेढ़ा होना) भा० स्त्री० टेढ़ापन, टेढ़ाई, तिरछापन, बांकापन, फेर, घुमाव ।

प्रा० बंगड़ी -स्त्री० स्त्रियों के हाथ में पहननेका का एक गहना ।

प्रा० बंगला -पु० एकतरहकामकान जो चारों ओर से खुला रहता है, २ (सं० वङ्ग) एक तरह का पात, ३ बंगाली बोली ।

प्रा० बंगाला -(सं० वङ्ग) पु० बंगाल देश का नाम ।

प्रा० बंगाली -(सं० वङ्ग) पु० बंगाले का रहनेवाला, स्त्री० बंगाले की बोली ।

प्रा० बंचना -(सं० वञ्चन, वंच्=कहना) क्रि० अ० पढ़ना, बांचना ।

प्रा० बंदनवार -(सं० बन्ध=बांधना, और बार=दरवाजा) स्त्री० फूल और पत्तोंकीमाला जो ब्याह अथवा कोई उत्सव और पर्व के दिन दरवाज़े पर बाँधते हैं ।

प्रा० बंदर -(सं० वानर) पु० एक जानवर जिसका डील डौल और मुंह आदमी से बहुत मिलता है ।

प्रा० बंदरकीसी आंखबदलना -बोल० तुरत रिसाना, जल्द गुस्से में होना ।

प्रा० बंदरकीतरह नचाना -बोल० बड़ा कठिन काम करवाना ।

प्रा० बंदर क्या जाने अदरक का स्वाद -कहावत-मूर्ख आदमी अच्छी चीजोंका गुण नहीं जानता ।

प्रा० बंदवा } (सं० बंध्=बांधना)
बंधुआ } पु० क़ैदी ।

प्रा० बंदी -(सं० वन्दि, वांद=सराहना वा झुकना, नमस्कार करना) पु० बंधुआ, क़ैदी, २ भाट ।

प्रा० बंदी -स्त्री० स्त्रियों के लिलाट पर पहननेका एकगहना, बिन्दिया ।

प्रा० बंदीगृह -(सं० वन्दीगृह, वन्दी =क़ैदी, गृह=घर) पु० जेलखाना, क़ैद खाना, कारागार ।

प्रा० बंदीजन -(सं० वन्दी + जन) पु० भाट, चारण, यश बखाननेवाले ।

प्रा० बंदोड -(सं० बंध्=बांधना) स्त्री० दासी, लौंडी, बांदी ।

प्रा० बक -(सं० वक, वकि=टेढ़ा

होना) पु० बगला ।

प्रा० बकध्यानलगाना—बोल० पाखण्ड करना, कपट करना ।

प्रा० बक (सं० वाक्) स्त्री० बकवाद, बकबक, गपसप, बड़बड़ाहट, झक, गुलगपाड़, वृथा बातें ।

प्रा० बक झक—बोल० बक बक, गपसप, बकवाद, वृथा बातें ।

प्रा० बकझककरना } बकबककरना } बोल० टेंटें करना, चेंचेंकरना, बकबक करना, बकवाद करना बड़बड़ाना, वृथाबकना ।

प्रा० बकलगाना—बोल० हुल्लाकरना, गुलमचाना, हुल्लड़ करना ।

प्रा० बकना—(सं० वाक्) क्रि० अ० बड़बड़ाना, बकझक करना, हुल्लड़ करना, गुल मचाना ।

प्रा० बकरा—(सं० वर्कर, वृक=लेना) पु० छागल, अज ।

प्रा० बकरी—स्त्री० छेरी, अजा ।

प्रा० बकला } बक्कल } (सं० वल्कल, वल =ढकना) स्त्री० छाल, छिलका, पोस्त ।

प्रा० बकवाद—(बक=बड़बड़ाहट, और वाद=झगड़ा) स्त्री० बकबक, बकझक, वृथा बातें ।

प्रा० बकवादी—(बकवाद) गु० झक्की, बक्की, बकवादकरने वाला ।

प्रा० बकासुर—(सं० बक=बगुला असुर =राक्षस) पु० एकराक्षसका नाम जो बगुला बनकर श्रीकृष्ण के मारनेको गया था उसको श्रीकृष्ण ने मारा ।

प्रा० बकिया—स्त्री० छूरी, चक्कू ।

सं० बकी स्त्री० पूतनाराक्षसीकानाम ।

प्रा० बक्की—(बकना) गु० गप्पी, झक्की, बकवादी, (सं० वक्ता) ।

प्रा० बक्रदन्त—(सं० वक्र=बांका दन्त =दांत) पु० शिशुपालके भाईका नाम ।

प्रा० बखान (सं० व्याख्यान) पु० वर्णन, व्याख्या, बयान, स्तुति, सराह ।

प्रा० बखानना } बखानकरना } क्रि० स० सराहना, स्तुति करना, तारीफ़ करना, वर्णन करना ।

प्रा० बखार पु० } बखारी स्त्री० } अनाज रखने का भण्डार ।

फ़ा० बखिया पु० एक तरह का टांका, मज़बूत टांका, दृढ़ सीवन ।

प्रा० बखेड़ा—पु० झगड़ा, लड़ाई, दंगा, रौला । [गड़ामिटाना ।

प्रा० बखेड़ा चुकाना—बोल० झ-

प्रा० बखेड़ा मचाना—बोल० दंगा करना, बलवा करना ।

प्रा० बखेड़िया—क० पु० झगड़ालू, लड़ाका, दंगई ।

प्रा० बखेरना—(सं० विकीर्ण, वि, कृ=बिखरना) क्रि० स० फैलाना, अलग २ करना, छिटकना, छि-

तराना, बिथराना, छींटना ।

प्रा० बग —(सं० बक) पु० बगुला ।

प्रा० बगछूट —(बग=बागडोर, छूट =छुटना) स्त्री० सरपट, धावा ।

प्रा० बगछूटदौड़ना —बोल० सर्पट जाना, तेज़ दौड़ना ।

प्रा० बगला }
बगुला } (सं० बक) पु० एक जलका जीव, बग ।

प्रा० बगलाभक्त —बोल० कपटी, छली, पाखण्डी, कपट धर्मी, फरेबी ।

प्रा० बगलामारेपंखहाथआये — कहावत० ग़रीबको दुःख देनेसे बहुत लाभ नहीं होता है ।

प्रा० बगार —पु० चरागाह, रमना, दरख़्तों की क़तार, बाग़ ।

प्रा० बगूला (बाव, अथवा वायुसे) पु० हवाका चक्कर जिस में धूल ऊंची उठती है बवण्डर, चक्रवात ।

प्रा० बघार —पु० छौंकना, घी और कुछ मसाला गर्म करके दाल आदि तरकारियों में डालना ।

प्रा० बग्घी }
बग्गी } स्त्री० एक तरह की अंगरेज़ी गाड़ी जिसमें घोड़ा जोता जाता है ।

प्रा० बघेला —(बाघ) पु० एक जाति के राजपूत, २ बाघका बच्चा ।

प्रा० बच —(सं० वचस्, वच्=बोलना) पु० वचन, वाक्य ।

प्रा० बचकाना —(फ़ा० बच्चासे) गु० छोटा, पु० कथकका लड़का २ छोटा जूता, बच्चोंका जूता ।

प्रा० बचत —स्त्री० शेष, बाक़ी बक़िया, बक़ाया, अवशेष ।

प्रा० बचन —(सं० वचन) पु० बात, वाक्य, कहना, २ क़ौल, क़रार, पण, होड़, शर्त ।

प्रा० बचनचूक —बोल० अविश्वासी, बेएतबार ।

प्रा० बचनछोड़ना —बोल० वचन तोड़ना, क़ौलछोड़ना ।

प्रा० बचनतोड़ना —बोल० कहीहुई बात से फिर जाना, शर्त से फिर जाना ।

प्रा० बचनदेना —बोल० पक्का क़ौल करना, पण करना, प्रतिज्ञा करना ।

प्रा० बचननिभाना या पालना बोल० कहेको पूरा करना, अपनी बात पर पक्का रहना ।

प्रा० बचनबन्धकरना —बोल० वचन लेना, इक़रार करना ।

प्रा० बचनबंधहोना —बोल० बचन देना ।

प्रा० बचनमानना —बोल० बात मानना, आज्ञा पालन करना ।

प्रा० बचनलेना —बोल० इक़रार करना ।

प्रा० बचनहारना —बोल० मानले-

ना, इक़रार कर लेना ।

प्रा० बचना – क्रि० अ० रक्षापाना, २ अलग रहना, ३ बाकी रहना ।

प्रा० बचपन – भा० पु० लड़कपन, लड़काई ।

प्रा० बचाना – क्रि० स० रक्षाकरना, रखवालीकरना, २ जवाब देना, उत्तर देना ।

प्रा० बचाव - भा० पु० रक्षा, रखवाली, उद्धार, २ हिमायत, आश्रय ।

प्रा० बचा – (सं० वत्स और फ़ा० बच्चा) पु० छोटा लड़का वा लड़की, २ छोटी उमर का जानवर ।

प्रा० बछड़ा, बछडू – (सं० वत्स पु० गाय का बच्चा ।

प्रा० बछिया – स्त्री० गायकी बछड़ी ।

प्रा० बछेरा - (वत्स) पु० घोड़ेका बच्चा ।

प्रा० बच्छ – (सं० वत्स) गु० लाल, प्यारा, पु० बच्चा, लड़का, २ बछड़ा ।

प्रा० बच्छल - (सं० वत्सल) क० पु० प्यारा, छोही, प्रेमी, दयालु, कृपालु ।

प्रा० बच्छासुर - (सं० वत्स=बछड़ा, असुर=राक्षस) पु० एक राक्षस जो कंस के कहने से बछड़ा बनकर श्रीकृष्ण के मारने को गया था ।

प्रा० बजना – (सं० वाद्य, वद्=शब्द करना) क्रि० अ० शब्द वा स्वर निकलना ।

प्रा० बजन्त्री – (सं० वाद्य=बाजा, यन्त्री=बजानेवाला) पु० बाजा, बजानेवाला समाजी ।

प्रा० बजरबट्टू - पु० एक जङ्गली फल का नाम जो रीछ नचानेवाले बच्चों के लिये देते हैं इस लिये कि बुरी नज़र नहीं लगे ।

प्रा० बजरा – पु० बड़ी नाव जिसपर बैठ कर बड़े आदमी नदी की सैर करते हैं ।

अं० बज्यट - स्त्री० आयव्ययका लेखा, आमदनी और खर्चका हिसाब ।

प्रा० बज्र – (सं० वज्र, वज्=जाना) पु० इन्द्र का अस्त्र, बिजली, गाज, २ हीरा, गु० कड़ा, कठिन ।

प्रा० बजरङ्ग – (सं० वज्राङ्ग, वज्र+अङ्ग अर्थात् जिसका शरीर वज्रसा कड़ा है) पु० हनूमान् का नाम महावीर ।

प्रा० बजरङ्गी – पु० एक प्रकार का तिलक जो हनुमान् के भक्त निकालते हैं ।

प्रा० बझाना – क्रि० अ० फँसना, उलझना, पकड़ा जाना ।

प्रा० बटखरा - (सं० वण्टक, वण्ट=बांटना) पु० बांट, तौलनेका तौला ।

प्रा० बटन - स्त्री० बुताम, २ समेट, शिकन ।

प्रा० बटना—(सं० बट्=लपटना) क्रि० स० बलदेना, ऐंठना, २ (बट् =बांटना) पाना, ३ क्रि० अ० बांटा जाना, हिस्सा होना।

प्रा० बटपाड़ } (बाट=रस्ता, पा-
बटपार } ड़ना=गिराना, अ-
र्थात् लूटना) पु० लुटेरा, डाकू

प्रा० बटलोही—स्त्री० एक तरहका बरतन जिसमें दाल भात आदि प-काते हैं, बटुवा, भरतिया, पतेली।

प्रा० बटवार—(सं० बट्=बांटना) पु० करउगाहने वाला।

प्रा० बटवारा—(सं० बट्=बांटना) पु० बांट, भाग, अंश।

प्रा० बटाऊ—(बाट) पु० बटोही, मुसा-फ़िर, राही, पथिक, २ बटपार।

प्रा० बटुवा } (सं० बट्=घेरना) पु०
बटवा } कपड़े की एक छोटी
थैली, २ बटलोही।

प्रा० बटेर—(सं० वर्त्तक, वृत्=होना) स्त्री० एक पखेरू का नाम।

प्रा० बटोरना—क्रि० स० इकट्ठाकरना, चुनलेना।

प्रा० बटोही—(बाट) गु० मार्गू, मुसफ़िर, रस्ते चलने वाला।

प्रा० बट्टा—पु० जो कुछ सिक्के के बद-लने के समय दिया जावे, २ कमी, घटी, ३ कलंक, दोष, दाग़, ४गोला (लकड़ी वा पत्थर का) ५ ढेला।

प्रा० बट्टाढाल—गु० बराबर, सपाट।

प्रा० बट्टालगना—बोल० दाग़लगना, कलंक लगना।

प्रा० बड़ } (सं० वट) पु० एक वृक्ष
बर } का नाम जिसकी छाया
गहरी और बड़ी चौड़ी होती है, बरगद।

प्रा० बड़—गु० बड़ा। [वाला।

प्रा० बड़बोला—बोल० शेखी बघारने

प्रा० बड़भकुवा—बोल० मूर्ख।

प्रा० बड़पेटा—बोल० बहुतखानेवाला।

प्रा० बड़ना—क्रि० अ० घुसना, पैठना।

प्रा० बड़बड़ाना—क्रि० स० मुंहही मुंहमें कुछ कहना, कुड़कुड़ाना, बक बक करना।

सं० बड़वा—(बड़=बल, वा=जाना) स्त्री० ब्राह्मणी, सूर्य की स्त्री जिससे अश्विनीकुमार हुए हैं, कुंभदासी, अश्विनी, घोड़ी।

सं० बड़वाकृत } पु० दासीपुत्र,
बड़वाहृत } भक्तदास।

सं० बड़वामुख—पु० समुद्रकाकाला नल, समुद्राग्नि।

सं० बड़वाग्नि } (बड़वा=घोड़ी,
बड़वानल } अग्नि वा अनल=
आग) स्त्री० समुद्र के भीतर की

आग जो घोड़ी के मुंह से निकलती है (हिंदुओं के शास्त्र अनुसार) ।

प्रा० बड़हल—पु० एक फल का नाम ।

प्रा० बड़ा } बरा } (सं० वटक, वट्=विभाग करना, वा घेरना) पु० पीसी हुई दाल की टिकिया जिसको घी अथवा तेल में तलकर खाते हैं, चक्र ।

प्रा० बड़ा—(सं० वृद्ध, बल=घेरना) गु० जेठा, प्रधान, मुखिया, बड़ी उमर का, महा ।

प्रा० बड़ाकरना—बोल० बढ़ाना, २ चिराग़ को बुझा देना । [बात ।

प्रा० बड़ाबोल—बोल० घमण्ड की

प्रा० बड़ेबोलकासिरनीचा—बोल० घमण्ड से खराबी होती है ।

प्रा० बड़ारास्तापकड़ना—बोल० मर जाना, क़ज़ा करना ।

प्रा० बड़ेपेटवालाहोना—बोल० संतोषी होना, धीर होना, क्षमावान् होना ।

प्रा० बड़ाई—(सं० वृद्धता) भा० स्त्री० बड़ापन, बड़प्पन, महत्त्व, २ सराह, स्तुति, प्रशंसा, ३ घमंड, अभिमान ।

प्रा० बड़ाईकरना } बड़ाईमारना } बोल० सराहना, प्रशंसा करना, स्तुति करना, २ घमण्ड करना, शेखी बघारना, डींग मारना, लंबी चौड़ी हांकना, अपनी सराहना करना ।

प्रा० बड़ाईदेना—बोल० आदर देना, इज्जत देना ।

प्रा० बड़ी—(सं० वटी) स्त्री० एक तरह की खाने की चीज जो दाल की बनती है और उसकी तरकारी की जाती है २ (बड़ा) बड़ी उमर की स्त्री, ३ गु० बड़ा शब्द का स्त्रीलिंग ।

प्रा० बड़ीबातनहीं — बोल० कुछ कठिन नहीं ।

प्रा० बढ़ई—(सं० वर्द्धकि, वृध्=बढ़ाना) पु० खाती, सुतार, मिस्तरी ।

प्रा० बढ़ती } बढ़ंती } (सं० वृद्धता, वृध्=बढ़ना) स्त्री० अधिकाई वृद्धि, सम्पदा का बढ़ना, तरक्की, उन्नति ।

प्रा० बढ़ना—(सं० वर्द्धन, वृध्=बढ़ना) क्रि० अ० अधिक होना, बहुत होना, ऊंचा होना, २ आगे चलना ।

प्रा० बढ़चलना—बोल० ढीठ होना, अभिमानी होना ।

प्रा० बढ़जाना—बोल० अन्दाज से बाहर हो जाना ।

प्रा० बढ़नी—स्त्री० झाड़ू, बुहारी ।

प्रा० बढ़ाना—क्रि० स० अधिक करना, बहुत करना, बड़ा करना, २ ऊंचा करना, लम्बा करना, ३ आगे

लाना, ४ उठा लेजाना, अलग करदेना, ५ बन्द करना (हूं कानको)।

प्रा० बढ़ाव-(बढ़ना) भा०पु०बढ़ती, अधिकाई, २ चढ़ाव, उभार।

प्रा० बढ़ावा-(बढ़ाना) पु०खुशामद, तारीफ़, बड़ाई, २ उभार।

प्रा० बढ़िया-(बढ़ना) गु० बहुत मोलका, महँगा, बहुमूल्य।

सं० बणिक्-(पण्=लेनदेन करना) पु० बनियां महाजन, ब्योपारी, सौदागर।

सं० बणिक्पथ-पु०हट्ट,हाट,बाजार।

प्रा० बणिज-(सं० बाणिज्य) पु० ब्योपार, लेन देन, सौदागरी।

प्रा० बणिया } (सं०बणिक्) पु०
बनिया } महाजन, ब्योपारी, वैश्य, सौदागर, दूकानदार।

प्रा० बत-बात, क़ौल।

प्रा० बतबढ़ाव-बोल०बात बढ़ाना।

प्रा० बतबना-बोल० बातूनी, बात बतानेवाला।

प्रा० बतक-(अ० बतक) स्त्री० एक जल का जीव।

प्रा० बतकहाव,पु० } (सं० बा-
बतकही,स्त्री० } र्ता, कथन) बातचीत।

प्रा० बतकड़-गु० बकी, बातूनी, बाचाल, गपौड़िया।

प्रा० बतराना-(सं० बार्ता) क्रि० अ० बतियाना, बातचीत करना।

प्रा०बतलाना } (सं० वद्=कह-
बताना } ना) क्रि० स० जताना, चिताना, सुझाना, बुझाना, दिखाना, सिखलाना, समझाना, संकेत करना, इशारा करना, व्याख्या करना, अर्थ करना।

प्रा० बतास-(सं० बात स्त्री० हवा, पवन, बाव, बयार, वायु।

प्रा० बतासा } (बतास,हवा) पु०
बताशा } एक तरहकी मिठाई, २ बुलबुला।

प्रा० बत्ती (सं० वर्त्ति, वृत्=होना) स्त्री० बाती, २ पलीता, ३ बांस आदि की छड़, ४ लाख की डंडी, ५ पगड़ी जिसको सिपाही लपेट कर गोलकर लेतेहैं।

प्रा० बत्तीजलाना-बोल० चिराग़ जलाना, दीया जलाना।

प्रा० बत्तीचढ़ाना-बोल० घाव में बत्ती डालना।

प्रा० बत्तीस-(सं० द्वात्रिंशत्) गु० तीस और दो।

प्रा० बत्तीसी स्त्री० दांतों की लड़ी, सब दांत,-बत्तीसी दिखाना-बोल० दांत दिखाना, हँसना।

प्रा० बत्तीसी-स्त्री० बत्तीस सुपारी

और बत्तीस छुहारा और रुपया जो दुलहा दुलहन के ननिहाल को जाता है उसे बत्तीसी कहते हैं ।

प्रा० बथुवा—(सं० वास्तूक) पु० एक तरह का साग ।

प्रा० बदना—(सं० बदन, वद्=कहना) क्रि० स० दांव लगाना, मानना, २ रचना, भाग में लिखा जाना ।

सं० बदर—(वद्=कहना) पु० बेर का वृक्ष, बिनौला, कपासबीज ।

सं० बदरि—(बद्=दृढ़ होना) पु० बेर, एक फल का नाम ।

सं० बदरिकाश्रम—(बदरिका+आश्रम) पु० बदरिनाथ, बदरिनाथ का पहाड़ ।

प्रा० बदलना—(अ० बदल) क्रि० स० पलटना बदला करना, उलटना, और तरह से बना देना ।

प्रा० बदली—(बादल) स्त्री० बादल, मेघ ।

प्रा० बदली—(बदलना) स्त्री० तबदीली, एक जगहसे दूसरी जगह जाना ।

प्रा० बदा—(सं० वद्=कहना) गु० होनहार, भवितव्य ।

सं० बदि, बदी—स्त्री० अँधेरा पाख, कृष्णपक्ष, महीने का पहिला पक्ष ।

प्रा० बदल—(सं० वारिद) पु० बादल, मेघ, घटा ।

सं० बद्ध—(बन्ध्=बांधना) क्र्म० पु० बांधा हुआ, रुका हुआ, दृढ़, रचित, वृत्तभेद ।

सं० बध—(बध्=मारना) पु० मारन, हिंसा, हत्या, हनना ।

प्रा० बधना—(सं० बधन, बध्=मारना) क्रि० स० मारडालना ।

प्रा० बधना, बदना—पु० लोटे ऐसा एक मिट्टी का छोटा बरतन ।

प्रा० बधाई, स्त्री०, बधावा, पु०—मंगलाचार, आनन्दमङ्गल, आनन्द के गीत, जयजयकार मुबारकबादी, खुशी का बाजा ।

सं० बधक, बधिक, बधी—(बध्=मारना) क० पु० शिकारी, बहेलिया, आखेटी, मारनेवाला ।

सं० बधनीय—(बध्=अनीय) क्र्म० पु० मारनेयोग्य ।

प्रा० बधिया—(सं० बंध्=बांधना) पु० नपुंसक बैल, आख़ता ।

सं० बधिर—(बन्ध्=बन्ध होना अर्थात् जिसकी सुनने की इन्द्रिय बँधी हुई हो) गु० बहरा, कनफूटा ।

सं० बधू—(बन्ध्=बांधना, वा वह्=लेजाना) स्त्री० बहू, लड़केकी स्त्री, २ भार्या, पत्नी, जोरू, स्त्री—कुलबधू=उत्तम घराने की स्त्री,—देव-

बधू=देवी, देवता की स्त्री ।

सं० बधूटी—(बधू) स्त्री० बहू स्त्री, पत्नी, भार्या, जोरू, २लड़के की स्त्री ।

सं० बध्य—(बध्=मारना) वि० पु० मारने योग्य ।

सं० बध्यस्थान—धि० फांसी देने की जगह, बधभूमि ।

प्रा० बन—(सं० वन) पु० जंगल, आपसे उगे वृक्ष ।

प्रा० बनजात्रा—(सं० वनयात्रा) स्त्री० व्रजके ८४ बन की यात्रा ।

प्रा० बनज }
बनिज } (सं०वाणिज्य) पु० ब्योपार, लेन देन, सौदागरी ।

प्रा० बनजर—(सं० बन्ध्या) स्त्री० पड़ती धरती. ऊपर, वह धरती जिसमें कुछ नहीं उपज सक्ता ।

प्रा० बनजारा—(सं०वणिज्) पु० जो नाज आदि वणिज्की चीजों को बैलों पर लाद कर ले जाते हैं ।

प्रा० बनठनके—क्रि० पु० सज धज के, सिंगार करके ।

प्रा० बनत—स्त्री० गोटा किनारी का काम ।

प्रा० बनमानुप—(सं० बनमानुप) पु० एक जानवर जिसका डील डौल आदमी का सा होता है, २ जंगली, बनवासी ।

प्रा० बनमाल—(सं०बनमाला) स्त्री० फूलों की माला जो पैरों तक लंबी बनाई जाती है और बहुत बार तुलसी, कुन्द, मंदार, पारिजात और कमल के फूलों से बनती है ।

प्रा० बनरा }
बना } पु० दुलहा, वर ।

प्रा० बनरी }
बनी } स्त्री० दुलहिन ।

प्रा० बनसी—(सं० बडिश) स्त्री० मछली पकड़ने का कांटा, २ (सं० वंशी) मुरली, बांसुरी ।

प्रा० बनात—स्त्री० ऊनी कपड़ा जो दलदार मोटा होताहै ।

प्रा०बनाना—क्रि० स० रचना करना, तैयार करना, निर्माण करना, २ठीक करना, ३ उठाना (जैसे मकान, दीवार आदि) ४ इकट्ठा रखना, मिलाना, ५ ग्रंथ रचना, ६सँवारना, सिंगारना, ७मेल कराना, मिलाना, मनाना, ८ पकाना, ९ सुधारना, मरम्मत करना, १० निकालना, ११ शुद्ध करना, १२ खिजलाना, चिढ़ाना, ठट्ठा करना, चुहल करना, १३ सिरजना, पैदा करना, १४ पूरा करना, १५ शरमाना, लजाना, १६ फबती कहना ।

प्रा० बनाव—(बनाना) भा० पु० सिंगार, सँवार, २ मेल, मिलाप—

बनाव करना, बोल० सँवारना, सिंगार करना।

प्रा० बनावट—(बनाना) भा० स्त्री० डौल, २ रचना, ३ कल्पना, झूठा दिखावट।

प्रा०बनिक—(सं०वणिक्)पु०बनिया, महाजन, ब्यौपारी, सौदागर।

प्रा०बनेला }
बनैला } (सं०वन्य)गु०जङ्गली।

प्रा०बनैटी } स्त्री० एक लकड़ी जिसबनेटी } के दोनों ओर मशाल बांध कर गोल गोल फिराते हैं जिससे आग का दोहरा चक्कर बनजाता है।

सं०बन्ध-(बन्ध्=बांधना) पु० बांधना, २ गांठ, पट्टी, ३ क़ैद।

प्रा० बन्धमेंपड़ना या आना—बोल०क़ैदी होना, क़ैद में आना।

सं०बन्धक-(बन्ध्=बांधना) पु० धरोहर, थाती, गिरों, २बांधना, क़ैद।

सं०बन्धकदाता-(बन्धक=ऋण, दाता=देनेवाला, दा=देना) कृ० पु०राहिन।

सं०बन्धकधारी—कृ०पु०मुरतहिन।

सं०बन्धनपत्र-रेहननामा।

सं०बन्धनालय-(बन्धन+आलय)धि०पु० क़ैदख़ाना।

सं०बन्धन-(बन्ध्=बांधना) पु० बांधना, २ गांठ, ३ क़ैद, ४ रोक, रुकाव, ५ लगाव, जुड़ाव।

प्रा०बन्धना (सं० बन्धन) क्रि० अ० बंध होना, रुकना, अटकना, २ गिरह लगना, जोड़ा जाना।

सं०बन्धान-भा० पु० रोज़ाना, वज़ीफ़ा।

सं०बन्धित (बन्ध्+इत) कर्म० पु० बांधागया, मुक़य्यद।

सं०बन्धु-(बन्ध्=बांधना, जो स्नेह से आपस में अपने मनों को बांधते हैं) पु० भाई, सगोत्र, नातेदार, नतैत, मित्र, सखा।

प्रा०बन्धुआ-पु०क़ैदी।

सं०बन्धूक-(बन्ध्=बांधना) पु० एक तरह का लालफूल गुलदुपहरिया, लालबूटी, लालछीट।

सं०बन्धुर पु०मुकुर, तिलकल्क, बधिर, हंस, विरंड, विहङ्ग, गु०रम्य, नम्र, ऊंचनीच, स्त्री० बेश्या, सत्त।

सं०बन्धुल—पु०असतीपुत्र, गु०रम्य, सुन्दर, नम्र।

प्रा०बन्धेज—(सं०बन्ध्=बांधना) पु० किफ़ायत, कमख़र्ची, २ दृढ़ता, ३ रोज़ीना, वज़ीफ़ा।

सं०बन्ध्या—(बन्ध्=बांधना) स्त्री० बांझ स्त्री, अपुत्रवती।

प्रा०बन्ना }
बनना } क्रि० अ० होना, तैयार होना, २ सुधरना,

मरम्मतहोना, ठीकहोना, ३ सफल होना, सिद्धहोना, बन पड़ना ।

प्रा० बनआना—बोल० हो सकना, २ भाग जागना, क़िस्मत खुलना ।

प्रा० बनजाना—बोल० होजाना, सम्हल जाना ।

प्रा० बनपड़ना—बोल० सुधारना, भलाहोना, बनना, होसकना, सफलहोना, सिद्ध होना ।

प्रा० बनबनकरबिगड़ना- बोल० तैयार होकर खराब होजाना ।

प्रा० बनाचुना-बोल० सँवाराहुआ, सिंगाराहुआ, सजाहुआ ।

प्रा० बन्नाठन्ना—बोल० खूब सिंगार करना, आरास्ता होना ।

प्रा० बनाबनाया—बोल० तैयार, पूरा, सिद्ध, कामिल ।

प्रा० बनारहना- बोल०ठहरारहना, क़ायमरहना । [कंगाल ।

प्रा० बपुरा-गु० बेबश, अनाथ, दीन,

प्रा० बपौती—(बाप) स्त्री० पैतृक धन, विरासत, बाप की द्रव्य ।

प्रा० बफारा—(सं० बाष्प=भाफ़) पु० भाफ़ ।

प्रा० बफारालेना—बोल० भाफ़को बन्द करके शरीर में जाने देना ।

प्रा० बबूर } **बबूल** } (सं० बर्बुर) पु० एक कँटीले वृक्षका नाम ।

सं० बभ्र—पु० गमन, चाल, मर्य्यादा, गु० चलनेवाला । (सुखदायी ।

सं० बभ्रिक—पु० पालक, रक्षक,

सं० बभ्रु—(बभ्र=गमन करना) पु० शिव, विष्णु, नकुल, न्योला, वह्नि, मुनिभेद, देशभेद, गु० धूसरवर्ण, पीतवर्ण, सुन्दर ।

सं० बभ्रुधातु-पु० सोना, धतूरा, गेरू ।

प्रा० बया—(सं०वयस्, अज्=जाना) पु० एक पखेरू जो सिखलानेसे स्त्रियों की टिकुली उतार लाता है ।

प्रा० बयार—(सं० वायु) स्त्री० हवा, पवन, बाव, बतास, वायु, बयार ।

प्रा० बयालीस-(सं० द्विचत्वारिंशत्) गु० चालीस और दो ।

प्रा० बयासी-(सं०द्व्यशीति, द्वि=दो, अशीति=अस्सी)गु०अस्सी और दो ।

प्रा० बर—(सं०वर, वृ=पसन्द करना) पु० बरदान, आशिष, चाही हुई चीज़, २ पति, स्वामी, दुल्हा, २ जँवाई, गु० सबसे अच्छा, श्रेष्ठ, उम्दा ।

प्रा० बरखना } **बरसना** } (सं० वर्षण, वृष्=बरसना) क्रि० अ० पानी पड़ना, मेह गिरना, वर्षाहोना ।

प्रा० बरजना—(सं० वर्जन, वृज्=छोड़ना) क्रि० स० रोकना,

मनअ करना, निषेध करना ।

सं० बरट—पु० हंस, बर्र, भिड़ ।

प्रा० बरत -(सं० व्रत) पु० उपास, उपवास, रोज़ा ।

प्रा० बरतन, बर्तन—पु० बासन, पात्र, भांड़ा ।

प्रा० बरतना, बर्तना—क्रि० स० काममें लाना, इस्तअमाल करना ।

सं० बरदान (बर=चाही हुई चीज, दा=देना) पु० आशिष, दुआ ।

प्रा० बरध -(सं० बलीवर्द) पु० बैल ।

प्रा० बरन (सं० वरम्) समुच्च० बल्कि, २ (वर्ण शब्द को देखो) ।

प्रा० बरनन (सं० वर्णन) पु० बखान, बयान, २ सराह, स्तुति ।

प्रा० बरननकरना, बरनना—क्रि० स० बखान करना, बयान करना, सराहना ।

प्रा० बरना-(सं० वृ=पसन्द करना) क्रि० स० ब्याह करना, विवाहकरना, शादी करना ।

प्रा० बरबरी (बार बैरी Bar bary एक जगह आफ़्रिका में है वहां की बकरी मोटी और बड़ी होती है) स्त्री० एक तरह की बकरी ।

प्रा० बरबस, पु०, बरयाई, स्त्री०—बरजोरी, जोरावरी, बल, जोर, बड़ाई, क्रि० वि० ज़ोरावरी से, जबरदस्ती से, हठसे ।

प्रा० बरमा, बर्मा—पु० बढ़इयों का एक औज़ार जिससे लकड़ी छेदते हैं ।

प्रा० बरराना- क्रि० स० नींदमें कुछ कहना ।

प्रा० बरवा—पु० एक छन्दका नाम, २ एक रागिणी का नाम । [संवत् ।

प्रा० बरस—(सं० वर्ष) पु० साल,

प्रा० बरसगांठ-(सं० वर्षग्रन्थि, वर्ष=साल, ग्रन्थि=गांठ) स्त्री० सालगिरह, जन्मदिन ।

प्रा० बरसौंढ़ी—(सं० वार्षिक) स्त्री० सालियाना महसूल, बरस का कर ।

प्रा० बरहा-पु० गायों के चरने का खेत चरागाह, २ खेतमें पानी लेजानेकी राह ।

प्रा० बरही-पु० मोर, मयूर ।

प्रा० बरात-(सं० व्रात, वृ=पसन्द करना) स्त्री० दूल्हे की सवारी की धूमधाम ।

प्रा० बराना—क्रि० स० बचाना, दूर हांकना, हरादेना, हटादेना ।

प्रा० बराह—(सं० वराह, वर=हित अर्थात् अपने हितकेलिये और आ + हन्= मारना, या खोदना अर्थात् अपने खाने की चीज ढूंढ़ने में जो जमीन को खोदता है) पु० सुअर, शूकर, २ विष्णु का तीसरा अवतार ।

प्रा० बरिबण्ड—पु० बलवान्, तेजस्वी, जोरावर, २ दुष्ट, बद ।

प्रा० बरी—(बर) स्त्री वह कपड़ोंका जोड़ा जो दुलहाके घर से दुलहिन को भेजा जाता है, २ (वटी)बड़ी।

प्रा० बरु-(सं० वर) क्रि० वि० चाहे, परन्तु, लेकिन, भला, अच्छा।

प्रा० बरुण—(सं० वरुण,वृ=घेरना,वा पसन्द करना) पु० पानी का देवता और पश्चिम दिशा का दिक्पाल।

सं० वरुणालय- (वरुण+आलय) वि० पु० समुद्र, सागर।

प्रा० बरुणी—(सं० वरुणी, वृ=ढकना) स्त्री० पपनी, आंख परके बाल, बिन्नी, मिज़गां।

प्रा० बर्छी—स्त्री० सांग, सेल।

प्रा० बर्बर-(वर्ब=जाना) गु० मूर्ख, जंगली, हबशी, बक्की, चर्बज़बान।

प्रा० बर्ष—(सं०वर्ष,वृष्=बरसना, या पैदाहोना) पु० साल,बरस,संवत्।

प्रा० बर्षा
बर्खा } (सं० वर्षा, वृष्=बरसना) स्त्री० बरसात, मेह, २ वर्षाऋतु।

प्रा० बर्सात –(सं० वर्षा) स्त्री०वर्षाऋतु, चतुर्मास) पावसऋतु, वर्षाकाल, ऐयाम बारिश।

प्रा० बर्सी—(बरस) स्त्री० बरसवें दिन का श्राद्ध।

सं० बर्ह –पु०मोरपंख,२ पल्लव,पत्ता।

सं० बल–(बल्=जीना) पु० जोर, शक्ति, सामर्थ्य, २ बलदेवजी का नाम, ३ सेना, ४ स्थूलता, मुटाई, ५ गन्धरस, ६ रूप, ७ शुक्र, बीज, वरुण वृत्त, ८दैत्यभेद, ९काकपत्ती।

प्रा० बल—(सं० बलि) स्त्री० बलि, बलिदान, चढ़ावा।

प्रा०बल—स्त्री० ऐंठ, मरोड़, बट।

प्रा० बलखाना—बोल० ऐंठजाना, क्रोध करना, गुस्सा करना।

सं० बलज—पु० खेत्र, पुरद्वार, अन्न, संग्राम, दर्पण, शीशा, स्त्री० पृथ्वी, श्रेष्ठा स्त्री, जाही जूही।

प्रा०बलदेना-बोल०मरोड़ना,ऐंठना।

प्रा०बलबे—बोल० शाबाश,वाहवाह।

प्रा० बलजाना
बलबलजाना } बोल० बलिहारीजाना, निछावरि होना।

प्रा०बलदेना
बलकरना } बोल० बलिदान करना, कुर्बानीकरना।

प्रा० बलदाऊ–(सं० बलदेव) पु० श्रीकृष्ण का बड़ा भाई।

सं० बलदेव–(बल+देव) पु०श्रीकृष्ण का बड़ा भाई।

प्रा० बलना
बरना } क्रि० अ० जलना।

सं० बलनिधि (बल+निधि) गु० बलवान्, बहुत बली, जोरावर।

सं० बलभद्र–(बल+भद्र) पु०

बलराम, श्रीकृष्ण का बड़ा भाई ।

सं० बलराम—(बल=ज़ोर, रम्= खेलना) पु० बलदेव, शेषजी का अवतार और श्रीकृष्णका बड़ा भाई ।

सं० बलवत्—गु० बलयुक्त, बली, पुष्ट, मल्ल, बलवान् ।

सं० बलवन्त / बलवान् }(बल=ज़ोर, वत्= वाला) गु० ज़ोरावर, बली, सामर्थी ।

सं० बलबीर—(बल=बलदेव जी, बीर=भाई) पु० श्रीकृष्णकानाम ।

प्रा० बलवा—पु० दंगा, झगड़ा, फ़साद, बग़ावत ।

सं० बलानुज—(बल=बलभद्र, अनुज=छोटा भाई) पु० श्रीकृष्ण ।

सं० बलाराति—(बल=असुर, आराति=शत्रु) पु० इन्द्र, देवराज ।

सं० बलाका—स्त्री० बकपंक्ति, बगुलाओं की क़तार ।

सं० बलात्—अव्यय०, हठात् ।

सं० बलात्कार—पु० हठ, बरजोरी, ज़बरदस्ती ।

सं० बलाहक—(बलाह=पानी, बल= जाना वा घेरना, अर्थात् जिसमें पानीहो अथवा बल=कंपन हा=छोड़ना) पु० बादल, बद्दल, मेघ घन ।

सं० बलि—(बल्=जीना) पु० एक राजा का नाम जिसको विष्णु भगवान् ने वामनावतार लेके पातालमें भेज दिया, २ नैवेद्य, देवता का भोग, भेंट, कुर्बानी ।

सं० बलिदान—(बलि+दान) पु० देवता के सामने बकरा आदि पशु को मारके चढ़ाना, देवता के लिये भोग, नैवेद्य ।

सं० बलिसद्म—पु० अंकुश, चाबुक, कोड़ा, बन्दरों का समूह ।

सं० बलिष्ठ—गु० बड़ा बलवाला ।

प्रा० बलिहारी—(सं० बलि) स्त्री० निछावर, तसद्दुक़, क़ुर्बान जाना ।

प्रा० बलिहारीजाना—बोल० निछावर होना, बलजाना, बलबलजाना ।

सं० बली—(बल) गु० ज़ोरावर, बलवान्, पराक्रमी ।

सं० बलीवर्द—पु० साण्ड, सांड़ ।

सं० बलीमुख / बलिमुख }(बली वा बलि= ढीला चमड़ा, बल्= हिलना वा घेरना) मुख=मुहँ, अर्थात् जिसके मुहँ पर का चमड़ा ढीला हो) पु० वानर, बन्दर, कपि, मर्कट ।

सं० बलीयस् / बलीयान् } गु० अत्यन्तबली, बड़ा ज़ोरावर ।

प्रा० बलुवा—(बालू) गु० बालुका, बालूमय, रेतला, करकरा । [नेज़ा ।

प्रा० बल्लम—पु० भाला, सेल, बर्छी,

प्रा० बल्ली—स्त्री० नाव का डंडा, लग्गी, बल्ली मारना, बोल० नाव चलाना ।

प्रा० बवासीर—पु० अर्शरोग, गुदा

में मस्सों का रोग ।

प्रा० बस - (सं० वश्,वश्=चाहना) पु० क़ाबू, बल, ज़ोर, २ अधिकार, गु० आधीन,—वश करना, बोल० आधीन करना, दबाना,—वश में आना,क़ाबूमेंआना,आधीन होना ।

फ़ा० बस–(بس) गु० बहुत, पूरा, बहुतेरा,-चुपबसकरना, बोल० ठहरना, करचुकना ।

प्रा० बसन–(सं० वसन, वस्=पहनना) पु०कपड़ा,जोड़ा,वस्त्र,लूगा।

प्रा०बसना-(सं० वसन, वस्=रहना) क्रि० अ० रहना, टिकना, बासा करना, आबाद होना, घरबनाना ।

प्रा० बसन्त-(सं० वसन्त, वस्=रहना या सुगन्ध आना) स्त्री० एक ऋतु का नाम जो चैत और कुछ वैशाख के महीने तक रहती है, २ एक राग का नाम,—बसन्त फूलना, बोल० सरसों के फूलों का खिलना,—आंखों में वसन्त फूलना, बोल० तिरमिराना—बसन्त के घरकी भी खबर है,—कहावत यह जानते भी हो क्या होरहा है ।

प्रा० बसन्ती–(बसन्त) पु० एक प्रकार का पीलारंग, गु० पीला।

प्रा० बसाना–(बसना) क्रि० स० आबाद करना, बस्ती कराना, आदमियों से भरना, २ (वस्=सुगन्धित होना) सुगन्धित करना ।

प्रा० बसूला-पु० वह औज़ार जिस से बढ़ई लकड़ी छीलते हैं ।

प्रा० बसेरा-(सं० वास) पु० बासा, रहने की जगह, पखेरू का घोंसला अथवा अड्डा, पखेरू के रातको रहने का बासा ।

प्रा० बसुदेव-(सं० वसुदेव, वसु=धन दिव=चमकना) श्रीकृष्ण का बाप और शूरसेन का बेटा ।

प्रा० बस्ती–(सं०वसती,वस्=रहना) स्त्री० छोटा गांव, आबादी ।

प्रा० बस्त, बस्तु } (सं० वस्तु, वस्=रहना या ढकना) स्त्री० चीज़, पदार्थ ।

प्रा०बस्त्र-(सं० वस्त्र, वस्=पहनना) पु० कपड़ा, लूगा, बसन ।

प्रा० बहकना-क्रि०स० धोखा खाना, २ नशेमें कुछ कहना, ३ नींदमें कुछ बोलना, ४ बढ़के कहना ।

प्रा०बहकाना-क्रि० स० धोखा देना, भुलाना । [कांवरि ।

प्रा० बहँगी–(सं० विहंगी) स्त्री०

प्रा० बहत्तर–(सं० द्विसप्तति) गु० सत्तर और दो ।

प्रा० बहधा–(सं० बाधा) पु० दुःख, आपदा, २ रुकाव ।

प्रा० बहन, बहिन } (सं० भगिनी) स्त्री० माकी बेटी, सहोदर, २ सखि, बहना ।

प्रा० बहना—(सं०वह्=बहना या ले जाना) क्रि०अ० चलना, पानीका जारी होना, २ हवाका चलना।

प्रा० बहतेपानीमेंहाथधोना—कहावत—जबतक अपना काम बना रहे तबतक अच्छा काम करलेना।

प्रा० बहनेऊ, बहनोई—(सं०भगिनीपति) पु० बहिन का पति।

प्रा० बहरा, बहिरा—(सं० बधिर) गु० वह आदमी जिसके सुनने की इन्द्री खराब होगई हो, कनफूटा।

प्रा० बहल, बहली—स्त्री० एक तरह की गाड़ी।

प्रा० बहलाना-क्रि०स०प्रसन्नकरना, २ भुलाना, बहकाना, किसी बात में लगा रखना। [नुधीरी।

प्रा० बहेलिया—पु० शिकारी, ध-

प्रा० बहाना—(बहना) क्रि० स० चलाना, पानी जारी करना, २ पु० छल, कपट, हीला। [करना।

प्रा० बहादेना-बोल०उजाड़ना, नाश

प्रा० बहाफिरना—बोल० भटकता फिरना, इधरउधर फिरना।

प्रा० बहाव-(बहना) भा०पु०पानीका जारी होना, बाढ़, चढाव।

प्रा० बहिर्मुख-(सं०बहिर=बाहर, मुख =मुँह)गु०धर्मविमुख, अधर्मी, पापी।

प्रा० बही—स्त्री० महाजनों के हिसाव रखने की किताब जो एक किनारे की ओर सीं जाती है।

प्रा० बहीर, बहीड़—स्त्री० सेनाकी सामग्री, डेराडण्डाआदि।

सं० बहु—(बहि=बढ़ना) गु० बहुत, ढेर, बड़ा, अधिक।

प्रा० बहुत—(बहु) गु० अधिक।

प्रा० बहुतगई थोड़ीरही—बोल० उमर पूरी हो चुकी है।

प्रा० बहुतात, बहुतायत—(सं०बहुता) स्त्री० अधिकाई।

सं० बहुतिथ—गु० बहुत दिन, बहुत बेर, अनेकबार, अनेक, बहुत।

प्रा० बहुतेरा—(सं० बहुतर) गु० बहुतसा, बहुतही बहुत।

सं०बहुधा—(बहु=बहुत, धा=प्रकार) क्रि० वि० बहुत प्रकारसे बहुत भांति से, बहुत बार, अकसर।

सं० बहुबाहु—(बहु=बहुत, बाहु= भुजा)पु०रावण व सहस्त्रबाहु आदि।

सं० बहुमूल्य—(बहु=बहुत, मूल्य= मोल)गु०बहुत मोलका, बढ़िया, महँगा।

प्रा०बहुरि, बहोरी—समुच०फिर, पुनि, और।

प्रा० बहुरूपिया—(सं० बहुरूपी) पु० भांड़, स्वांगी।

सं० बहुवचन—(बहु+वचन) पु० बहुत को जतलानेवाला, बहुतबातें।

सं० बहुल—गु० प्रचुर, बहुत, पु०

कृष्णवर्ण, अग्नि, आकाश ।

सं०बहुलगंधा-स्त्री०एला, इलायची।

सं० बहुविधि-(बहु=बहुत, विधि=प्रकार) क्रि० वि० बहुत प्रकार से, अनेक भांति से ।

सं० बहुश्रुत-(श्रु=सुनना) गु० पण्डित, विद्वान्, शास्त्री ।

प्रा०बहू-(सं० बधू) स्त्री० दुलहिन, भार्या, जोरू, २पतोहू, बेटेकीदुलहिन।

प्रा० बांक-(सं० वङ्क, वकि=टेढ़ा होना) स्त्री० टेढ़ापन, तिर्छापन, २ झुकाव, ३ नदी का घुमाव, ४ दोष, अपराध, दुष्टता, ५ एक गहने का नाम जो बाजू पर पहनते हैं ६ एक शस्त्र का नाम जो कटार के ऐसा होता है ।

प्रा० बांका, बांकुरा } (सं० वङ्क) गु० टेढ़ा, तिर्छा, २ बहादुर, वीर ३ छैला, अकड़ैत, अकड़बेग ।

प्रा०बांचना-(सं०वचन, वच्=बोलना) क्रि०स० पढ़ना, पाठकरना, वंचना।

प्रा० बांचना-क्रि० अ० बचना, जीता रहना ।

प्रा० बांछा-(सं० वाञ्छा) स्त्री० इच्छा, चाह, अभिलाषा ।

प्रा० बाञ्छित-(सं० वाञ्छित) गु० चाहा हुआ, इच्छित ।

प्रा० बांझ-(सं० बन्ध्या) स्त्री०वह स्त्री जिसको लड़काबालानहोताहो।

प्रा० बांट (सं० वण्टक, वटि=बांटना) पु० भाग, हिस्सा, अंश, २ बटखरा, ३ गाय भैंस का दूहते समय का खाना ।

प्रा० बांटना-(सं० वण्टन, वटि=हिस्सा करना) क्रि० स० हिस्सा करना, भाग देना ।

प्रा० बांड़ा-(सं० वण्ड, वडि=काटना) गु०पूंछकटा, बेपूंछ, २ बेशरम, निर्लज्ज ।

प्रा० बांदी-स्त्री०लौंडी, दासी, चेरी ।

प्रा०बांध-(सं० बन्ध) पु० पानीकी रोक, तालाबकी पाल, मेंड़बन्ध, आड़।

प्रा० बांधना-(सं० बन्धन) क्रि० स० जकड़ना, कसना, २ बन्ध करना, ३ पानी रोकना, ४ ठहराना, थामना, ५ लपेटना, ६ गांठ देना, गिरह देना ।

प्रा० बांधनू-(सं० बन्ध्=बांधना) पु० एक तरह का रंगना जिसमें कपड़े को बहुत सी जगह बांध कर के रंग चढ़ाते हैं कि हर एक रंग जुदा २ दिखलाईदे ।

प्रा०बांस-(सं० वंश) पु० एक पेड़ जिसकी लकड़ी पोली होतीहै ।

प्रा० बांसपरचढ़ना-बोल० कलङ्की होना, बदनाम होना ।

प्रा० बांसफोड़-पु० बांस चीरकर टोकरी आदि बनाने वाला ।

प्रा० बांसरी, बांसली, बांसुरी } (सं० वंशी) स्त्री० मुरली, वंशी, वेणु

प्रा० बांह (सं० बाहु) स्त्री० भुजा, बाजू, २ आस्तीन ।

प्रा० बांहटूटना-बोल० कोई सहायक न रहना ।

प्रा० बांहचढ़ाना-बोल० लड़ाई को तैयार होना ।

प्रा० बांहदेना-बोल० सहायता देना, मदद करना ।

प्रा० बांहपकड़ना-बोल० सहायता करना, पक्षकरना, आश्रयदेना ।

प्रा० बांहबल-बोल० सहायक, साथी, हिमायती ।

[करना ।

प्रा० बांहगहना-बोल० सहायता

प्रा० बांहगहेकीलाज-गु० जिसको सहायता करे उसको छोड़ना बड़ी लाज की बात है ।

प्रा० बाई-स्त्री० महारानी, (मरहठों में) २ कंचनी ।

प्रा० बाई-(सं० वायु) स्त्री० हवा, बादी, बात रोग ।

प्रा० बाई पचना-कहावत—शेखी उतरना, दबजाना, उदास होना ।

प्रा० बाईमेंभड़कना-बोल० बढ़ बढ़ाना, बकना ।

प्रा० बाईस-(सं० द्वाविंशति) गु० बीस और दो ।

प्रा० बाखर, बाखल } पु० आंगन, चौक, अँगनाई, कई एक घर जो एक हाते में होते हैं ।

प्रा० बाग, बागुरु } स्त्री० बागडोर, लगाम, फंदा, जाल ।

प्रा० बागमोड़ना-बोल० शीतलाका ढल जाना ।

प्रा० बागछूटना-बोल० बेबशहोना, वश में न रहना ।

प्रा० बागडोर-स्त्री० वह रस्सी जिस को लगाम में लगा कर साईस घोड़े को ले चलता है ।

प्रा० बागा-(सं० वस्त्र) पु० जोड़ा, पहनने के बहुत अच्छे कपड़े, खिलअत ।

प्रा० बाघ, बाघा } (सं० व्याघ्र) पु० नाहर, शेर ।

प्रा० बाघम्बर-(सं० व्याघ्राम्बर) पु० बाघकी खाल, शेर की पोस्त ।

प्रा० बाछना-(सं० वाञ्छ=चाहना) क्रि० स० छांटना, चुनना ।

प्रा० बाजन, बाजा } (सं० वाद्य) पु० बजाने का यंत्र, जो चीज बजाने के लिये बनाई जाय,—बाजा गाजा, बोल० बहुत से बाजाओं की आवाज ।

प्रा० बाजना-(सं० वाद्य, वद्=शब्द करना) क्रि० अ० आवाज निकलना, २ प्रसिद्ध होना ।

प्रा० बाजरा-पु० एक प्रकारका नाज जो मार वाड़ में बहुत पैदाहोताहै ।

फ़ा०बाजू } पु० एक गहना जिसको
बाजूबंद } बाजू पर बांधते हैं, भुजबन्ध ।

प्रा०बाट—(सं०बाट,बट्=घेरना) पु० मार्ग, रस्ता, राह, डगर, पन्थ ।

प्रा०बाटकाटना—बोल०रास्ताचलना, सफ़र तैकरना ।

प्रा०बाटिका—(सं०बाटिका, बट्=घेरना) स्त्री० बाड़ी, फुलवाड़ी बगीचा, उपवन ।

प्रा०बाड़—(सं० बाट, बट्=घेरना) स्त्री० छूरी या तलवार की धार,२ अहाता या घेरा जो कांटोंसे बनाते हैं, ३ सिपाहियों की क़तार ।

प्रा० बाड़उड़ाना—बोल० एकसाथ बन्दूकचलाना,बन्दूकोंकोफ़ैरकरना।

प्रा० बाड़झाड़ना—बोल० बहुत आदमियोंका एकसाथबंदूकदागना।

प्रा०बाड़दिलवाना—बोल० सानपरचढ़ाना,तीखाकरना,तीक्ष्णकरना।

सं०बाड़व—पु०नरक, समुद्रकी अग्नि, स्त्रियों का कान, घोड़ोंका समूह, ब्राह्मण ।

प्रा०बाड़बांधना—बोल० कांटों से खेतको वा किसी जगहको घेरना ।

प्रा०बाड़रखना—बोल० तीखाकरना, सानपर चढ़ाना ।

प्रा० बाड़हीजबखेतको खाय तो रखवालीकौनकरे—कहावत जिस पर भरोसा हो जब वही चुराले तब कोई चीजनहींबचसक्ती ।

प्रा०बाड़ा—(बट्=घेरना) पु० अहाता, घेरा ।

प्रा०बाड़ी—(सं०वाटी, बट्=घेरना) स्त्री० छोटा बाग़, बग़ीचा, उपवन, बगीचेमें घर, बंगाली घरको बाड़ी कहते हैं ।

प्रा०बाढ़—(बाढ़ना) स्त्री० बढ़ती, अधिकाई, नदी के पानीका उमड़ना या अपनी हद से अधिक बढ़ आना ।

प्रा०बाढ़ना—(सं०वृध्=बढ़ना) क्रि० अ० बढ़ना, उमड़ना ।

प्रा०बाण } (सं०बाण, बण्=शब्द
बान } करना)पु०तीर,२ मूंज की बनीहुई रस्सी, विरोचन का पुत्र बाणासुर।

सं०बाणलिंग—पु० बाणासुर ने नर्मदा नदीके तटपर शिवमूर्ति स्थापन की उसको कहते हैं ।

प्रा०बाणि } (सं० वाणि, बण्=
बाणी } शब्द करना) स्त्री० बोली, सरस्वती, उक्ति, बचन ।

सं०बाणिज्य—(पण्=लेनदेन करना) पु० ब्यौपार,बनिज, सौदागरी,लेन देन ।

प्रा०बात—(सं० वार्ता, वृत्=होना) स्त्री० बोल चाल, कथा, समाचार, बोली, कहना, २ विषय, ३ प्रश्न, सवाल,४कारण, सबब, ५ मामला,

६ वृत्तान्त, दशा, अवस्था, ७ हठ।

प्रा० बातउठाना-बोल०बातसहना, बातचलाना।

प्रा० बातकरना-बोल० बोलना, बातचीत करना, कहना।

प्रा० बातकाटना-बोल० दूसरे की बात को रद्द करना।

प्रा०बातकाबतकड़करना-बोल० छोटीसी बातपर बहुतसा बोलना।

प्रा० बातकीबात } बोल० दमभर
बातकीबातमें } में, पलभर में, थोड़ी सी देरमें, झटपट, तुरंत।

प्रा० बातगड़ना-बोल०मतलब की बात करना, झूठी बात बनाना, किसी बातको इसतरह से बनाकर कहना कि दूसरेके मनमें जमजाय।

प्रा० बातचबाना-बोल० बोलते २ चुप रहना, ठहर ठहर करबोलना।

प्रा० बातचलाना-बोल० कुछ कहना, शुरूअकरना। [गुफ्तगू।

प्रा० बातचीत-बोल० बोलचाल,

प्रा० बातटालना-बोल० असल बातका उत्तर न देना, और और बातें करना।

प्रा० बातपरबातयादआतीहै-कहावत० जिस तरह की चर्चा हो उसी तरह की बातें आप से आप याद आजाती हैं।

प्रा० बातपीजाना-बोल० कड़वे बचनसहना, बातको बर्दाश्तकरना।

प्रा० बातफेंकना-बोल० ठट्ठा करना, २ बे सोचे विचारे कोई बात बोलना।

प्रा० बातफेरना-बोल० कहते २ बात का मतलब बदल देना।

प्रा० बातबढ़ाना-बोल० वाद करना, तकरार करना २ किसी बात को खूबफैलाकर कहना या लिखना।

प्रा० बातबनाना-बोल० मतलब गांठना, झूठ कहना।

प्रा० बातबाँधना-बोल० झूठीतर्क करना।

प्रा० बातबिगाड़ना-बोल०मतलब खोना, बिगाड़ करना।

प्रा० बातमानना-बोल० कहना मानना। [न लेना।

प्रा० बातरखना-बोल० कहनामा-

प्रा० बातरहना-बोल० इज्जत और आबरू रहना, प्रतिष्ठा रहना।

प्रा० बातलगाना-बोल० चुगली खाना, निंदा करना।

प्रा० बातेंकरना-बोल० इधर उधर की चर्चा करना।

प्रा०बातेंबनाना-बोल० छलकरना, खुशामद करना।

प्रा०बातेंमारना-बोल० शेखीकरना, डींग मारना।

प्रा० बातेंसुनना-बोल०कड़ुवी बात सहना।

प्रा० बातें सुनाना-बोल० कडुवी बात कहना। [चुहलमें टालना।

प्रा० बातोंमेंउड़ाना-बोल० हँसी

प्रा० बातोंमेंधरलेना-बोल० क़ायल करना, चुपकरदेना।

प्रा० बातोंमेंलपेटना-बोल० बातों में धोखा देना।

प्रा० बात-(सं० वात, वा जाना) स्त्री० हवा, पवन, वायु, २ वायु रोग।

प्रा० बाती-(सं० वर्त्ति वृत्=होना) स्त्री० बत्ती।

प्रा० बातूनिया } बातूनी } (बात) गु० बहुत बातें बनानेवाला, गप्पी, वाचाल, बाचाट।

प्रा० बादर } बादल } (सं० वारिद) पु० बद्दल, मेघ।

सं० बादरायण-(बदर + अयन) पु० वेदव्यास, व्यास महाराज पाराशर्य्य, पराशर के पुत्र। [लपा।

प्रा० बादला-पु० सोने रूपेका तार,

प्रा० बादि-क्रि० वि० वृथा, फ़जूल।

सं० बाधक-(बाध्=रोकना) क० पु० रोकनेवाला, प्रतिबन्धक, हारिज, हर्ज करनेवाला।

सं० बाधा-(बाध्=रोकना) स्त्री० रोक, रुकाव, २ दुःख, पीड़ा।

सं० बाधित } बाध्य } (बाध्=रोकना) कर्म० पु० रोका हुआ २ दुःखित, पीड़ित।

प्रा० बान-(सं० वर्णरंग वा गुण) स्त्री० स्वभाव, प्रकृति, चाल, टेव, आदत।

प्रा० बानगी-स्त्री० नमूना, अटकल, क़यास।

प्रा० बानवे (सं० द्वानवति) गु० नब्बे और दो।

प्रा० बाना-(सं० वर्ण) पु० वेष, लिबास २ ढंग, चाल, ३ एकतरह का हथियार ४ वह सूत जिससे कपड़े की चौड़ाई बुनीजाती है, भर्ती।

प्रा० बाना-क्रि० स० खोलना, पसारना।

प्रा० बानी-स्त्री० राख, २ वह सूत जिससे कपड़ा बुनाजाता है।

फ़ा० बानी-(बिना) क० बिना डालने वाला, जड़डालनेवाला, नीवजमाने वाला, बुनियाद डालनेवाला।

सं० बान्धव (बन्धु) पु० भाई, रिश्तेदार, सम्बन्धी, नतैत, मित्र।

प्रा० बाप-(सं० वप्, वप्=बोना) पु० पिता, जनक, तात, बाबा।

प्रा० बापकरना-बोल० बाप के बराबर मानना।

प्रा० बापमेरा } बापरेबाप } बोल० अचंभा और शोच और डरआदि को जतलानेवाले शब्द।

प्रा० बापमारेकाबैर–बोल० बड़ा भारी बैर।

प्रा० बापनमारीपीदड़ीबेटातीरन्दाज़–यह कहावत वहां बोलते हैं जब किसी के बाप दादे कुछ योग्य नहीं हों और वह कुछ बढ़कर किया चाहे या दिखाया चाहे।

प्रा० बापड़ा } गु० बेबश, बेचारा, बापुरा } अनाथ,दीन,कंगाल।

प्रा०बाफ–(सं०बाष्प)स्त्री०धूआं,भाफ।

प्रा० बाबा–पु० बाप, २ बड़ा आदमी ३ बेटा, लड़का, प्यारा।

प्रा० बाबाजी–पु० योगी संन्यासियों की पदवी।

प्रा० बाबू–पु० लड़का, बालक, २ छोटा राजा या राजकुमार, ३ बड़ा आदमी, रईस,—हिंदुओं में और विशेष करके बंगालियों में बड़े आदमी को बाबू कहते हैं जैसे दिल्ली आगरे की ओर बड़े आदमी को लाला साहिब या मुन्शी साहिब बोलते हैं, और अंगरेज अंगरेजी लिखनेवाले किरानियों को बाबू कहते हैं, ४ योगी और फुकरों की बोल चाल में हरएक मर्द को बाबू और स्त्रीको माई कहते हैं।

प्रा० बाम–(सं० ब्राह्मी) स्त्री० एक मछली का नाम, २ (सं०बाम, वा जाना) गु० बायां, उलटा, ३ सुन्दर, ४ पु० महादेव, ५ कामदेव ६ (सं० वामा) स्त्री०।

प्रा० बामअंग–(सं० वामाङ्ग) पु० बाईं ओर बाईं तरफ़।

प्रा० बामा–(सं०वामा, वाम=बायां अर्थात् पुरुष के बाईं ओर बैठने वाली) स्त्री० लुगाई, स्त्री।

प्रा० बाम्हण } (सं० ब्राह्मण) पु० बाम्हन } ब्राह्मण, २ हिंदुओं में जमींदारों की एक जाति जो बिहार और बनारस की ओर बहुत होते हैं।

प्रा० बायव्व–(सं० वायव्य) स्त्री० वायुकोण, पश्चिम उत्तरका कोना, २ हटना, अलग होना।

प्रा० बायां–(सं०वाम) गु० बाईं ओर २ उलटा।

प्रा० बायांपांवपूजना–बोल० पाखंडी मनुष्य के छल और पाखंड को मान लेना।

प्रा० बार–(सं०वार वृ=ढकना) स्त्री० समय, अवकाश, अवसर, देरी, देर, विलम्ब, २ पु० अठवाड़े का दिन, ३ दरवाजा, ४ (सं०बाल) पु० लड़का, ५ केश, ६ (सं०बाला) स्त्री० सोलह बरसकी लड़की।

प्रा० बारलगाना–बो०देरीकरना।

प्रा० बारण–(सं० वारण, वृ=ढकना, बचाना) पु० रोकना, अटकाना, २ हाथी।

प्रा० बारम्बार—(सं० बारंबार, बार) क्रि० वि० बार बार, फिर फिर, घड़ी घड़ी, मुतवातिर, लगातार [और दो ।

प्रा० बारह (सं० द्वादश) गु० दश

प्रा० बारहबाँट—१ मोह, २ दैन्य, ३ भय, ४ ह्रास, ५ हानि, ६ ग्लानि, ७ क्षुधा, ८ तृषा, ९ मृत्यु, १० क्षोभ, ११ मृषा, १२ अपकीर्ति ।

प्रा० बारहबाटहोना—बोल० उजड़ना, बिगड़ना, सत्यानाश होना, २ दुखपाना, सताया जाना ।

प्रा० बारहदरी—(बारह + दर = दरवाज़ा) स्त्री० वह मकानजिसकेबारह दरवाजे हों, बंगला, हवादार मकान ।

प्रा० बाराखरी—(सं० द्वादशाक्षरी) स्त्री० व्यंजनों में बारह स्वरों का मिलान ।

प्रा० बारासिंगा } (सं० द्वादश
बारहासिंगा } =बारह, शृंग= सींग) पु० एक जानवर जो हरिण सा होता है जिसके सींग लंबे होते हैं और सींग में सींग होताहै ।

प्रा० बाराह—(सं० वराह) पु० शूकर, सूअर ।

प्रा० बारी—(सं० वाटी) स्त्री० बाड़ी, बग़ीचा, २ (सं० बालिका) लड़की, ३ (सं० बार) नियत समय, पारी, नौबत, उसरी ।

प्रा० बारीदार—पु० वह नौकर जिसकी नौकरी का समय नियत हो ।

प्रा० बारी—स्त्री० झरोखा, दरीची, छोटा दरवाज़ा, २ हिंदुओं में एक जाति के लोग जो मशाल और बत्ती बनाते हैं, ३ एकगहनेका नाम जो नाक और कानमें पहना जाताहै ।

प्रा० बारुणी—(सं० वारुणी, वरुण अर्थात् जिस का देवता वरुण है) स्त्री० मदिरा, मद्य, शराब, २ पश्चिम दिशा, ३ शतभिषा नक्षत्र, ४ दूब ।

प्रा० बारूत—स्त्री० दारू, शोरा, गंधक और कोयला आदि से बनी हुई चीज़ जो आग पड़ते ही भक से उड़ जाती है ।

प्रा० बारो—(सं० बाल) पु० बालक ।

सं० बाल-(बल् = जीना, दान, कहना) पु० लड़का, बालक, २ केश, ३ गु० मूर्ख, नासमझ, अज्ञान, बेहोश ।

प्रा० बाल—(सं० बाला) स्त्री० सोलह बरस की लड़की, २ पु० सात आठ बरस का लड़का लड़की,—३ अनाज की फुनगी, ४ वह निशान जो काच और पियाले आदि में होताहै । [बाले, बाल बच्चे ।

प्रा० बालगोपाल—बोल० लड़के

सं० बालग्रह—पु० बालकों के दुःख देनेवाले ग्रह, उपग्रह ।

प्रा० बालबांधीकौड़ीमारना या उड़ाना—बोल० बेचूके निशाना मारना, ठीक निशाना लगाना ।

प्रा० बालबालवैरीहोना—बोल० हरएकअपने और परायेसेवैरहोना।

प्रा० बालबालगजमोतीपिरोना—बोल० खूब सँवारना ।

प्रा० बालबच्चे-बोल० लड़के बाले ।

प्रा० बालबाँकानहोना } बालबंकानहोना } बोल० किसी तरह का बिगाड़ न होना ।

सं० बालक—(बाल) पु० लड़का, छोटी उमर का बच्चा, मूर्ख, घोड़ा, हाथी, अंगूठी, कंकण, वलय, हाऊबेर।

प्रा० बालका-(सं० बालक) पु० योगी या संन्यासियों का चेरा ।

प्रा० बालना } बारना } क्रि० स० जलाना, सुलगाना ।

प्रा० बालभोग-(स० बाल=बालक, भोग्य=खाने की चीज) पु० वह नैवेद्य जो देवताको सबेरे चढ़ाते हैं।

प्रा० बालम-(सं० बल्लभ) पु० प्रियतम, प्यारा, पति । [का खीरा ।

प्रा० बालमखीरा—स्त्री० एक तरह

प्रा० बालरांड़—(स० बालरण्डा) स्त्री० वह स्त्री जो बालकपन में विधवा होजाय ।

सं० बाललीला-(बाल + लीला) स्त्री० लड़कपनका खेल, बालचरित्र।

सं० बालवत्स—पु० कबूतर, २ गु० बालकों के ऊपर दयालु ।

सं० बालसुख—(बाल + सुख) पु० बालकपन का सुख ।

सं० बाला—(बाल) स्त्री० लड़की सोलह बरस से कम उमर की लड़की ।

प्रा० बाला—(सं० बाल) पु० छोटी उमर का लड़का, २ एकतरह का सोने का गहना जो कानों में पहना जाता है और गोल होताहै ।

प्रा० बालाचांद—(सं० बालचन्द्र) पु० द्वितीया का चन्द्र, दुइज का चांद, नया चांद ।

प्रा० बालापन—भा० पु० बालकपन, लड़काई, लड़कपन ।

प्रा० बालाभोला—बोल० वह लड़का जो कुछ छल कपट न जानताहो ।

सं० बालि } बाली } (सं० बल=जोर) पु० एकबंदर का नाम जो इन्द्र का बेटा और सुग्रीव का भाई और अंगद का बाप था जिसको श्रीरामचन्द्र ने मारा ।

सं० बालिकुमार—(बालि + कुमार) पु० अंगद ।

सं० बालिश—(बाल + इन) गु० अज्ञ मूर्ख, बालक, पु० उपबर्हण, तकिया, मसनद, ३ उपधान ।

प्रा० बाली (सं० बालिका) स्त्री०

छोटी उमर की लड़की, २ एक गहने का नाम जो नाक और कान में पहना जाता है।

सं० बालु—(बल्+उ) पु० सुगन्धि-तद्रव्य, रेत। [रेत, रेती।

प्रा० बालू—(सं० बालुका) पु०

प्रा० बालूशाही—स्त्री० एक तरह की मिठाई।

सं० बाल्य—भा० पु० लड़कपन।

प्रा० बाव—(सं० वायु) स्त्री० हवा, पवन, बयार। [करना।

प्रा० बावबांधना—बोल० खुशामद

प्रा० बावबहना-बोल० हवाचलना।

प्रा० बावकेघोड़ेपर सवारहोना-बोल० घमंडी होना, शेखी करना।

प्रा० बावसुरना—बोल० पाद्ना।

प्रा० बावगोला—पु० पेटकी पीड़ा, बावसूल।

प्रा० बावभक }
बावभक } गु० गप्पी, झक्की, बड़बड़िया, भूत, प्रेत।

प्रा० बावड़ी }
बावली } स्त्री० बड़ा कुवां, जिसके उतरनेके लिये सीढ़ी होती हैं।

प्रा० बावन }
बावना } (सं० बामन) गु० नाटा, ठिंगना, पु० विष्णुका पांचवां अवतार।

प्रा० बावन (सं० द्विपञ्चाशत) गु० पचास और दो।

प्रा० बावरा }
बावला } (सं० बातूल, बात=हवा) गु० सिड़ी, पागल, दीवाना।

प्रा० बावसूल—(सं० वातशूल) पु० पेटकी पीड़ा, बावगोला।

सं० बाष्प—पु० नेत्रजल, आंसू, उष्मा, भाफ़, लोहा।

प्रा० बास—(सं० वास, वास्=सुगंधितहोना) स्त्री० महक, सुगंध, गन्ध।

प्रा० बास }
बासा } (सं० वास, वस्=रहना) पु० रहने की जगह, डेरा, बसेरा।

प्रा० बासन—पु० बरतन, भांड़ा, पात्र।

प्रा० बासना—(सं० वासना, वास्=सुगन्धित होना) स्त्री० इच्छा, चाह २ सुगन्धि, क्रि० स० महकाना, सुगन्धित करना।

प्रा० बासी—(सं० वासी, वस्=रहना) पु० बसनेवाला, निवासी, रहनेवाला।

प्रा० बासी—(सं० वास्=सूंघना, महक आना) गु० रातका बचा हुआ खाना, औसा, २ बदबूदार, जिस में बुरी बासआवे।

प्रा० बासीबचे न कुत्ताखाय—कहावत० कुछ बाकी नहीं रहता।

प्रा० बासी फूलों बास नहीं, परदेशी बालम तेरी आस नहीं—यह कहावत निराश होने पर बोली जाती है।

प्रा० बासुदेव—(सं० वासुदेव, वसुदेव का) पु० वसुदेव का बेटा, श्रीकृष्ण ।

प्रा० बाहन—(सं० वाहन, वह=ले जाना) पु० सवारी, असवारी, घोड़ा, गाड़ी आदि जिसपर आदमी चढ़ते हैं ।

प्रा० बाहर } बाहिर } (सं० बाहिर) क्रि० वि० बाहिर की ओर ।

प्रा० बाहर के खा जायें, घरके गीतगायें—कहावत—अपने सब धरे रहें और दूसरों को लाभहो ।

सं० बाहु—(बाध्=रोकना) पु० बांह, भुजा, भुजदण्ड ।

सं० बाहुज—(बाहु + जन्=पैदा होना) पु० बाहू राजन्याविति श्रुतिः क्षत्रिय, बाहु से पैदा हुये ।

सं० बाहुयुद्ध—(बाहु + युद्ध) पु० मल्लयुद्ध, कुश्ती ।

सं० बाहुल्यता—भा० स्त्री० आधिक्यता, अधिकाई, कसरत ।

प्रा० बिंजन—(सं० व्यञ्जन, वि=बहुत, खूब, अञ्ज=साफ़ करना) पु० तरकारी भाजी ।

प्रा० बिंब } बिंबा } (सं० बिम्ब) पु० एकतरह का लाल फल, कुन्दरू ।

प्रा० बिकट—(सं० विकट, वि=बहुत, कट=जाना या घेरना) गु० डरावना, भयानक, भयंकर, कठिन ।

प्रा० बिकना—(सं० वि, क्री=लेन देन करना) क्रि० अ० खपना, उठना, बिक्री होना, बेची जाना ।

प्रा० बिकरार } बिकराल } (सं० विकराल) गु० डरावना, भयानक, २ भोंड़ा, कुरूप ।

प्रा० बिकल—(सं० विकल, वि=नहीं, कला=अंश) गु० बेचैन, व्याकुल, अचैन, दुःखी, घबराया हुआ ।

प्रा० बिकसना—(सं० विकसन, वि, कस्=जाना) क्रि० अ० खिलना, फूलना, २ प्रसन्न होना, मुसकुराना ।

प्रा० बिकसित—(सं० विकसित, वि, कस्=जाना) गु० खिला हुआ, फूला हुआ, २ प्रफुल्ल, हर्षित, प्रसन्न, खुश ।

प्रा० बिकाऊ—(बिकाना) गु० बेचने के योग्य, जो चीज़ बेचने को हो ।

प्रा० बिकाना—(बिकना) क्रि० स० उठाना, खपाना, बेचना ।

प्रा० बिकाश—(सं० विकाश, वि, काश्=चमकना) पु० प्रकाश, चमक, गु० चमकता हुआ, प्रसन्न, आनन्दित, हर्षित ।

प्रा० बिक्री—(सं० विक्रय, वि=बहुत, क्री=मोल लेना) स्त्री० बिकाव, खपाव, उठाव, बिकना ।

प्रा० बिखरना—(सं० वि, कृ=छींटना) क्रि० अ० फैलना, छीटना,

तित्तर बित्तर होना, तीन तेरह होना, २ कोपना, क्रोध करना, गुस्सा करना ।

प्रा० **बिगड़ना**-(सं० विग्रह) क्रि० अ० खराब होना, नुकसान होना, नहीं बनना, २ फूटरहना, अनबन रहना, फिर जाना, बागी होना ।

प्रा० **बिगाड़**-(बिगाड़ना) पु० विघन, नुक़सान, उपाध, २ बैर, अनबन, तोड़फोड़ ।

प्रा० **बिगाड़ना**-(बिगड़ना) क्रि० स० खराब करना, नुकसान करना २ मित्रों में बैर करवा देना ।

प्रा० **बिघन**-(सं० विघ्न, वि=पहले, हन्=मारना) पु० रोक, रुकाव, बाधा, बिगाड़ ।

प्रा० **बिगाड़**-(सं० विचार, वि, चर्=चलना) पु० सोच, ध्यान, खयाल, सम्मति, राय, न्याय ।

प्रा० **बिचारना**-(सं० विचरण, वि,चर्=चलना) क्रि० स० सोचना, ध्यान करना, खयाल करना, समझना, बूझना, निर्णयकरना ।

प्रा० **बिचाली**-स्त्री० पुआल ।

प्रा० **बिचित्र**-(सं० विचित्र, वि=बहुत, चित्र=भांति भांति का) गु० भांति भांतिका, नाना प्रकारका, २ अद्‌भुत, अनोखा, अजीब ।

प्रा० **बिच्छू**-(सं० वृश्चिक) पु० एक जहरीले जानवर का नाम जिसके डंक में जहर भरा रहता है ।

प्रा० **बिछड़ना** }
बिछरना }
बिछुड़ना }
बिछुरना } (सं० वि=बहुत, छुद्=काटना) क्रि० अ० अलग होना, जुदा होना, अलाहदा होना ।

प्रा० **बिछना**-(सं० विस्तर, वि, स्तृ=फैलना) क्रि० अ० फैलना, पसरना ।

प्रा० **बिछाना**-(बिछना) क्रि० स० फैलना, पसारना, २ पु० बिछौना, बिस्तरा ।

प्रा० **बिछुवा**-पु० एक तरह का हथियार जो टेढ़ा होता है, २ एक गहना जो पाँव में पहनते हैं ।

प्रा० **बिछोह** }
बिछोहा } (बि=बिन, छोह=प्यार या बिछुड़ना से) पु० विरह, बियोग, जुदाई ।

प्रा० **बिछौना**-(बिछना) पु० बिस्तरा सेज ।

प्रा० **बिजना**-(सं० व्यजन, वि, अज्=चलना) पु० पंखा ।

प्रा० **बिजली**-(सं० विद्युत्) स्त्री० दामिनी, चपला, वह आग जो बादलों में चमकती है ।

प्रा० **बिज्जु**-(सं० विद्युत्) स्त्री० बिजली, दामिनी ।

प्रा० **बिजोग**-(सं० वियोग) पु० जुदाई, बिछुड़ना ।

प्रा० बिडारना–क्रि० स० भगाना, बिचलाना ।

प्रा० बिताना-(बीतना) क्रि० स० गँवाना, काटना ।

प्रा० बितीत–(सं० व्यतीत) गु० बीताहुआ, गुज़रा हुआ, जो पूरा होचुका, मुनक़ज़ी ।

प्रा० बित्त–(सं० वित्त, वित्=छोड़ना, देना) पु० धन, दौलत, द्रव्य, २ गात, बूता ।

प्रा०बिथकना–क्रि०अ०चकितहोना अचंभे में होना, हैरत में आना ।

प्रा० बिथरना, बिथुरना (सं० विस्तरण) क्रि०अ० बिखरना, छिटकना, फैलना ।

प्रा० बिथा–(सं० व्यथा) स्त्री० पीड़ा, दुःख, दर्द ।

प्रा० बिदा, बिदाई (सं० विद् फाड़ना वा जुदा होना और अरबी में विदअ=रुखसत होना) स्त्री० छुट्टी, जाने की आज्ञा, रुखसत, रुखसती ।

प्रा० बिदाकरना–बोल० रुखसत करना ।

प्रा० बिदारना–(सं० विदारण, वि=बहुत, दृ=फाड़ना) क्रि० स० फाड़ना ।

प्रा० बिदेश-(सं० विदेश, वि=दूसरा, देश=मुल्क) पु० दूसरा देश, दूसरा मुल्क, परदेश ।

प्रा० बिदेशी–(विदेश) गु० परदेशी, ग़ैर मुल्क का ।

प्रा० बिधना–(सं० विधि) पु०बिधाता, ब्रह्मा, दैव ।

प्रा० बिधवा–(सं० विधवा वि=बिन, धव=पति) स्त्री० रांड़, बेवा, जिस का पति मरगया हो ।

प्रा० बिन, बिना (सं० विना, वि+ना) क्रि० वि० छोड़के, छुट, रहित, बिदून, सिवाय ।

प्रा० बिनआये तरना–बोल० बे मौत मरना ।

प्रा० बिन रोये लड़का दूध नहीं पाता–कहावत० बिन मांगे कुछ नहीं मिलसकता ।

प्रा० बिनभयप्रीतनहीं–कहावत० बिनडराये कोई नहीं मानता ।

प्रा० बिनमांगे दूध बराबर मांगे सो पानी–कहावत० बिनमांगे मिले वही अच्छा है ।

प्रा० बिनवना, बिनौना (सं०विनमन, वि=बहुत, नम्=नमस्कारकरना) क्रि० स० नमस्कार करना, पूजना ।

प्रा० बिनसना-(सं०वि, नश्=नाश होना) क्रि० अ० नाश होना, बिगड़ना ।

प्रा० बिनास–(सं० विनाश) पु० नाश, संहार, बिध्वंस ।

प्रा० बिनौला—पु० रूईका बीज ।

प्रा० बिन्ती, बिनती (सं० विनीति, वा विनति, वा विनय । वि=बहुत, नि=गाना वा चलाना वा नम्=नमस्कारकरना) स्त्री० विनय, नम्रता, प्रार्थना, अर्ज़ ।

प्रा० बिन्द, बिन्दी (सं० बिन्दु) स्त्री० शून्य, सिफ़र, बिन्दु ।

प्रा० बिपत, बिपता (सं० विपत्ति) स्त्री० आपदा, दुःख, विपदा, तकलीफ़ । [गुठली ।

प्रा० बिया—(सं० बीज) पु० बीज,

प्रा० बियालू—पु० रातका खाना ।

प्रा० बिरद—पु० यश, नाम, ख्याति, २ हथियार ।

प्रा० सं० बिरदावलि-(विरद=यश, सं० अवलि=पांत) स्त्री० बहुत यश, बहुत ख्याति, बड़ी नामवरी ।

प्रा० बिरमना—(सं० वि, रम्= ठहरना, चैन करना) क्रि० अ० ठहरना, रहना, बिलमना ।

प्रा० बिरला—(सं० बिरल, वि, रा =देना या लेना) गु० कोई कोई, अनूठा, अपूर्व, अनूप ।

प्रा० बिरवा—पु० रूख, वृक्ष, पौधा ।

प्रा० बिरह—(सं० विरह, वि=बहुत, रह्=छोड़ना) पु० जुदाई, बिछोह, वियोग, बिछुड़ना, फ़ुरक़त ।

प्रा० बिरहनी—(सं० विरहिणी, विरह) गु० स्त्री० वह स्त्री जो अपने पति से जुदी रहे ।

प्रा० बिराजना—(सं० वि=बहुत, राज्=शोभना) क्रि० अ० शोभना, २ सुख भोग करना चैनसे रहना ।

प्रा० बिराना-गु० पराया, २ दूसरेका ।

प्रा० बिरियां—(सं० वेला) स्त्री० समय, वक़्त, काल, वेला ।

प्रा० बिरोग—(सं० वियोग) गु० विरह, वियोग, जुदाई ।

प्रा० बिरोगन—(सं० वियोगिनी) गु० स्त्री० वह स्त्री जो विरह से व्याकुल हो ।

प्रा० बिल, बिला (सं० विल, विल्=ढकना या छिपना) पु० चूहे आदि जानवरों के रहने का छेद, छिद्र । [लड़के का रोना ।

प्रा० बिलकना-क्रि० अ० सिसकना,

प्रा० बिलखना—(सं० विलक्षण, वि=बुरा, लक्षण=चिह्न) क्रि० अ० उदास होना, क्रि० स० देखना, उदास होकर देखना ।

प्रा० बिलग—(सं० विलग्न, वि= नहीं, लग्=मिलना) गु० अलग जुदा, न्यारा । [मानना ।

प्रा० बिलगमानना—बोल० बुरा

प्रा० बिलगना-(सं० विलग्न) क्रि० अ० जुदा जुदा होना, अलग होना, २ फटना ।

प्रा० बिलगाना—(बिलगना) क्रि० स० जुदा २ करना, अलगाना, क्रि० अ० फटना, फाटना ।

प्रा० बिलबिलाना— क्रि० अ० व्याकुल होना, कूकना, तड़फना ।

प्रा० बिलम-(सं० विलम्ब) स्त्री० देरी, देर, ढील ।

प्रा० बिलमना, बिलंबना (सं० विलम्ब) क्रि० अ० देरी करना, ठहर जाना, रुकजाना ।

प्रा० बिलल्ला-पु० भोंदू, मूर्ख, बेढंगा, बेशऊर ।

प्रा० बिलसना—(सं० वि, लस्= खेलना) क्रि० अ० प्रसन्नहोना, सुख भोगना, भोगना, आनन्दितहोना ।

प्रा० बिलस्त—(सं० वितस्ति) पु० बित्ता, बिलांद, बालिश्त, अंगूठे से कन अंगुली तक का नाप ।

प्रा० बिलाई-(सं० विडाली) स्त्री० बिल्ली, २ एक लोहे की चीज जिस पर कद्दू छीलते हैं, ३ किवाड़ बन्द करने की लकड़ी ।

प्रा० बिलाना-(सं० विलय, वि= बहुत, ली=मिलना, पर वि उपसर्ग के साथ आने से इस धातुका अर्थ नाश होना होताहै) क्रि० अ० मिट जाना, नाश होना ।

प्रा० बिलापना, बिलपना (सं० विलाप, वि=बुरी तरहसे लप्=बोलना अर्थात् रोना) क्रि० अ० बिलकना, रोना, विलाप करना, दुःख करना ।

प्रा० बिलार, बिलाव (सं० विडाल) पु० बिलाव, मार्जार, गुर्बह ।

प्रा० बिलावल-स्त्री० एक रागिणी का नाम ।

प्रा० बिलोना, बिलोवना (सं० विलोडन, वि, लुड्=मथना) क्रि० स० मथना, महना ।

प्रा० बिल्ली-(सं० विडाली) स्त्री० एक जानवर का नाम ।

प्रा० बिल्लीभीलड़तीहै तो मुँहपर पंजाधरलेती है—कहावत० जब लड़ना चाहिये तो पहले अपना बचाव सोचना चाहिये ।

प्रा० बिल्लीकेभागोंछीका टूटा- कहा० अयोग्य मनुष्य को संयोग से बड़ा काम मिला ।

प्रा० बिसन—(सं० व्यसन) पु० दोष, अवगुण, बुराई, बुरा काम, प्रेम, शौक़, रग़बत ।

प्रा० बिसरना-(सं० विस्मरण, वि= नहीं, स्मृ=याद रखना) क्रि० अ० भूल जाना ।

प्रा० बिसात-स्त्री० पुंजी ।

प्रा० बिसाती—पु० छोटीछोटी चीजें बेचनेवाला ।

प्रा० बिसाना, बिसाहना क्रि० स० मोललेना खरीदना, लेना ।

प्रा० बिसारना—(बिसरना) क्रि० स० भुलाना, बिसरना ।

प्रा० बिसूरना-क्रि० अ० धीरे २ रोना सिसकना ।

प्रा० बिसेला-(विष)गु० जहरीला ।

प्रा० बिस्तारना-(विस्तार) क्रि० स० फैलाना, वसीअ करना ।

प्रा० बिस्वा—(बीस) पु० बीघे का बीसवां भाग ।

प्रा० बिहरना—(सं० विहरण) क्रि० अ० बिहार करना, खुशी करना, हुलसना, सैर करना, ऐश इशरत करना । [उगाहनी ।

प्रा० बिहरी—स्त्री० चन्दा, पातड़ी,

प्रा० बिहरुना—(सं० विदारण) क्रि० अ० फटना, छाती फटना, छाती दरकना ।

प्रा० बिहंसना-(सं० विहसन) क्रि० अ० हंसना, मुसकुराना ।

प्रा० बिहान-पु० भोर, तड़का, प्रातः काल, प्रभात, भिनसार ।

प्रा० बिहाना-(सं० वि, हा=छोड़ना) क्रि० स० छोड़ना, त्यागना।

प्रा० बींधना-(सं० विद्ध, वा वेधन, विध् या व्यध्=छेदना) क्रि० स० छेदना, बेधना ।

प्रा० बीघा—पु० बीसबिस्वेकी नाप ।

प्रा० बीच-नित्य सं० भीतर, अन्दर, में, मांझ, मध्य, २ पु० अन्तर, फूट, विरोध ।

प्रा० बीचपड़ना—बोल० अन्तरपड़ना, फूट पड़ना ।

प्रा० बीच बिचावकरना—बोल० दो आदमियों में मेल कराना ।

प्रा० बीचमेंपड़ना—बोल० दो आदमियों में मेल कराने के लिये मध्यस्थ होना ।

प्रा० बीचोबीच—बोल० ठीकबीच में, मध्य में ।

प्रा० बीछा-पु० } (सं० वृश्चिक)
बीछी-स्त्री० } बिच्छू ।
बिच्छी-स्त्री० }

प्रा० बीजक—पु० मालकीफेहरिस्त, चलान चिट्ठी, २ टिकट जो माल की गठरी पर लगाया जाता है ।

प्रा० बीजना—(सं० व्यजन) पु० तालवृन्तक, पंखा । [का गू ।

प्रा० बीट (सं० विष्ठा) स्त्री० जानवरों

प्रा० बीड़ा } (सं० वीटिका, वि
बीरा } इट्=जाना) पु० पान की खीली, चूना, कत्था और सुपारी आदि लगाया हुआ पान २ वह डोरा जिस से तलवार का मियान उसकेकबजेमें बाँधा रहताहै ।

प्रा० बीड़ाउठाना—बोल० किसी बड़े काम को करने का ज़िम्मा करना ।

प्रा० बीड़ाडालना—बोल० किसी

कठिन काम के लिये सवाल कर ना,--हिंदुस्तान में रीत है कि जब किसी सरदार को कठिन काम आ पड़ताहै तो वह अपने नौकर चाकरों को इकट्ठा करके उस काम को कहता है फिर एक पान का बीड़ा रकाबी में रख कर सब के साम्हने फेरा जाता है जो उसको उठा के चबाले वह काम उसके जिम्मे हो जाता है।

प्रा० बीण } (सं० वीणा) स्त्री०
वीन } वीणा, तन्त्री, एक बाजे का नाम जिसके दोनों ओर तुंबा और डंडी पर बहुतसी खूंटियां होती हैं जिसपर तार चढ़े रहते हैं।

प्रा० बीतना—(सं० व्यतीत) क्रि० अ० व्यतीत होना, हो चुकना, चला जाना, गुजरना, पूरा होना, कटना।

प्रा० बीबी—स्त्री० स्त्री, बहू, मेम।

सं० बीभत्स-स्मी० पु० जुगुप्सित, निन्दित, घृणित पु० नवरस में एकरस।

प्रा० बीमा-स्त्री० जोखिम, हुंडा, भाड़ा।

प्रा० बीर—पु० भाई, भैया, २ कान में पहनने का एक गहना, ३ (सं० वीर) बहादुर, शूर वीर, ४ स्त्री० बहन।

प्रा० बीरबहूटी-स्त्री० एक प्रकार का लाल कीड़ा जो सावन में पैदा होता है, इन्द्रवधू।

प्रा० बीरा—पु० भाई, भैया।

प्रा० बीरी—(सं० वीटिका) स्त्री० पान की खीली। [दहाई।

सं० बीस—(सं० विंशति) गु० दो

प्रा० बीसी—स्त्री० अनाज नापने का परिमाण, २ (सं० विंशति) बीस, कोड़ी।

प्रा० बुंदा—(सं० बिन्दु) पु० बिन्दी, शून्य, सिफ़र, बिंदु। [राजपूत।

प्रा० बुंदेला—पु० बुन्देल खण्ड का

प्रा० बुकनी—स्त्री० चूर्ण, बूरा, चूर।

सं० बुक्क-पु० हृदय का मांस, कलेजा, क्लेश, छिलका, वर्णन, देना० गु० दाता, वक्ता।

सं० बुक्कन—(बुक्+अन, बुक्=कहना, भूंकना) पु० कुक्कुर शब्द, कुत्ता का भूंकना।

प्रा० बुक्का—पु० मुट्ठी भर, चुटकी।

सं० बुक्कार—पु० पृष्ठ मांस, पीठ का मांस, हृदय, कलेजा, सिंहनाद।

प्रा० बुझना—क्रि० अ० ठंढा होना, बुतना, चिराग़ गुल होना, आग ठंढी होना।

प्रा० बुझाना—क्रि० स० ठंढा करना, बुताना, चिराग़ गुल करना, आग ठंढी करना।

सं० बुड—(बुड्=त्याग, आच्छादन) पु० संवरण, आवरण, आच्छादन,

ढापना गु० ढापने वाला ।

प्रा० बुड़ाना–क्रि० स० डुबवाना, बोरना।

प्रा० बुड्ढा–(सं० वृद्ध) गु० बूढ़ा ।

प्रा० बुढ़भस–गु० वह बूढ़ा जो जवानों की चाल चले ।

प्रा० बुढ़भसलगना–बोल० बुढ़ापे में जवानी की बातें करना ।

प्रा० बुढ़वा–(सं० वृद्ध) गु० बूढ़ा ।

प्रा० बुढ़ापा-(बूढ़ा) भा० पु० बूढ़ापन, वृद्धावस्था ।

प्रा० बुढ़ापाबिगड़ना–बोल० बुढ़ापे में दुःख होना ।

प्रा० बुढ़िया–स्त्री० बूढ़ी स्त्री ।

प्रा० बुत्ता–पु० ठगाई, छल, कपट, धोखा । [ना, धोखादेना ।

प्रा० बुत्तादेना–बोल० ठगना, छल-

सं० बुद्ध–(बुध्=जानना) पु० विष्णु का नवां अवतार, बौधमतका स्थापन करने वाला, २ बुद्धिमान्, पंडित, पल्लवितवृक्ष र्म्म० विदित, जाना हुआ, जागता हुआ ।

सं० बुद्धि–(बुध्=जानना) स्त्री० मनीषा, मति, धी, धिषणा, समझ, सोच, विचार, ज्ञान, विवेक, पहचान, अक्ल ।

सं० बुद्धिबल–पु० अक्लकीताकत ।

सं० बुद्धिमान्–(बुद्धि+मान्) गु० समझदार, ज्ञानवान, विवेकी, अक्लमन्द ।

सं० बुद्धिहीन–(बुद्धि+हीन) गु० बेसमझ, मूर्ख, बेअक्ल ।

सं० बुद्धीन्द्रिय–(बुद्धि+इन्द्रिय) पु० स्त्री० आंख, नाक, कान, जीभ, त्वचा अर्थात् शरीर परका चमड़ा ।

सं० बुध–(बुध्=जानना) पु० बृहस्पति की स्त्री के चंद्र से उत्पन्न हुआ बेटा, चौथा ग्रह, २ बुधवार, ३ पंडित, बुद्धिमान् ।

सं० बुधजन–(बुध+जन) पु० पंडित लोग, बुद्धिमान् ।

सं० बुधवार–(बुध+वार=दिन) पु० बुध का दिन, चौथावार ।

सं० बुधान–क० पु० गुरु, पंडित, अध्यापक, ब्रह्मा का पारषद ।

सं० बुधित–र्म्म० पु० ज्ञात, जानाहुआ।

प्रा० बुन्ना–क्रि० स० बिना ।

सं० बुभुक्षा-(भुज्=खाना) भा० स्त्री० क्षुधा, भूख, खाने की चाह ।

प्रा० बुभुक्षित-(बुभुक्षा) क० पु० भूखा ।

प्रा० बुरा–गु० खराब, दुष्ट, नीच, निकम्मा ।

प्रा० बुराकहना–बोल० निन्दा करना, बदनाम करना ।

प्रा० बुराचीतना–बोल० किसी का बिगाड़ चाहना, किसी की बुराई चाहना ।

प्रा० बुराबेटा, खोटा पैसाकाम आता है–कहा० अपना बेटा

निकम्मा भी हो तौभी किसी समय काम आताहै ।

प्रा० बुरामानना—बोल० अप्रसन्न होना, नाराजहोना, नाखुश, होना ।

प्रा० बुरालगना—बोल० भला न मालूम होना ।

प्रा० बुराई-भा०स्त्री० खराबी, दुष्टता ।

प्रा० बुराईपरकमरबांधना—बोल० बुराई करने पर तैयार होना ।

प्रा० बुलबुला—(सं०बुद्बुद) पु० बुद्बुदा । [का गहना ।

प्रा० बुलाक-स्त्री० नाक में पहनने

प्रा० बुहारना—क्रि० स० झाड़नी ।

प्रा० बुहारी—स्त्री० झाड़ू ।

प्रा० बूआ—स्त्री० बहिन, २ फूफू ।

प्रा० बूंद—(सं०बिन्दु) स्त्री० छींटा, टपका, टपकन, क़तरा ।

प्रा० बूंदा—(सं० बिन्दु) पु० बड़ी बूंद, टपका । [ड़ी२ बूंदें गिरना ।

प्रा० बूंदाबांदी—बोल० मेह की थो-

प्रा० बूकना—क्रि० स० चूर चूर करना, बुकनी करना ।

प्रा० बूचा-पु० कनकटा ।

प्रा० बूझ—(सं० बोध, वा बुद्धि) स्त्री० समझ, बुद्धि, ज्ञान ।

प्रा० बूझना—(सं० बुध्=जानना) क्रि०स०समझना, जानना, सोचना।

प्रा० बूटा—पु० छोटा पेड़, झाड़, २ कपड़ापर काढ़ाहुआ फूलआदि ।

प्रा० बूढ़ा—(सं०वृद्ध)पु०वृद्ध, बुड्ढा, पुराना, बहुत उमर का, प्राचीन ।

प्रा० बूढ़ाघाग }
बूढ़ाखरांट } बोल० बहुत बूढ़ा ।

प्रा० बूता—पु० बल, जोर, शक्ति, सामर्थ्य । [चोकड़ ।

प्रा० बूर-स्त्री० भूसी, तुष, छिलका,

प्रा० बूरकेलड्डू—एक मिठाई जो गेहूं की चोकड़ से बनती है और उसके ऊपर शक्कर का गिलाफ़ चढ़ाते हैं और वह बहुत सस्ती बिकती है इस लिये काम देखने में बहुत अच्छा पर सचमुच निकम्मा हो उसको बोल चाल में बूर का लड्डू कहते हैं और जो लोग बूर का लड्डू बेचते हैं वे इस तरह पुकारते हैं कि "बूर का लड्डू जो खावे सो भी पछतावे, न खावे सो भी पछतावे"—और कोई कोई कहते हैं कि यह मिठाई कोई नहीं बेचता, न खाता है, न बनाता है पर इसी कहावत में बोलते हैं ।

प्रा० बूरा—पु० साफ़ की हुई चीनी, २लकड़ी और हाथी दांत का चूरा ।

प्रा० बे—अबे, अरे ।

प्रा० बेंग—(सं० व्यङ्ग, वि=बुरा, अङ्ग=शरीर) पु० मेंढक ।

प्रा० बेंट—पु० दस्ता, वह लकड़ी जो

कुल्हाड़ी आदिमें लगाते हैं।

प्रा० बेंड़ा—गु० तिर्छा,टेढ़ा, बांका।

प्रा० बेग—(सं०वेग, विज्=कांपना) पु० उतावली, फुर्ती, शीघ्रता, प्रवाह, क्रि० वि० जल्दी से, जोर से।

प्रा० बेगार—पु० सेंत, मुफ़्त, किसी मज़दूरको ज़बरदस्ती पकड़ना और उसको मज़दूरी नहीं देना या बहुत थोड़ी मज़दूरी देना।

प्रा० बेगारपकड़ना—बोल० ज़बरदस्ती से किसी मज़दूर को अथवा गाड़ीको बिनमज़दूरी दिये या थोड़ी मज़दूरी दिये पकड़ना।

प्रा० बेटा-पु० पुत्र, लड़का।

प्रा० बेड़ा—पु० घरनई, चौघड़ा।

प्रा० बेड़ापारकरनायालगाना—बोल० दुःख से छुटाना, दुःख दूर करना, २ उतारना, पारकरना।

प्रा० बेड़ापारहोना—बोल० दुःख से छूटना, २ सब चाह पूरी होना।

प्रा० बेण, बेणु (सं० वेणु, वेण्=बाजा बजाना) स्त्री० बांसुरी मुरली, २ बांस।

प्रा० बेत—(सं० वेत्र, अज्=जाना) स्त्री० एक तरह की लचकदार लकड़ी।

प्रा० बेधना—(सं० वेधक) क्रि०स० बींधना, छेदना।

प्रा० बेमात—(सं० विमाता, वि=विरुद्ध,माता=मा) स्त्री०सौतेलीमा।

प्रा० बेर—(सं०बदरि) पु० एकप्रकार का फल।

प्रा० बेल-(सं०बिल्व) पु०एक फल का नाम, २ (सं० वल्लि) स्त्री० बेली, लता, ३ वंश, औलाद, सन्तान।

प्रा० बेला—पु० एकपेंड़का नाम जिसका पुष्प फल सुगंधित होता है, २ कटोरा, ३ एक बाजेका नाम जो सारङ्गी केसा होताहै।

प्रा० बेलि, बेली (सं०वल्लि, वल्=घेरना) स्त्री० बेल, लता।

प्रा० बेवहरा, बेवहरिया (सं०व्यवहारिक) पु० लेन देन करनेवाला, रुपये उधार देनेवाला, महाजन।

प्रा० बेवहार—(सं०व्यवहार) पु० लेनदेन, लेवा देई, २ रीति रसम, ३ चाल चलन।

प्रा० बेसन—पु० चनेका आटा।

प्रा० बेसर—स्त्री० एक गहना जो नाक में पहना जाता है।

प्रा० बेस्वा—(सं० वेश्या) स्त्री० कंचनी, पतुरिया, गणिका, नगर नारी, कसबी, रंडी।

प्रा० बेहड़—गु० नाबराबर, ऊंच नीच, ऊंचा नीचा।

प्रा० बैंगन-पु० वृन्ताक, भांटा।

प्रा० बैंगनी } (बैंगन) गु० कुछसि-
बैंजनी } याही लियेलालरंग।

प्रा० बैंदी-(सं० बिन्दु) स्त्री० टिकली, बिंदी, टीकी, २ एक गहना जिसको स्त्रियां ललाटपरपहनती हैं।

प्रा० बैजन्तीमाल-(सं० वैजयन्ती माला, वैजयन्ती=जीतनेवाली, माला=फूलोंका हार) स्त्री० पचरंगीमाला, विष्णुभगवान्केपहिननेकीमाला, जो नीलम, मोती, माणिक, पुखराज, और हीरा, इन पांचरत्नोंसे बनतीहै।

प्रा० बैठक } (सं० बैठना) स्त्री०
बैठका } बैठने की जगह।

प्रा० बैठना-(सं० उपविष्ट) क्रि० अ० आसन मारना, बैठजाना, २ जमना, ३ दीवार आदिका गिर पड़ना, ४ मातमपुरसी को जाना ५ बेकाम होना।

प्रा० बैठजाना-बोल० गिरपड़ना।

प्रा० बैठरहना-बोल० छोड़ देना, आश तोड़ना, सुस्त होना।

प्रा० बैठाना } क्रि० स० बैठने
बैठारना } की आज्ञा देना,
बैठालना } बिठलाना, जमाना।

प्रा० बैद-(सं० वैद्य) पु० रोगियों का इलाज करनेवाला, मिश्र, हकीम, चिकित्सक, दवादारू करनेवाला।

प्रा० बैदक-(सं० वैद्यक) पु० इलाज करने की विद्या, चिकित्सा करने की विद्या, दवादारू करने की विद्या, इलमे हिकमत, डाक्टरी।

प्रा० बैन-(सं० वाणी, वा वचन) पु० बोल, वचन, कलाम।

प्रा० बैना-पु० एक गहना जो ललाट पर पहनाजाताहै, २ बखरा, भाजी।

प्रा० बैपार-(सं० व्यापार) पु० वणिज, लेनदेन, सौदागरी।

प्रा० बैपारी-पु० सौदागर, तज्जार, महाजन।

प्रा० बैयरबानी-(सं० वीरवनिता) चारोवर्णकी स्त्रीको कहते हैं।

प्रा० बैर-(सं० वैर) पु० दुश्मनी, शत्रुता, द्वेष, विरोध।

प्रा० बैरपड़ना-बोल० दुश्मनी हो जाना, विरोध पड़ना।

प्रा० बैरलेना-बोल० बदलालेना।

प्रा० बैरख-(फा० बैरक़) पु० झंडा, ध्वजा, पताका।

प्रा० बैरण-(सं० वैरिणी) स्त्री० दुश्मन स्त्री, विरोधनी।

प्रा० बैरागण-(सं० वैरागिणी) स्त्री० योगन बैरागी स्त्री।

प्रा० बैल-(सं० बलीवर्द) पु० एक चौपाये का नाम, बर्द, २ मूर्ख, अज्ञानी, भोंदू।

प्रा० बैस-(सं० वयस, वय=जाना वा अज=जाना) स्त्री० उमर, अवस्था, किशोर बैस=जवानी की शुरुअ अवस्था।

प्रा० बैस-(सं० वैश्य) पु० तीसरा वर्ण, बनियां, २ राजपूतों की एक

(१) बांसीसीपीसुकरी करीदरीमठशाल । पटपटमुक्तापोहिये सो बैजन्तीमाल ॥ १ ॥

जाति जिसके नाम से अवध के पास का बहुत सा देश बैसवाड़ा कहलाता है।

प्रा० बैसंदर-(सं० वैश्वानर, विश्व=संसार वा सब, नर=मनुष्य, अर्थात् जिसको सब मनुष्य चाहते हैं पु० आग, आगी, अग्निदेवता।

प्रा० बैसाख-(सं० वैशाख) पु० एक महीनेका नाम, दूसरा महीना।

प्रा० बोझ-पु० भार, बोझा।

प्रा० बोझसिरपरहोना-बोल० कोई कठिन काम का आ जाना।

प्रा० बोझल-गु० भारी, वज़नी।

प्रा० बोटी-स्त्री० मांसका छोटा टुकड़ा।

प्रा० बोटीबोटीफड़कना-बोल० बहुत चालाक होना, फरफंदी होना।

प्रा० बोदा-गु० निर्बल, नामर्द।

सं० बोध-(बुध्=जानना) पु० ज्ञान, समझ, बुद्धि।

सं० बोधक-(बुध्=जानना) क० पु० शिक्षक, समझानेवाला, जतानेवाला, नासेह, नसीहत करनेवाला।

सं० बोधन-(बुध्=जानना) भा० पु० जतलाना, ज्ञान, बोध, विज्ञापन।

सं० बोधनी } बोधिनी } (बुध्=जानना) स्त्री० सिखानेवाली, बोधकरानेवाली, नसीहत करनेवाली।

सं० बोधनीय } बोधित } बोधितव्य } बोध्य } कर्म० बोधनाई, समझाया गया, समझाने योग्य, नसीहत किया गया।

प्रा० बोना-(सं० वपन, वप्=बोना) क्रि० स० बीज डालना।

प्रा० बोरना-क्रि० स० डुबाना, बुड़ाना। [थैला, गोन।

प्रा० बोरा-पु० एक तरह का बड़ा

प्रा० बोर्डिङ्गहौस-पु० छात्रालय, तालिब इल्मोंके रहनेका मकान।

प्रा० बोल-(सं० बोलना) पु० वचन, बात, २ गीतका शब्द।

प्रा० बोलचाल-भा० पु० गुफ़्तगू, बात चीत।

प्रा० बोलना-(सं० वद्, वा वच्=कहना) क्रि० अ० बात करना, कहना, २बजना, आवाजनिकलना।

प्रा० बोलबाला (बोल=वचन और फ़ारसी शब्द बाला का अर्थ ऊपर) पु० आशीर्वाद, बोलबाला होना, बोल० भला होना, फलना, बढ़ना।

प्रा० बोली-(बोलना) स्त्री० वाणी, भाषा, बात।

प्रा० बोलीठोलीसुनाना-बोल० ताना देना।

प्रा० बोहित-स्त्री० नाव, जहाज।

प्रा० बौछाड़ } बौछार } स्त्री० मेह की बूंदें जो हवा के कारण

तिरछी पड़ती हैं ।

सं० बौद्ध—(बुद्ध)पु० बौद्धमती, जैनी विष्णु का अवतार, जगन्नाथ जी ।

प्रा० बौरहा, बौराहा, बौरा—(सं० बातूल) गु० दीवाना, पागल, सिड़ी, बावला ।

प्रा० बौराना—क्रि० अ० पागल होना।

प्रा० ब्याना—(सं० वयन, वी=जनना) क्रि० स० बच्चा देना, जनना ।

प्रा० ब्यापना—(सं० व्यापन, वि=बहुत, आप्=फैलना) क्रि० अ० सब जगह फैलना, फैल जाना ।

प्रा० ब्यालू—पु० रात का खाना ।

प्रा० ब्याह—(सं० विवाह) पु० शादी, विवाह, गंठबन्धन, पाणिग्रहण।

प्रा० ब्याहरचाना—बोल० शादी की रीतें रसमें करना ।

प्रा० ब्याहलाना—बोल० दुलाहिन को घरमें लाना ।

प्रा० ब्याहता—(सं० विवाहिता) स्त्री० गु० ब्याही हुई स्त्री ।

प्रा० ब्याहा—(सं० विवाहित) गु० ब्याहा हुआ । [छांट, रडौल ।

प्रा० ब्योंत—पु० कपड़े का तराश,

प्रा० ब्योंतना—क्रि० स० कपड़े को तराशना, या कतरना ।

प्रा० ब्योपार—(सं० व्यापार) पु० बणिज, लेनदेन, सौदागरी ।

प्रा० ब्योपारी—पु० महाजन, सौदागर ।

प्रा० ब्योमासुर—(सं० व्यामासुर, व्योम=आकाश, असुर=राक्षस) पु० एक राक्षस का नाम जो कंस का मंत्री था ।

प्रा० ब्योरा, ब्यौरा—पु० समाचार, वृत्तान्त, बात, २ पता, निशान, ३ भेद ।

प्रा० ब्योहार, ब्यौहार—(सं० व्यवहार) पु० काम, धंधा, ब्योपार, लेनदेन, २ रीत भांत, चलन ।

प्रा० ब्रज—(सं० व्रज व्रज्=जाना) पु० मथुरा का ज़िला जिसमें गोकुल, वृन्दावन आदि हैं और १६८ मील के घेरे में है—ब्रजमंडल=ब्रजका ज़िला।

प्रा० ब्रजबाला—(सं० व्रजबाला) स्त्री० ब्रजकी स्त्री, गोपी ।

प्रा० ब्रजभाषा—(सं० व्रजभाषा। स्त्री० ब्रजकी बोली ।

प्रा० ब्रह्म, ब्रह्म—(बृह्=बढ़ना) पु० परमेश्वर, सर्वशक्तिमान, सर्वव्यापी, परमात्मा, आदि पुरुष, २ वेद, ३ तत्त्व, ४ तप, ५ ब्रह्मा, ६ ब्राह्मण ।

प्रा० ब्रह्मअस्त्र—(सं० ब्रह्मास्त्र) पु० ब्रह्माका दिया हुआ अस्त्र, ब्रह्मबाण।

सं० ब्रह्मघातक, ब्रह्मघ्न—(ब्रह्म=ब्राह्मण, हन्=मारना) क० पु० ब्राह्मण को मारनेवाला, ब्रह्म हत्यारा।

सं० ब्रह्मचर्य्य—(ब्रह्म=वेद, चर=चलना, अर्थात् वेद पढ़ने के लिये फिरना) पु० ब्रह्मचारी का धर्म ।

सं० ब्रह्मचारी—(ब्रह्म=वेद, चर्=चलना, जो वेद पढ़ने के लिये फिरता है) पु० पहला आश्रमी, वेद पढ़ने वाला, विद्यार्थी,–मनुष्यकी अवस्था के चार भाग किये हैं उनमें से पहली २५ वर्ष तक अवस्था को ब्रह्मचर्य्य कहते हैं और उस अवस्था में वह केवल वेद शास्त्र पढ़ता है और ब्याह नहीं करता ।

सं० ब्रह्मज्ञ—(ब्रह्म=परमेश्वर, ज्ञ=जानना) पु० परमेश्वर को जानने वाला, ऋषि, मुनि ।

सं० ब्रह्मज्ञान—(ब्रह्म + ज्ञान) पु० परमेश्वर का ज्ञान, सच्चा ज्ञान ।

सं० ब्रह्मण्य—(ब्रह्म) पु० विष्णु, गु० ब्राह्मण का वा ब्राह्मण के योग्य, २ ब्रह्मा का ।

सं० ब्रह्मभोज, ब्रह्मभोजन—(ब्रह्म=ब्राह्मण, भोज वा भोजन खिलाना) पु० ब्राह्मणोंको खिलाना ।

सं० ब्रह्मन्—पु० वेद, तप, सत्य, तत्त्व, निर्गुणेश्वर, विशुद्ध, विप्र, ब्राह्मण ।

सं० ब्रह्मपुरी—स्त्री० सुमेरुपर्वत पर ब्रह्मा की पुरी ।

सं० ब्रह्मभूति—स्त्री० ब्राह्मणता, वेदाधिकार, ब्रह्मा का ऐश्वर्य्य ।

सं० ब्रह्मयोग—(ब्रह्म + योग) पु० परमेश्वर की प्रार्थना, भक्ति, उपासना आदि ।

सं० ब्रह्मरात्रि—(ब्रह्म=ब्रह्मा, रात्रि=रात) स्त्री० ब्रह्मा की रात जिसमें १००० युग अथवा मनुष्यों के २१६०००००० बरस बीत जाते हैं, २ छः महीनेकीरात जिसमें श्रीकृष्ण ने रास किया था ।

सं० ब्रह्मर्षि—(ब्रह्म + ऋषि) पु० परमेश्वरका ध्यान करनेवाला और वेद जाननेवाला ऋषि जैसे वशिष्ठ आदि ।

सं० ब्रह्मर्षिदेश—पु० आर्यावर्त, कुरुक्षेत्र, मत्स्यदेश, पाँचालदेश, मथुरा देश, सूरसेनदेश ।

सं० ब्रह्मलोक—(ब्रह्म=ब्रह्मा, लोक=स्थान) पु० ब्रह्मा का स्थान, सत्यलोक ।

सं० ब्रह्मवर्चस्—पु० ब्रह्मतेज ।

सं० ब्रह्मबाण—(ब्रह्म + बाण) पु० ब्रह्मअस्त्र, ब्रह्मा का बाण ।

सं० ब्रह्मवादी—(ब्रह्म=परमेश्वर, बादी=कहनेवाला, वद्=कहना) पु० वेदान्ती, ब्रह्मज्ञानी ।

सं० ब्रह्मशेष (ब्रह्म=ब्राह्मण, शेष=बचा हुआ) पु० ब्राह्मणों के खाने के पीछे जो खाना बचरहे ।

सं० ब्रह्मसूत्र-पु० वेदान्त, २ यज्ञोपवीत ।

सं० ब्रह्मस्वरूप—(ब्रह्म=परमेश्वर, स्वरूप=रूप)गु०परमेश्वरके बराबर, परमेश्वर का रूप ।

सं० ब्रह्महा—(ब्रह्म+हन्)क० पु० ब्रह्मघाती, ब्राह्मण का मार डालने वाला ।

सं० ब्रह्महत्या-(ब्रह्म=ब्राह्मण,हत्या= मारना) स्त्री० ब्राह्मणको मारना ।

सं० ब्रह्मा-(बृह्=बढ़ना)पु० सृष्टिको पैदा करनेवाला देवता, विधाता, विधना, ब्रह्मा के चार मुंह हैं जिन से चार वेद निकले हैं और ब्रह्मा का वाहन हंस है ।

सं० ब्रह्माक्षर—(ब्रह्म+अक्षर)पु० तीनों देवताओं का मन्त्र, ओम् ।

सं० ब्रह्माणी—(ब्रह्मा) स्त्री०ब्रह्मा की स्त्री ।

सं० ब्रह्माण्ड—(ब्रह्म+अण्ड)पु० जगत्,सृष्टि,भूमण्डल,सबसृष्टि,२चांदि, शिर का बिचला भाग, कासय सिर ।

सं० ब्रह्मादिक—(ब्रह्म+आदिक) पु० ब्रह्मा और सब देवता ।

सं०ब्रह्मावर्त—(ब्रह्म+आवर्त)पु० स्थान का नाम जो बिठूर के नाम से प्रसिद्ध है ।

सं०ब्रह्मासन—(ब्रह्म+आसन)पु० परमेश्वर का ध्यान करते समय का आसन, ऋषिमुनियों का ध्यान करते समय बैठने का ढंग ।

सं०ब्राह्मण—(ब्रह्म अर्थात् जो ब्रह्म का अथवा वेद का जानने वाला) पु० पहले वर्णके मनुष्य,विप्र,द्विज ।

सं०ब्राह्मणी—स्त्री० ब्राह्मणकी स्त्री ।

सं० ब्राह्मय—(सं० ब्रह्म) पु० ब्रह्म की पूजा, परमेश्वर की पूजा ।

सं०ब्राह्मयमुहूर्त्त-(ब्राह्मय+मुहूर्त्त) पु०प्रभात,भोर,बिहान,प्रातःकाल, पोह,सूर्य निकलनेकेपहलेका समय ।

अं० ब्रिटिश—स्त्री० अंगरेजी ।

—:०:—

(भ)

सं० भ—(भा=चमकना) पु० नक्षत्र, ग्रह, राशि, शुक्राचार्य्य, दीप्ति, भरद्वाज, भ्रमर ।

प्रा० भंभोरना—क्रि० स० काट खा-ना, फाड़खाना (जैसे कुत्ता) ।

प्रा० भंवर—(सं० भ्रमर, भ्रम्=घू-मना) पु० भौंरा, २ चक्र,आवर्त्त ।

प्रा० भंवरा—(सं० भ्रमर, भ्रम् घू-मना)पु० एक प्रकारकी बड़ीमक्खी, भंवर, अलि, चंचरीक ।

प्रा० भकसी—स्त्री० कैद करने के लिये एक बहुत छोटा और तंग और अंधेरा मकान । [निर्बुद्धि ।

प्रा० भकुवा—गु० मूर्ख, भोंदू, कुपढ़,

सं० भक्त—(भज्=सेवा करना) क० पु० भक्ति करनेवाला सेवक ।

२ भात, ओदन ।

सं० भक्तकार—क०पु० रसोई बनाने वाला, सूपकार, रसोईदार ।

सं० भक्तवत्सल—(भक्त+वत्सल) पु० भक्तोंपर दयाकरनेवाला, परमेश्वर ।

सं० भक्ति—(भज्=सेवाकरना, पूजा, आराधना, विश्वास, परमेश्वर में अथवा अपने राजा या मालिक में प्यार, नवधाभक्ति १ श्रवण २ कीर्तन ३ अर्चन ४ वन्दन ५ स्मरण ६ निवेदन ७ सख्य ८ दास्य ९ सेवन ।

प्रा० भक्तिवन्त—(सं०भक्तिमत्)पु० जिसके मनमें भक्तिहो, भक्त,सेवक ।

प्रा० भक्ष—(सं०भक्ष्य,भक्ष्=खाना) पु० खाना, र्म० खानेयोग्य ।

सं० भक्षक—(भक्ष्+अक) क० पु० खानेवाला, खाऊ, पेटू, खवैया ।

सं० भक्षण—(भक्ष्+अण) भा० पु० भोजन, आहार ।

सं० भक्षणीय—(भक्ष+अनीय) र्म०पु०खानेयोग्य, खानेकीचीज़ ।

सं० भक्षित—(भक्ष+इत) र्म० पु० खायाहुआ ।

सं० भक्ष्य—(भक्ष+य, भक्ष्=खाना) र्म० पु० खानेयोग्य, पु० खाना, भोजन ।

सं० भग—(भज्=सेवा करना) पु० योनि, स्त्रीचिह्न, २ सुभाग, ऐश्वर्य्य, ३ इच्छा, चाह, ४ शोभा, सुन्दरता, ५ सूर्य, ६ चांद ।

प्रा० भगत-(सं०भक्त)क०पु०सेवक, भक्तिकरनेवाला, २नृतक,गानेवाला।

प्रा० भगतखेलना—बोल० स्वांग लाना, नकल बनाना ।

प्रा० भगतन—(भगत) स्त्री० वेश्या, कंचनी, पतुरिया, नाचनेवाली ।

सं० भगदत्त—पु० कामरूप देशाधिप, नाम राजाका जो महाभारथ में प्रसिद्ध था ।

सं० भगवत, भगवन्त, भगवान—(भग=ऐश्वर्य्य, वत्=वाला) पु० ईश्वर, परमेश्वर,पु० ऐश्वर्य्य आदि गुणयुक्त ।

सं० भगवती—स्त्री० चण्डी, देवी, ऐश्वर्य्यादि गुणयुक्ता ।

प्रा० भगवाँ—पु० गेरुवा कपड़ा,गेरू मिट्टी में रंगाहुआ कपड़ा ।

सं० भगिनी—(भज्=सेवाकरना) स्त्री० बहन, बहिन, सहोदरा ।

सं० भगीरथ-(भग=ऐश्वर्य)पु० एक सूर्यवंशी राजा का नाम जो अपने तप के प्रभाव से गंगा को स्वर्ग से पृथ्वीपर लाया, दिलीप का पुत्र ।

सं० भग्न—(भञ्ज=तोड़ना)र्म०पु०

टूटाहुआ, फूटाहुआ, नष्ट, २ हराया हुआ, जीताहुआ ।

सं० भग्नाश-(भग्न=टूटी, आश=आसाजिसकी) गु० निराश, न उम्मैद

सं० भग्नी-स्त्री० स्वसा, बहिन ।

सं० भङ्ग-(भंज्=तोड़ना) भा० पु० तोड़ना, खंडन, २ लहर, तरंग, ३ हार, पराजय, ४ छेद, ५ डर, स्त्री० भांग, सबजी, एकप्रकारकी नशीली पत्ती।

प्रा० भंगन-स्त्री० मेहतरानी, पाखाना साफ़ करनेवाली ।

प्रा० भंगी-पु० मेहतर, पाखाना साफ़ करनेवाला, झाडूकश।

सं० भंगुर-(भंज्=तोड़ना) गु० टेढ़ा, बांका, २ नाश होने वाला, नष्ट, पु० नदी की बंकाई ।

प्रा० भंगेरा-(भङ्ग) पु० बहुत भंङ्ग पीनेवाला ।

प्रा० भचकना-(सं० भयचकित) क्रि० अ० अचंभे में आना ।

सं० भजन-(भज्=सेवा करना) क्रि० स० माला फेरना, परमेश्वर का नाम रटना, जप ।

प्रा० भजना-(सं० भजन) क्रि० स० जपना, ध्यान, माला फेरना ।

प्रा० भजना } क्रि० अ० भगना, चला
भजिजाना } जाना, दौड़जाना ।

सं० भज्यमान-र्म० पु० सेव्यमान, सेवित, सेवा कियागया ।

सं० भञ्जक-(भंज्+अक, भंज्=तोड़ना) कृ० पु० तोड़नेवाला, खंडन करनेवाला ।

सं० भञ्जन-(भञ्ज्+अन) भञ्ज्=तोड़ना) भा० पु० तोड़न, फोड़न, खंडन, गु० तोड़नेवाला ।

सं० भञ्जनहार-(कृ० पु०) तोड़नेवाला।

सं० भञ्जित-(भंज्+इत) र्म० पु० खण्डित, टूटाहुआ ।

सं० भट-(भट्=पोषना) पु० वीर, योधा, लड़ाका, बहादुर, शूर, मल्ल ।

प्र० भटकना-क्रि० अ० डांवा डोल फिरना, इधर उधर वृथा फिरना, भूलना, भ्रमना ।

प्रा० भटकाना-क्रि० स० भुलाना, भ्रमाना ।

सं० भटित्र-(भट्+इत्र) पु० शूल, पक्व माँस, कबाब ।

प्रा० भटियारा } (भट्टी हारा)
भठियारा } पु० खाना पकानेवाला ।

सं० भट्ट-(भट्=पोषना) मरहटे ब्राह्मणों की एक पदवी, २ विद्यावान्, पण्डित, भाट ।

सं० भट्टार-पु० सूर्य्य, पूज्य ।

सं० भट्टारक-(भट्ट+ऋ+अक ऋ=जाना) पु० देवता, तपस्वी, राजा, सूर्य्य, विदूषक, भाँड़ गु०

पापरहित, पुण्यवान्।

प्रा० भट्टी } (सं० भ्राष्ट्र, भ्रस्ज्= भठ्ठी } भूंजना) स्त्री० बड़ा चूल्हा, भाड़, २ पजावा। [नाव।

प्रा० भड़—पु० एक तरह की बड़ी

प्रा० भड़क—स्त्री० चमक, दमक, झलक, दिखनौट, २ चौंक।

प्रा० भड़कना—क्रि० अ० चमकना, चौंकना, २ आगका लूका उठना।

प्रा०भड़भूंजा (सं० भ्राष्ट्र भर्जक, भ्राष्ट्र=भाड़, भर्जक=भूंजनेवाला, भ्रस्ज्=भूंजना) पु० भाड़ झोंकने वाला, कांदू।

प्रा० भणना-(सं०भण्=बोलना,या कहना) क्रि०स० बोलना, पढ़ना।

सं० भणित-(भण्=बोलना) कर्म० पु० कहा हुआ, कहताहुआ।

प्रा० भंटा—(सं० भण्टाकी, भटि= पोषना) पु० बैंगन, वृन्ताक।

सं० भण्ड—क०पु०कौतुकी, भांड़।

सं० भण्डक-पु० खंजनपक्षी,खड़ेचा।

सं० भण्डन-(भड् + अन, भण्ड= बोलना) भा०पु०प्रतारण,छलना।

सं०भंडूर—भा०पु०प्रवञ्चना,छलना।

प्रा० भंडा-(सं० भाण्ड) पु०मटका।

प्रा० भंडार—(सं०भाण्डागार,भाण्ड =बरतन, आगार=घर) पु० खज़ाना, कोठा, कोठार, खत्ता।

प्रा० भंडारी—(भंडार) पु० कोठारी, रोकड़िया, खज़ांची।

प्रा० भंडेला—(सं० भण्ड, भडि= ठट्ठा करना) पु० भांड़।

प्रा०भतार-(सं० भर्त्ता) पु० पति, स्वामी, भर्त्ता।

प्रा० भतीजा (सं० भ्रातृज, भ्रातृ =भाई, जन्=पैदा-होना) पु० भाई का बेटा, भाईका लड़का।

प्रा०भदेशल } गु० भोंड़ा, कुडौल, भदेशा } गवांरू,अनाड़ी।

प्रा० भद्दा—गु० मूर्ख, अज्ञानी, भोंदू, गावदी,२ बेरस, मोटे कामकी चीज़।

सं० भद्र-(भदि=कल्याण होना) क० पु० नेक, दोस्त, भाग्यवान्, श्रेष्ठ, उत्तम, पु० कल्याण, मंगल, २ शिव, मुबारक।

प्रा०भद्रहोना—बोल० शिरके बाल और डाढी मूछके बाल मुंडाना, (हिन्दुओं में एक रीतिहै कि जब कोई मरता है तब अथवा तीर्थ पर बाल मुड़ाते हैं)।

सं० भद्रक—पु० लाभ, फ़ायदा, २ रस, मज़ा, ३ भलाई।

सं० भद्रकाली—(भद्र=कल्याणरूप, काली, दुर्गा) स्त्री० दुर्गा, महामाया, काली देवी।

सं०भद्रश्री—स्त्री० चन्दन, केसर, कुंकुम, मंगल, शोभा, शृंगार।

सं० भद्रा—(भदि=सुखी होना)स्त्री०

श्रीकृष्ण की एक स्त्री का नाम, २ ज्योतिष में दूसरी, सातवीं, और बारहवीं तिथि, व्योमनदी, अशकुन।

प्रा० भनक-पु० आवाज, शब्द।

प्रा० भबकी-स्त्री० धमकी, घुरकी, झिड़की, डाट।

प्रा० भभकना-क्रि० अ० आग लगना, २ आग का लूका उठना, ३ क्रोध में आना, जल मरना, ४ घोड़े का खूब वेग से दौड़ना।

प्रा० भभूका-पु० फूल, ज्वाला, गु० खूब लाल (जैसे जलताहुआ कोयला) २ बहुत चमकदार, सुन्दर।

प्रा० भभूत } भभूती } (सं० विभूति) स्त्री० राख, भस्म जिसको योगी संन्यासी अपने शरीर में मलते हैं। [खौफ त्रास।

सं० भय-(भी=डरना) पु० डर, शंका,

प्रा० भयखाना-बोल० डरना।

प्रा० भयकारक } भयंकर } (भय=डर, कृ=करना) क० पु० डरावना, भयानक, भयजनक, खौफ़नाक।

प्रा० भयचक } भैचक } (सं० भय चकित, भय=डर, चकित=अचंभित) गु० डराहुआ, घबराया हुआ, भयातुर, भयभीत।

सं० भयभीत-(भी=डरना) र्म० पु० डराहुआ, घबरायाहुआ, भयातुर।

सं० भयवान् (भय=डर, वान्=वाला) गु० डरा हुआ, भयातुर।

प्रा० भया } भयौ } (सं० भू=होना) क्रि० अ० हुआ।

सं० भयातुर-(भय=डर, आतुर=घबराया हुआ) गु० डर से घबराया हुआ, भयचक।

सं० भयानक-(भी=डरना) गु० डरावना, भयंकर, नौरसों में से एक रसका नाम।

सं० भयापह-(भय+अप+हन्=नाशकरना) क० पु० भयनाशक, डर छुड़ानेवाला।

प्रा० भयावना-(सं० भयानक) गु० डरावना, भयंकर, भयानक।

सं० भयावह-वह्=जाना) क० पु० भयंकर, भयानक, भयदायक, खौफ़नाक।

सं० भर (भृ=भरना) गु० पूरा, मुंहामुंह, सब, सारा, तमाम।

प्रा० उमरभर-बोल० सारी उमर।

सं० भरण-(भृ=पालना) भा० पु० भरना, पोषण, पालन, रक्षा, बचाव, तनख़्वाह।

सं० भरणी-(भृ=भरना) स्त्री० एक नक्षत्रका नाम, २ सांपका झड़ाना।

सं० भरणीय-र्म० पु० पोष्य, पालन योग्य।

सं० भरत (भृ=भरना, पालना) पु० राजा दशरथ का बेटा, २ एक राजा का नाम जिसके नाम से यह देश भरतखण्ड अथवा भारतवर्ष कहलाता है, दुष्यन्त का पुत्र ।

प्रा० भरत—पु० एक धातु जिसमें तांबा, जस्ता, और सीसा मिला होता है।

सं० भरताग्रज—(भरत + अग्रज) पु० श्रीरामचन्द्रजी ।

सं० भरतपुत्रक—पु० विदूषक, भांड, बहुरूपिया, बाजीगर ।

सं० भरद्वाज—पु० एक मुनि का नाम जो बृहस्पति का बेटा था, २ एक पक्षी का नाम, खड़ैवा ।

प्रा० भरना—(सं० भरण) क्रि० स० पूरा करना, २ महसूल या ऋण चुका देना, ३ बन्दूकमें गोली आदि डालना, ४ सहना, पाना जैसे दुःख भरना, बोल० दुःख पाना, दुःख सहना ।

प्रा० भरपाना—क्रि० स० वसूल पाना, २ जब कोई आदमी निराश होता है तब भी वह बोलता है कि "मैंने भर पाया"

प्रा० भरपूर—गु० खूब भरा हुआ ।

प्रा० भरम—(सं० भ्रम) पु० संदेह, धोखा, भूल, चूक, २ यश, नामवरी।

प्रा० भरमजाना—बोल० किसी पर किसी बात का संदेह होना ।

प्रा० भरमखुलना, याखुलजाना-बोल० भेद खुल जाना, मर्य्यादा खुल जाना ।

प्रा० भरमखोलदेना—बोल० छिपी बातको प्रकट करदेना ।

प्रा० भरमगँवाना—बोल० अपने यशको बट्टा लगाना, आबरू खोना ।

प्रा० भरमनिकलजाना—बोल० भेद खुल जाना ।

प्रा० भरमाना—(सं० भ्रम=धोखा) क्रि० स० धोखा देना, भुलाना, फुसलाना, ललचाना । [मुंहा मुंह ।

प्रा० भरा—(भरना) गु० पूरा, पूर्ण,

सं० भरित—(भृ=भरना) कर्म० पु० पूरित, पालित, पोषित, रक्षित ।

सं० भरू—कृ० पु० महादेव, विष्णु पिता, स्वामी ।

प्रा० भरोसा—(सं० भद्राशा, भद्र= अच्छी, आशा=आश) पु० आशा, आस, विश्वास, उम्मेद ।

सं० भर्ग—(भृज्=चमकना) पु० महादेव, ब्रह्मा, ज्योति, तेज, प्रकाश, किरण । [भूंजना, पचाना ।

सं० भर्ज्जन—(भर्ज्ज्=भूंजना) पु०

सं० भर्त्ता—(भृ=पालना, पोसना) पु० पति, स्वामी, खाविंद, गु० पालनेवाला, प्रतिपालक ।

सं० भर्त्सक—(भर्त्स=अक) कृ० पु०

तिरस्कारक, निन्दक ।

सं० भर्त्सन—भा० पु० कुत्सा, निन्दा।

सं० भर्तृहरि—पु० विक्रमादित्य राजा का भाई ।

प्रा० भल—(सं० भद्र) गु० भला, उत्तम, श्रेष्ठ, अच्छा ।

प्रा० भलमनसाई, भलमनसात, भलमनसी } स्त्री० अच्छा आदमी होना, इन्सानियत ।

प्रा० भल—पु० तरफ़, ओर से, जैसे शिरके भल=शिर की तरफ़ ।

प्रा० भला—(सं० भद्र) गु० अच्छा, उत्तम, श्रेष्ठ, २ चंगा ।

प्रा० भलाकरभलाहो, सौदाकर नफ़ाहो—कहा० जैसा करेगा वैसा पावेगा । [आदमी ।

प्रा० भलाआदमी—बोल० अच्छा

प्रा० भलामानना—बोल० अहसान मानना, भलाई मानना ।

भलाचङ्गा-बोल० निरोग, मोटा ताज़ा।

प्रा० भलेआये—बोल० बहुतदेरमेंआये।

प्रा० भलाई—भा० स्त्री० नेकी, नेकनामी, अच्छापन, क्षेम, कुशल ।

प्रा० भलाईलेना—बोल० लोगों केसाथ अहसानकरना, नेकीकरना।

प्रा० भलाईरहना—बोल० सुयश रहना, नेक नाम रहना ।

सं० भल्ल—पु० भाला, बरछा, रीछ ।

सं० भल्लुक, भल्लूक } पु० रीछ, भालू ।

सं० भव—(भू=होना) पु० संसार, जगत्, २ जन्म, ३ कुशल, क्षेम, मङ्गल, ४ पाना, प्राप्ति, ५ शिव, महादेव । [आप का ।

सं० भवदीय—गु० त्वदीय, तुम्हारा,

सं० भवन—(भू=होना) पु० घर, स्थान, बास, भाव, सत, चिन्तन ।

सं० भवन्त—पु० आप का तुम्हारा, समय, काल, गु० पूज्य, श्रेष्ठ, उत्तम, प्रधान ।

सं० भवन्ति—क० पु० समय वर्त्तमान काल, पूजा का समय, श्रेष्ठ, पूज्य ।

सं० भवभूति—पु० नाटक, मालती माधव का बर्णन, नकुल, न्योला, स्त्री० संसार की विभूति, संसार का ऐश्वर्य ।

सं० भवसमुद्र, भवसागर } (भव=संसार, समुद्र वा सागर=समन्दर) पु० संसार रूपी समुद्र, संसार सागर ।

सं० भवादृश—(भव + आदृश) गु० आपके तुल्य, तुम्हारे समान, आप के योग्य ।

सं० भवानी—(भव=शिव) स्त्री० शिव की स्त्री, शिवरानी, पार्वती, दुर्गा ।

सं० भवार्णव—(भव=संसार, अर्णव

समुद्र)पु० संसार समुद्र,भवसागर।

सं० भवितव्य-(भू=होना) भा० स्त्री० होनेवाला, होनहार।

सं० भवितव्यता-(भवितव्य) भा०स्त्री०होनहार,२ भाग्य,भाग।

सं० भविता-कृ० पु० होनहार,होनेवाला, गु० पूज्य, श्रेष्ठ।

सं० भविष्णु-कृ० पु० होनेवाला।

सं० भविन-कृ० पु० बात करने वाला, मुतकल्लिम।

सं० भविष्य-(भू=होना) गु० होनहार, होनेवाला, जो होगा।

सं० भविष्यत्-(भू=होना) पु० आनेवाला समय, गु० होनहार।

सं०भविष्यद्वक्ता-(भविष्यत्=होनहार,वक्ता=कहनेवाला) कृ० पु० भविष्यत्कालकीबात जाननेवाला, आगमज्ञानी,होनहार जाननेवाला।

सं० भविष्योन्नति-(भविष्य+उन्नति) स्त्री० आगामी वृद्धि, होने वाली तरक्की, आयन्दा तरक्की।

सं० भव्य-(भू=होना)गु० भागवान, होनहार, योग्य, शुभ, सच्चा।

सं० भषी-(भष्=भूंकना) कृ० पु० कुत्ता, श्वान।

सं० भस्त्रा-स्त्री० चमड़े की धौंकनी।

सं० भस्म-(भस्=चमकना) स्त्री० राख, क्षार, भभूत।

सं० भस्मक-(भस्म=राख, क=करना) कृ० पु० बहुभख, रोग, बहुत भोजन करनेवाला।

सं० भस्मसात्-अव्य० सर्वभस्म, सब [जलगया।

सं० भा-(भा=चमकना) स्त्री० चमक, प्रकाश, शोभा, सुन्दरता, पु० सूर्य।

प्रा० भांग-(सं० भङ्गा, भञ्ज्=तोड़ना)स्त्री० बूटी, भंग,विजया, सबजी।

प्रा० भांजना-(सं० भंजन, भंज्=तोड़ना) क्रि० स० तोड़ना, मिलाना, जैसे रस्सी का।

प्रा० भांजा } (सं० भगिनाज, या
भानजा } भागिनेय) स्त्री० बहिन का बेटा।

प्रा० भांजी } (सं० भागिनेयी) स्त्री०
भानजी } बहन की बेटी।

प्रा० भांजी-(सं० भञ्जनी, भञ्ज्=तोड़ना) स्त्री० रुकाव, रोक।

प्रा० भांजीमारना-बोल० रोकदेना, बन्दकरना।

प्रा० भांड़-(सं० भण्ड, भड़ि=हँसी करना) पु० बहुरूपिया, स्वांग करनेवाला।

प्रा० भांड़ना-(सं० भण्डन, भाड़ि=बुरा कहना) क्रि० स० गाली देना, बुरा भला कहना।

प्रा० भांड़ } (सं० भाण्ड, भा=च-
भांड़ा } मकना)पु० बरतन, हंडा।

प्रा० भांत } स्त्री० डौल, ढब, रीत,
भांति } प्रकार, तरह।

प्रा० भांतभांत-बोल० तरह तरह का, नाना प्रकार का, क़िस्म क़िस्म के ।

प्रा० भांवर,पु० } (सं०भ्रम्=घूमना)
भावरी, स्त्री० } ब्याह में दुलहिन को दूलहे के चारों ओर सात बार घुमाना, या दुलहा दुलहिन का वेदी की परिक्रमा देना, २ फेर, घुमाव ।

प्रा० भाई-(सं० भ्राता) पु० एक बाप का बेटा, मा जाया भैया, २ संगी, साथी, मित्र।

प्रा० भाईचारा-पु०भयापा, भायप, नतैत, बिरादरी ।

प्रा० भाईबंद-(भ्राता=बन्धु) पु० जातिके लोग, भयापा, बिरादरी ।

प्रा० भाकसी-स्त्री० क़ैद करने के लिये एक बहुत छोटा तंग और अंधेरा मकान ।

प्रा० भाखना } (सं०भाषण) क्रि०
भाषना } स०बोलना,कहना।

प्रा० भाखा-(सं० भाखा) स्त्री० बोली, भाषा, ज़बान।

सं० भाग-(भज्=हिस्सा करना) पु० हिस्सा, बांट, अंश, बिभाग, खण्ड । [क़िस्मत, नसीब, भाग्य ।

प्रा० भाग-(सं०भाग्य) पु० प्रारब्ध,

प्रा० भागखुलना } बोल० भाग्य-
भागजागना } वान् होना, धनी होना ।

सं० भागग्राही-(ग्रह्=लेना) क० पु० भागी, हिस्सेदार ।

प्रा० भागभरोसा-बोल० धीरज, ढाढ़स ।

प्रा० भागना-क्रि० अ० पलाना, दौड़ना, २ अवज्ञा करना ।

प्रा० भागचलना-बोल० निकल चलना, भागजाना, चलाजाना ।

प्रा० भागजाना-बोल० चलाजाना, रफूचक्कर होजाना ।

सं० भागधेय-(धा=लेना)पु० भाग्य, शुभकर्म्म० उपायन, राजाका कर,ख़िराज,दायाद,सपिण्ड बलि ।

प्रा० भागनिकलना-गु० निकल चलना, भागचलना ।

प्रा० भागाभाग-बोल०दौड़ादौड़, लगातार दौड़ना ।

सं० भागवत-(सं० भगवत् अर्थात् जिसमें परमेश्वर की कथाहो)पु० अठारह पुराणों में का एक पुराण जिसको वेदव्यास जी ने बनाया जिस में बारह स्कन्ध हैं । और सब पुराणों से यह पुराण इन दिनों में बहुत पढ़ा पढ़ाया जाताहै । इस में अठारह हज़ार श्लोक हैं।इसके दशवें स्कंध का उल्था हिन्दी भाषा में हुआ है जिसका नाम प्रेमसागरहै।

सं० भागहार-(हृ=हरण)पु०भा-

जक, गु० भागहर्ता, मक़सूम अलेह ।

सं० भागी-(भाग=हिस्सा) पु० साझी, बंटैत, बटवैया ।

प्रा० भागीरथी-(भागीरथ) स्त्री० गंगा—कहते हैं कि गंगा को राजा भगीरथ तपस्या करके स्वर्ग से पृथ्वी पर लाया इस लिये इसका नाम भागीरथी पड़गया ।

सं० भागुरि-पु० स्मृति व्याकरणादि का कर्ता धर्मशास्त्र और व्याकरण का आचार्य्य ।

सं० भाग्य-(भज्=सेवा करना) पु० प्रारब्ध, भाग, क़िस्मत, नसीब ।

सं० भाग्यवन्त, भाग्यवान्-(भाग्य=भाग, वत्=वाला) गु० भागवान्, प्रारब्धी, क़िस्मतवाला, लक्ष्मीवान्, धनवान् ।

सं० भाग्यशाली-क० पु० प्रारब्धी, क़िस्मतवर ।

सं० भाग्यहीन-(भाग्य+हीन) गु० मन्दभागी, दरिद्री, बद क़िस्मत ।

सं० भाग्यानुसार-(भाग्य+अनुसार) गु० प्रारब्धानुसार, तक़दीर के मुवाफ़िक़ ।

सं० भाजक-(भाज्=बांटना) पु० बांटनेवाला, वह अंक जिसका भाग दिया जाय, मक़सूम अलेह ।

सं० भाजन-(भाज्=जुदा करना) पु० बरतन, बासन, पात्र, भांड़ा ।

प्रा० भाजना-क्रि० अ० भागना ।

सं० भाजित-(भाज्=बांटना) स्पं० पु० बटा हुआ, जुदा किया हुआ ।

सं० भाजी-(भाज्=बांटना) स्त्री० साग, तरकारी ।

प्रा० भाजी-(सं० भाजित, भाज्=बांटना) स्त्री० खाने का हिस्सा, बखरा, बैना ।

सं० भाज्य-(सं० भाज्=बांटना) स्पं० पु० भाग देने योग्य पु० भाग हिस्सा, विभाग, २ गणित में वह संख्या जिस में भाग दिया जाता है, मक़सूम ।

प्रा० भाट-पु० कवि, चारण, यश बखाननेवाला ।

सं० भाटक-(भट=वेतन) पु० भाड़ा, किराया क० भाड़ा देने वाला ।

प्रा० भाठा-पु० समुन्दर के पानी का उतार या गिरना ।

प्रा० भाड़-(सं० भ्राष्ट्र, भ्रस्ज=भूंजना) पु० एक तरहका बड़ा चूल्हा । जिस में चने आदि भूने जाते हैं ।

प्रा० भाड़ा-पु० किराया ।

प्रा० भाण्डीर-पु० एक बन का नाम जो वृन्दावन में है, २ बड़का वृक्ष ।

सं० भात-(भा=दीप्ति) क० पु० दीप्तिमान्, रोशन, प्रकाशवान्, २ पका चावल ।

प्रा० भात-(सं० भक्त, भज=पकाना)

पु० पका हुआ चावल ।

प्रा० भाथा-पु० तीर रखने का घर, तूण, तर्कस ।

प्रा० भादौं-(सं० भाद्र, भद्र=भाद्रपदा नक्षत्र) पु० बरस का छठा महीना जिस में पूरा चांद भाद्रपदा नक्षत्र के पास रहता है और इस महीने की पूर्णमासी को यह नक्षत्र होता है ।

प्रा० भादौंकीभरन—बहुत भारी मेह जो भादौं में बरसता है ।

प्रा०भाना-क्रि० स० अच्छा लगना, मन चाहा होना, सोहाना, पसन्द होना ।

सं० भानु-(भा=चमकना) पु० सूर्य, २ सूर्य की किरण ।

सं० भानुज-(भानु+ज, जन्=पैदा होना) पु० अश्विनीकुमार, शनैश्चर, यमराज, राजा कर्ण ।

सं० भानुजा-(भानु=सूर्य,जन्=पैदा होना) स्त्री० यमुना नदी, यमुना ।

प्रा० भान्ना-(सं० भंजन) क्रि० स० तोड़ना, भांजना । [बाफ ।

प्रा० भाफ़-(सं० बाष्प) स्त्री० धुवां,

प्रा० भाभी-(सं० भ्रातृवधू) स्त्री० भाई की स्त्री, भावज, भौजाई ।

सं० भाम-पु० सूर्य, क्रोध, प्रकाश, बहनोई ।

सं० भामा-स्त्री० क्रोधयुक्त स्त्री ।

सं० भामी-क० पु० क्रोधी ।

प्रा० भायप-भा० पु० भाईपन ।

सं० भामिनी-(भाम्=क्रोध करना) स्त्री० क्रोधकरनेवाली स्त्री, कर्कशा, लड़ाका स्त्री, लुगाईमात्र, स्त्रीमात्र ।

सं० भार-(भृ=भरना) पु० बोझ, बोझा, ६४माष का पल, २०००पल का भार या ८००० तोले का ।

सं० भारत-(भरत एक राजा का नाम) पु० भरत राजा का वंश अथवा देश, भरतखंड, २ महा भारत ग्रन्थ जिसमें भरत वंशी राजा अर्थात् कौरव और पांडवों की लड़ाई का वर्णन है ।

सं० भारती-(भृ=भरना) स्त्री० सरस्वती, वाणी ।

सं० भारद्वाज-पु० मुनिभेद, द्रोणाचार्य, अगस्त्यमुनि, बृहस्पतिकापुत्र, खिड़िरिचपक्षी, हड्डी ।

सं० भारवाह } (भार=बोझ, वह
भारवाहक } =लेजाना) क० पु० बोझ लेजाने वाला पशु जैसे बैल,गधा आदि, मोटिया । [कहार ।

सं० भारिक-(भृ=भरना) क० पु०

सं० भारी-(भार) गु० बोझल, गरू, २ बड़ा मोटा, ३ मँहगा, बहुत मोल का ।

प्रा० भारीभरकम-बोल० गंभीर, भला मानुष, सहनेवाला ।

प्रा० भारीपत्थरचूमकरछोड़देना- बोल० जो काम अपने से न हो-सके उसको छोड़ देना ।

प्रा० भारीहोना-बोल० बहुत कठिन होना ।

सं० भार्गव-(भृगु) पु० शुक्र, परशुराम, गज, धन्वी, धनुषधारी, स्त्री० पार्वती, लक्ष्मी, दुर्गा, दूब ।

सं० भार्य्या-(भृ=भरना) स्त्री० जोरू, ब्याही हुई स्त्री, बहू, पत्नी ।

सं० भार्य्यातिक्रम-(भार्य्य+अतिक्रम) पु० परस्त्री गामी, स्त्री त्याग, स्त्री का नाश होना, स्त्रीका अपराध ।

सं० भाल-(भा=चमकना) पु० ललाट, लिलाड़, लिलार ।

प्रा० भाल-(सं० भल्ल, भल्ल्=मारना) स्त्री० तीरकी नोक या फाल ।

प्रा० भाला-(सं० भल्ल, भल्ल्=मारना) पु० बर्छा, सेल, सांग ।

प्रा० भालुक, भालू, भाल (सं० भल्लूक, भल्लू=मारना) पु० रीछ, एक जंगली जानवर ।

सं० भाव-(भू=होना वा सोचना) पु० सम्मति, मत, जीकी बात, मानस विकार, २ दशा, अवस्था, ३ गुण, स्वभाव, प्रकृति, ४ अर्थ अभिप्राय, मतलब, ५ मन, मनकी-तरंग, ६ काम, क्रोध, मोह, स्नेह आदि ७ आन, सदा, नखरा, चोंचला, हाव भाव, ८ होना, ९ पदार्थ, द्रव्य, १० नाटक में बहुत बातों कोजाननेवाला पण्डित ११ तन्वादि द्वादशस्थान, अर्थात् कुण्डली के बारह घर ।

प्रा० भावबताना-बोल० चोंचला करना, नाचने में हाथ पैर आंख आदि अंगों से इशारा करना ।

प्रा० भाव-पु० मोल, निर्ख ।

प्रा० भावई-(सं० भावी) क्रि० वि० दैवयोग से, भविष्य, होनहार ।

प्रा० भावज-(सं० भ्रातृजाया) भ्रातृ=भाई, जाया=स्त्री) स्त्री० भाई की स्त्री, भाभी, भौजाई ।

सं० भावना-(भू=होना वा सोचना) स्त्री० चिन्ता, ध्यान, भाव, सोच, संदेह, अनुभव, जो बात पहले हो चुकी हो उसको फिर याद करना ।

सं० भावक-क० पु० चिन्ताकारक ।

सं० भावाभाव (भाव+अभाव) भा० पु० होना न होना, अदम वजूद ।

सं० भाविक-क० पु० अभिप्राय ज्ञाता, नर्तक, चतुर, जौहरी, परखने वाला ।

सं० भावित-(भू=होना, वा सोचना) कर्म० क० सोची, चिंतित, फिकरमन्द, सचेत, शंकित, डरता

हुआ, चिन्ता करता हुआ ।

सं० भावी-(भू=होना) गु० होन-हार, होनेवाला, होतव्य, भविष्य, जो कुछ होनेवाला हो, बदा हुआ ।

सं० भावुक-(भू=होना) भा० पु० मंगल, कल्याण, प्रसन्नता, गु० प्र-सन्न, नीरोग ।

प्रा० भावें-(सं० भावे=होनेमें) लेखे विचार में, मन में जानने में, पसन्द आवे ।

सं० भाषण-(भाष्=कहना) पु० कहना, बोलना ।

सं० भाषणीय-र्म्म० पु० कहनेयोग्य ।

सं० भाषा-(भाष्=कहना) स्त्री० बोली, बाणी, जबान, भाखा ।

सं० भाषान्तर-गु० अन्य भाषा, उल्था ।

सं० भाषित-(भाष्=कहना) र्म्म० पु० कहा हुआ, कथित ।

सं० भाषी-क० पु० वक्ता, वादी ।

सं० भाष्य-(भाष्=कहना) पु० टी-का, टिप्पणी, सूत्रार्थ, महाभाष्य नाम एक ग्रंथ जो संस्कृत व्याकरण की एक टीका है [1] ।

सं० भाष्यकार-क० पु० टीकाकारक, टीका बनानेवाला, शरहकरनेवाला ।

सं० भासकार-स्त्री० प्रकाश, दीप्ति, सम्पदा, प्रभा, शोभा, किरण, पु० गृद्ध, मुर्गा, अहीर ग्राम ।

सं० भासन्त-गु० सुन्दराकार, रम-णीक, मनोहर, प्रकाशवान्, पु० सूर्य्य, चन्द्रमा, कमल, मोर की चोटी, मुर्गा, गृद्ध, स्त्री० तारागण ।

सं० भास्कर-(भास=प्रकार) भास् =चमकना) और कृ=करना) पु० सूर्य २ आग, ३ भास्कराचार्य जिस-ने सिद्धान्त शिरोमणि आदि ज्यो-तिष के ग्रन्थ बनाये हैं, ४ सोना, स्वर्ण, गु० चमकता हुआ, प्रकाशित ।

सं० भास्वर-(भास्=चमकना) पु० सूर्य, २ दिन, ३ अर्कवृक्ष, गु० तेजस्वी, दीप्तिमान् ।

सं० भास्वान्-पु० सूर्य, दिनमणि ।

सं० भासु-पु० सूर्य, दिवाकर ।

सं० भासुर-(भास्+उर) गु० वीर, दीप्तिमान्, शोभित पु० बिल्लौर पत्थर, कुष्ठ की औषध ।

प्रा० भिकारी, भिखारी-(सं० भिक्षाहारी, भिक्षा=भीख, आ-हारी=लेनेवाला, वा खानेवाला, हृ=लेना) पु० भीख मांगनेवाला, याचक, मंगता ।

सं० भिक्षा-(भिक्ष=मांगना) स्त्री० भीख, मांगना, भिक्षित वस्तु ।

सं० भिक्षाटन-(भिक्षा+अटन, अट्=जाना) भा० पु० भीख मां-गने के लिये घूमना ।

सं० भिक्षु-(भिक्ष्=मांगना) पु० संन्यासी, यती, भिखारी ।

(१) सूत्रार्थोवर्णितोयेनपदैःसूत्रानुसारिभिः । सुपदानिचवर्णयन्ते भाष्यम्भाष्यविदोविदः ॥ १ ॥

सं० भिक्षुक—(भिक्ष्=मांगना) क० पु० भिखारी, याचक, मँगता, संन्यासी ।

प्रा० भिड़ना—क्रि० अ० बहुतही पास पास हो जाना, सट जाना, मिलजाना, २ मुठ भेड़ होना, दो सेनाओं का लड़ाई में पास पास आजाना ।

प्रा० भिड़ाना—क्रि० स० मिलाना दो चीजोंको पास पास सटा देना, २ दो आदमियों को लड़ा देना ।

प्रा० भिंडी—स्त्री० रामतरोई, एक तरकारी का नाम ।

सं० भित—(भिद्=तोड़ना) म्मं० पु० खण्ड,विभाग,टुकड़ा,अर्द्ध,आधा ।

सं० भित्ति—(भिद्=फोड़ना) स्त्री० भीत, दीवार, पगार ।

सं० भिदक—(भिद्+अक) क० पु० वज्र, खड्ग, अस्त्र, शस्त्र ।

सं० भिदुक—क० पु० भेदक, तोड़ फोड़ करनेवाला ।

प्रा० भिनकना—क्रि०अ० मक्खियों का किसी चीज पर इकट्ठा होना, भिनभिनाना ।

प्रा० भिनभिनाना—क्रि० अ० मक्खियोंका शब्दकरना, भिनकना ।

सं० भिन्दिपाल—(भिन्दि=भेदन (भिद्=फाड़ना) और पाल=पालना) पु० हाथ से फेंकने का एक हथियार,ढेलवांस,गोफना,गोफली ।

सं० भिन्न—(भिद्=टुकड़े करना) गु० जुदा, अलग, न्यारा, पृथक्, पु० टुकड़ा, हिस्सा, बांटा, कसर, भिन्न भिन्न, बोल० जुदा जुदा ।

प्रा० भिनुसार, भिन्सार—(सं०भानुसार, भानु=सूर्य, सृ=जाना) पु० सूर्यके निकलने का समय,भोर, बिहान, प्रभात, प्रातःकाल ।

सं० भिषक्, भिषज्—(भिष्=रोग प्रतीकार) पु० वैद्य, रोगों का डरवाने वाला अथवा जिससे रोग डरें, रोग प्रतीकारक ।

प्रा० भीख—(सं० भिक्षा) स्त्री० भिक्षा मांगना, जाचना ।

प्रा० भीड़—स्त्री० ठठ, जमघट ।

प्रा० भीड़भाड़—बोल० ठट्ठ, भीड़ ।

प्रा० भीड़भड़क्का—बोल० बहुतसे आदमियों का इकट्ठा होना ।

सं० भीत—(भी=डरना) क० पु० डराहुआ, भययुक्त ।

प्रा० भीत—(सं० भित्ति) स्त्री० दीवार—ओछे की प्रीति, ज्यों बालू की भीति, कहा० नीच आदमी की मित्रताई बालूकी भीति की तरह अस्थिर है ।

प्रा० भीतर—(सं० अभ्यन्तर) नित्य०सं० अन्दर, बीच, मध्य, में

सं० भीति-(भी=डरना) स्त्री० डर, भय, त्रास, शङ्का ।

सं० भीम-(भी=डरना जिससे) गु० डरावना, भयानक, पु० राजा युधिष्ठिर का भाई, वायु देवता से उत्पन्न, २ भयानक रस, ३ शिव ।

सं० भीमा-(भीम) स्त्री० दुर्गा ।

सं० भीरु-(भी=डरना) कृ० डरपोकना, डरने वाला, कम हिम्मत, कादर, पु० शृगाल ।

सं० भीरुक-कृ० पु० भययुक्त, कातर, डरपोकना, पु० उल्लू पक्षी, चिमगादर, कुहरा, नीहार ।

सं० भीरुता-भा० स्त्री० भय, कादरपन।

प्रा० भील-(सं० भिल्ल, भिल्=भेदना) पु० एक पहाड़ी जात का नाम, जुहाड़, किरात ।

सं० भीषण-(भी=डराना) भा० पु० सेहुंड़वृक्ष, भटकटैया, बाजपक्षी, त्रास, भय, भयानकरस, २ शिव, गु० भयानक, भयंकर, डरावना ।

सं० भीषा-गु० स्त्री० त्रास, भय, भयंकरता ।

सं० भीष्म-(भी=डरना जिससे) पु० पाण्डवों का दादा, शंतनु राजा और गंगा का पुत्र, २ भय, डर, भयानक रस, गु० डरावना, भयानक, भयंकर ।

सं० भीष्मपञ्चक-पु० भीष्म से बताये गये पांच दिन कातिक शुक्ल एकादशी से पूर्णमासीतक व्रतादिक करना ।

सं० भीस्मसू-(सू=जनना) स्त्री० गंगा, भीष्म की जननी, मा ।

प्रा० भुआल } (सं० भूपाल) पु०
भुवाल } राजा, नरपति ।

सं० भुक्त-(भुज्=भक्षण करना) कर्म० पु० खादित, खायाहुआ ।

सं० भुक्ति-(भुज्+ति) भा० स्त्री० भोजन, भोग, खाना ।

प्रा० भुगतना-(सं० भोग, भुज्=खाना) क्रि० स० भोगना, सहना भले बुरे का फल पाना ।

प्रा० भुगताना-क्रि० स० भले बुरे का फल देना, भोग करवाना ।

सं० भुग्न-(भुज्+त) क० पु० परेशान, कुटिल, बक्र, कुबड़ा ।

प्रा० भुच } गु० गंवार, जंगली, मूरख,
भुच्च } अनगढ़, अनपढ़ ।

सं० भुज-ण० पु० } (भुज्=खाना जिससे खाते हैं, वा
भुजा, स्त्री० } भुज्=टेढ़ा होना) बांह, बाहु, दंड, २ तिखूंट और चौखूंट आदि खेतों की लकीर ।

सं० भुजग-(भुज=टेढ़ा, गम्=जाना) पु० सांप, सर्प, नाग ।

सं० भुजगान्तक-क० पु० गरुड़ ।

सं०भुजगाशन—(भुजग+अशन) क० पु० गरुड़ ।

सं० भुजङ्ग ⎱ (भुज=टेढ़ा, गम्=
भुजङ्गम ⎰ जाना)पु० सांप, सर्प।

सं० भुजगहन—पु० भुजवन, भुज समूह ।

प्रा० भुजबन्ध—(भुज=बांह, बन्ध= बांधना) पु० बाजूबन्द ।

प्रा०भुजवीहा—(सं० भुजव्यूह) भुजसमूह, बीसभुजा ।

सं० भुजान—क० भोगकारी ।

सं० भुञ्जन—(भुज्=खाना) भा० भोजन, खादन ।

सं० भुजि—क० पु० अग्नि ।

सं० भुजिष्य—(भुज्+इष्य, भुज्= खाना) क० पु० दास, सेवक ।

सं०भुजिष्या—स्त्री० दासी,टहलुई।

प्रा० भुट्टा—पु० मकई की बाल ।

प्रा० भुतना—(सं० भूत) पु० छोटा भूत, प्रेत, पिशाच ।

प्रा० भुन्ना—(सं० भर्जन, भृज्= भूनना) क्रि० अ० सेंका जाना, सिकना, भूंना जाना ।

प्रा० भुरभुरा-गु०सूखी बुकनी या ऐसी चीज जो थोड़े जोर से चूर२ होजाय।

प्रा० भुलसना—क्रि० अ० जलना, झुलसना, गर्म रेत या पत्थर से अधजला होना ।

प्रा०भुरकाना—क्रि०स० पीसी हुई किसी चीज को किसी चीज पर छिड़कना ।

प्रा०भुरकीडालना—बोल० जादू से वशमें करलेना ।

प्रा०भुलाना—क्रि० स० भूलजाना, भुलादेना, याद न रखना, २ बहकाना, भरमाना, फुसलाना ।

प्रा०भुलावा—पु० धोखा, छलावा ।

प्रा० भुलावादेना—बोल० धोखा देना, छलना ।

प्रा० भुवंग—(सं०भुजङ्ग) पु०सांप।

सं भुवन—(भू=होना) पु० लोक, जगत्, सृष्टि ।

सं० भुवर् -(भू=होना) पु० आकाश, अन्तरीक्ष, दूसरा लोक ।

प्रा० भुस (सं०बुस, बुस्=छोड़ना) पु० अनाज के ऊपर का छिलका ।

प्रा० भुसंड -गु०बहुत मोटा आदमी ।

सं० भुशुण्डी—(आयुधविशेष) बन्दूक "भुशुण्डी लोहनलिकानालिका चभुशुण्डिकेतिपञ्चतरत्नप्रकाशः,, गुर्जर भाषायामपि ।

सं० भू—(भू=होना) स्त्री० धरती, पृथ्वी, भूमि, धरणी, २ स्थान, जगह, ३ यज्ञ की आग ।

प्रा० भूंसना—(सं० भस्=भौंकना) क्रि० अ० भौंकना, हौं हौं करना, कुत्ते का शब्द करना ।

प्रा० भूंईडोल—(सं० भूमि=पृथ्वी, डोल=डोलना) पु०भूचाल,भूकंप।

सं०भूकम्प-(भू=धरती,कंप=कांपना) पु० भूचाल, भूंईडोल ।